

NOT FOR SALE

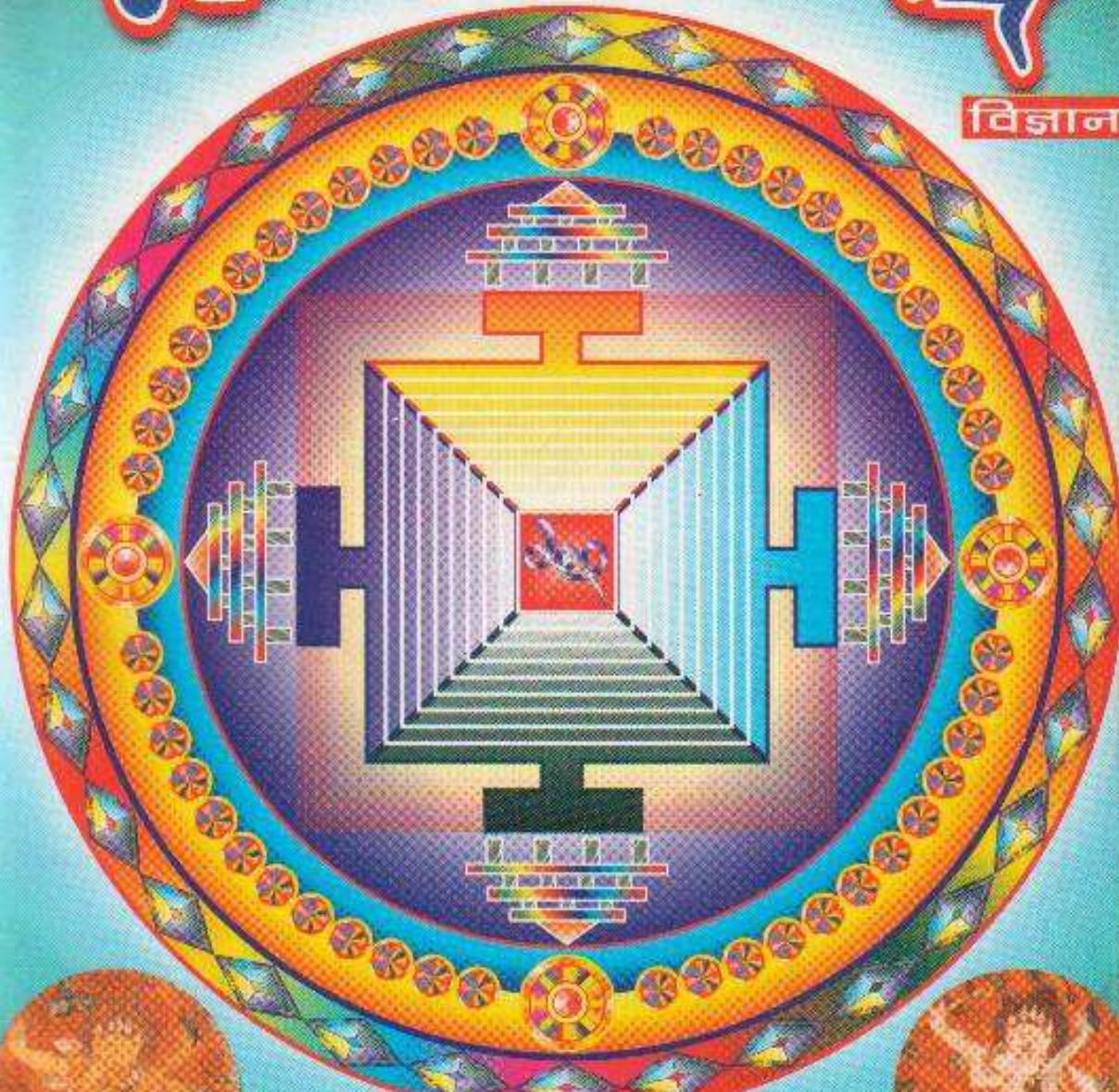
# माया महेश विशेषांक

करवारी 2000

मूल्य : 18/-

# माया-तंत्र-यन्त्र

विज्ञान



अनोखी अचूक लामा साधनाएं

होली तो तंत्र पर्व है

शुक्र से सौभाग्य Mystery of Yantras



## COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with  
By  
  
Avinash/Shashi

Icreator of  
hinduism  
server

# श्राव्य-षष्ठ्यराशि

॥ॐ परम तत्त्वाद्य नामायणाय शुक्रक्रियो तमः ॥



## सद्गुरुदेव

गुरुर्व सतां पूर्ण मन्त्र ...	5
गुरु बाणी	44

## स्तुति

शिष्य धर्म	43
पाठकों के पत्र	46
साधक साक्षी हैं मैं समय हूँ	47
बराहमिहीर	62
स्तोत्र शक्ति:	
श्री रुद्राष्टकम्	68
दूसरों की बाणी	72
इस मास दिल्ली में	82
एक दृष्टि में	86

वर्ष 20 अंक 2  
फरवरी 2000 पृष्ठ 84



## साधना

ठोली पर ताजात लाभा	26
शुक्र शह साधना	55
कमला चंत्र साधना	60
Mystery of Yantras	64
Vajyanath Sadhana	64
Durga Sadhana	64
Shani Sadhana	64



## विशेष

न गुरोरथिकं न गुरो ...	14
शुरु आस्ती महामन्त्र है	21

## चिकित्सा

मंत्रों द्वारा व्यसन मुक्ति	41
एव्यप्रेशर चिकित्सा	74

## कुण्डलिनी

अनाघत चक्र साधना	49
------------------	----

## ज्योतिष

शुक्र और जन्म कुण्डली	68
स्वप्नों कथा कहने हैं	75



## अन्य

अमरीका में अनुभूतियां	24
-----------------------	----

## रिपोर्टर्ज

अविरत यात्रा जारी है	82
----------------------	----



## सम्पर्क

सिवायाश्रम, 308 कोहार एन्डलैंड, देहरादून, उत्तराखण्ड, 247001, फ़ोन: 011-7182242, 221 फैक्स: 011-7-96710  
मंत्र तत्र चंत्र विद्यालय, देहरादून-247001 (उत्तराखण्ड) फ़ाक्स: 011-2291-4523/4 ईलेक्ट्रोनिक फ़ाक्स: 011-432010  
WWW address - <http://www.mantraashram.vsnl.net.in> E-mail address - [197521@rediffmail.com](mailto:197521@rediffmail.com)

॥ त्वदीयं कस्तु निरिक्त! तुम्यमेव समर्पये ॥

• 3 •

## प्रेरक संस्थापक

डॉ. गारायपादत्र श्रीमाली  
(परमहंस स्वामी  
निदित्तोद्वरानन्द जी)

## प्रधान सम्पादक

श्री नन्ददित्तोद्वरानन्द श्रीमाली

कार्यपाल सम्पादक  
एव संयोजक

श्री देवनानन्द श्रीमाली

## त्वदीयस्थापक

## श्री अस्तित्वनद श्रीमाली

संपादन सलाहकार लोडल  
१०० राध चतुर्थ शालमी,  
श्री गुरु चेतक श्रीवारतन,  
श्री ऋषि पाटिल, श्री एस. के. मिश्र,  
श्री आर. शी. दिल, श्री गणेश  
महापात्र, श्री बलात पाटिल, श्री  
सतीश विजया (बबई), श्री पम.  
अम. विजय, श्री सधीय सेनोवर,  
श्री विजय शास्त्री (दिल्ली),  
श्री कृष्ण जीडा (बिन्दास),  
दोष एम. के. शीताल (निषाल).

## प्रकाशक एवं स्वामित्व

श्री वेदाश्रवन्द श्रीमाली

पा.

नोट-आर्ट प्रिन्टर्स

10/2, DLF, इंडिपेंडेंस

परिया, भोटीगांव, नई दिल्ली

से मुख्यतः

मंत्र-तत्र-चंत्र विद्याल

सरकारी कालानी, जोधपुर से

प्रकाशित।

## मूल्य (भारत में)

एक नमूना : 18/-

वार्षिक : 195/-

## नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'गंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्बन्धित का सहमत रोना अनिवार्य नहीं है। उक्त-जुत्तक करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गम्भीर समझें। किसी नगम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई बताना, नाम या तथ्य गिर जाए, तो उसे सभी असम्भव होता है, अतः उनके प्ते के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में बाद विवाद या उक्त सामग्री नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, ग्रन्थकार या सम्पादक जिम्मेवारी होते हैं। किसी भी सामग्री को किसी भी प्रकार का परिषिकित नहीं दिया जाए। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में बोधवुर न्यायालय वी मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या गाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से संगवाने पर इस अपनी तरफ से आमाणिक और भी सभी सामग्री जगता तंत्र भेजते हैं, पर किसी भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अधिक प्रमाण होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होती। पाठक अपने विवरण पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से भेज सकते। सामग्री के मूल्य पर उक्त या वाद-विवाद गान्धी नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक ग्रन्थ वर्तमान में १९५५/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को विमानिक या बंद करना पड़े, तो वित्तने भी अक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अधिका यो दर्श, तीन वर्ष या पचासवार्षीय सदस्यता को पूर्ण साझे, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होती। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री में सफलता असफलता, हित-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की लोगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपसमान वा या भी मन त्रोयोग न करें, जो नीतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार भाज नहीं हैं, उन पर आप का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की माँग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्रों समावेश किया जाया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुबंधों के आधार पर यो गंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के बहर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी भी कोटी प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी जोड़ी भेजने वाले औटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट भी होती है। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे उत्तमित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीरों और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण शक्ति और विश्वास के साथ ही दीक्षा जार करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की जोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार नहीं होती। युद्धेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी जान नहीं करें।

## प्रार्थना

भक्तानुग्रह कारणिणी भावति ज्योतिर्षयी मंजला,  
वित्तव्यालन्डमयी त्वमेव जलनी दुर्वत्त लंहादिणी।  
मात्या मारनुष रूपकः पश्चल्यर मयः मायालुतः श्रीधरः,  
स्वर्वेश्वरलंपदः लदाशिवमयः मां पाहि लिलितेश्वरः॥

हे मां भगवती! आप भक्तवत्सला हैं, मायमयी हैं, ज्योतिर्षयी हैं। एवं मंगलकारिणी हैं। सनत आत्मानन्द में निष्पम  
रहने वाली, समझ दुर्वत्तों का नाश करने वाली जगत्तनन्दी हैं। आप मेरी सदेव रक्षा करें।

माया को आधार नाशकर, नर रूप धारणा करने वाले,  
परब्रह्मस्वरूप, माया तथा समस्त देशवर्यों के अधिपति, हे निश्वला! आप मायात शिवरूप हैं, मेरी निरन्तर रक्षा करें।

## लगान हो तो मंजिल मिलती ही है

यंस्कृत गाथा में पाणिनी के दुर्लभ व्याकरण को सुनाम बनाकर नियम गुणवत्तों नामक यंस्कृत व्याकरण को रचना महापंडित बोपदेव जीने की उमेर गुरुकुल जीनन का एक प्रचंग है—

बोपदेव वी स्मरण गतिं बहुत क्षीण था, काफी प्रयास के बावजूद भी व्याकरण के सूत उन्हें काढ़ा रख नहीं हो पाते थे। उनके सहयोगी भी उन्हें चिढ़ाते थे। इन सबसे दूर्खी होकर बोपदेव एक दिन गुरुगृह से भाग खड़े हुए। चलते-चलते मरण में उन्हें एक कुआ दिग्गार्ड दिया, उपर से वह पत्थर का बना था। कुआ से निकट गाय के लोग आकर जल भरते थे। रससी की सहायता से घड़े को कुए में लटका कर गांव के लोग जल निकालते थे। फिर रससी को समेटकर कुए के पत्थर पर दो क्षण के लिये घड़े को रखते, फिर उपरे रिंग पर रखकर गांव को चले जाते।

बोपदेव ने देखा, कि रससी के रस्यों में कुए के मुंह पर गड़ जगड़ गड़ हो रहे हैं, और जिस पत्थर पर ये बड़ा रखवाए, वहाँ भी गहुः बन गया है। बोपदेव ने मन ही गम सोचा— जब मुलायम रससी और मिट्टी के घड़े की बार-बार रगड़ लगने से पत्थर में गड़ा बन सकता है, तो निरन्तर और दृढ़ अभ्यास से बन्या में विदान नहीं बन सकता है!

बोपदेव तुरन्त वापस गुरुमुद्दी की ओर लौट पड़े, वे अध्ययन में दुर्गुने उत्पाद के साथ गुटगये, और भव्य लगन व मृतत अभ्यास के कारण आज चलकर गुप्रसिद्ध विद्वान बन कर राज वर्यार के नहापंडित बने।

जब रससी व मिट्टी के बन घड़े के स्पर्श से पत्थर में गड़ बन सकते हैं, तो बार-बार प्रयास से किसी कार्यमें, सकल्पमें सफलता कर्यों नहीं मिल सकती। तरगन हो, विश्वास हो, धैर्य हो, हिम्मत हो तो जीवन के प्रत्येक सघर्ष में सफलता मिल कर हो रहती है।

ગુજરાતી

અતાં

પૂર્ણી

મદૈવ

તુલ્યાં



‘ફંચરી’ 2000 માન્દ-લાંદ-દાંડ વિડાન ‘૫’

इस प्रवचन में गूज्यपाद सद्गुरुदेव लाँ  
तारायण दत्त श्रीनाली जी ने शिष्य के लक्षण बताये  
हैं, तो एक प्रज्ञा पुरुष के लक्षण भी बताये हैं गुलाब  
मध्यन्न व्यक्तित्व के लक्षण बताये हैं -

मदीव त्वयेव भवता श्रीयै,  
गुरुरै भता पूर्ण मदैव तुल्य।  
आत्माकुश्ति बदन श्रीयै,  
गुणोर्वता शिष्य बदेव तुल्य॥

शंकराचार्य भगवान शिव के साक्षात् रवरूप  
में, सही अर्थों में वे जहर पीकर अमृत बांटते रहे  
और जो जहर पीकर भी अमृत बांटता है वह मनुष्य  
हैं वह प्रज्ञा पुरुष है, वह उच्च कोटि का व्यक्तित्व  
है। और उच्च कोटि के व्यक्तित्व को चारों तरफ  
से हमले, चारों तरफ से प्रहार झेलने ही पड़ते  
हैं। या तो साधारण जीवन व्यक्ति जिये तो उस  
पर कोई प्रहार नहीं होगा, केवल घर में ही  
छोटे-मोटे प्रहार होंगे। परन्तु यदि आप प्रज्ञा  
पुरुष हैं, कुछ ऊंचा उठने की वेष्टा है, यदि  
कुछ बनने की क्रिया है, तो बाहरी थपेड़ों से  
अपने आपको बचाना पड़ेगा।

गुलाब के फूल को विकसित करने के लिये  
माली खाद देता है, पानी देता है और चारों तरफ से  
कपड़ा बांध देता है कि बाहरी थपेड़े गुलाब के फूल को,  
पीधे को मुरझाने नहीं दें, बल्कि पानपने दें, बढ़ने दें। जीवन  
का आनन्द तो प्रज्ञा पुरुष बनने में ही है। और प्रज्ञा पुरुष बनने का  
अर्थ है बराबर परिश्रम करते रहने की क्रिया, सही अर्थों में प्रयत्न करने  
की क्रिया, सही रास्ते पर गतिशील होने की क्रिया। पर सही रास्ता क्या है,  
इसका निर्णय तुम्हारे पास नहीं है, क्योंकि तुम्हारे शब्द, तुम्हारे  
मरिताम्ब बाहरी हवाओं से दूषित हैं जो तुम्हें गुभराह करती हैं।

और आज नहीं सत्युग से लगाकर के और हापर, त्रेता, कलियुग तक इन्होंने आदमी को गुमराह किया। मगर जो धीर—धीर थे, वे अपने रास्ते पर बढ़ते रहे। हाँ सकता है, उन्होंने पूरी आयु प्राप्त नहीं की हो, मगर मरते समय चेहरे पर एक उनके मुस्कुराहट थी कि मैं इतिहास में अपना नाम लिख कर के जा रहा हूँ। और जो इतिहास में अपना नाम लिखते हैं, वे प्रारम्भ से ही प्रयत्नशील होते हैं और प्रारम्भ वह कठखाता है, जिस द्याण इस रास्ते पर आप पांव रख देते हैं — चाहे आप पवास साल के हैं, चाहे आप साठ साल के हैं, या आप तीस साल के हैं। पहला कदम डगमगाता हुआ कदम होता है, परन्तु इसके बाद आप वह निश्चय कर लेते हैं, कि मुझे इस रास्ते पर गतिशील होना ही है।

मैं समझता हूँ कि उत्तम वाणी का प्रभाव हृदय पर कम पड़ता है। मैं यह भी समझता हूँ कि श्रेष्ठ बात नहीं उत्तरती है, मगर इस बात की अगर चिन्ना राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, शंकराचार्य, इसा नस्तीह, बोहम्मद खान और सुकरात करते तो शायद इतिहास में आज उनका नाम नहीं होता, आपके हनारे बीच वे नहीं खड़े होते। और आज खड़े हैं तो इसलिये कि वे शिष्य बन सके।

शंकराचार्य कहते हैं, कि शिष्य वह होता है जो प्रज्ञा पुरुष बनने की चेष्टा करता है, जो इतिहास में अपना नाम लिखाने की कोशिश करता है। शिष्य वह है जो अपने आपको समर्पित कर सकता है, शिष्य वह है जो गुरु को, गुरुत्व को पूर्णरूप से आत्मसात करने की क्रिया की ओर बढ़ता है।

और जब बढ़ता है तो सबसे कटता है। ज्यों आप गुरु की तरफ बढ़ेंगे, सबसे कटना होगा। ज्योंहि आप ईश्वर की तरफ बढ़ेंगे तो पूरे परिवार से कटना होगा। पत्नी लडाई—जागड़ा करेगी, पुत्र लडाई—जागड़ा करेंगे कि ये चौबीस घण्टे में भला क्या जपते हैं, ये रोज राम—राम क्या करते हैं, ये रोज गुरु के पास बैठकर क्या करते हैं, कमाते नहीं हैं, काम नहीं करते हैं, सभी से अलग जीवन व्यतीत करते हैं।

औरों से अलग जीवन व्यतीत करना ही होता है, क्योंकि जहाँ मोह है, वहाँ उल्लति नहीं है। इसलिये ऐसा व्यक्ति पूर्ण रूप से मोह रहित होता है, अहकार रहित होता है, ऐसा व्यक्ति बाहरी विचारों को ऊपर से गुजरने देता है, हृदय पर अकिञ्च नहीं होने देता, दूसरों की बात सुनता है और मुस्कुरा देता है कि एक पटिया आदमी की वाणी उसको छू नहीं सकती उन पक्षियों को जिसे गुरु ने हृदय पर लिख दिया है। आज तक पिछले पचास हजार वर्षों में किसी ने ईश्वर को देखा नहीं है, क्योंकि ईश्वर जैसा शब्द तो बाद में गढ़ा गया है। इससे पूर्व तो 'बहा' शब्द है या 'अवतार' शब्द है। राम अवतार थे, कृष्ण अवतार थे, बुद्ध अवतार थे — 24 अवतार हुए। ईश्वर जैसा शब्द बना नहीं। और ब्रह्म तक पहुँचने की प्रक्रिया केवल गुरु ही बता सकता है, जिसको इस बात का ज्ञान हो।

गुरु कोई अजूबा नहीं होता, गुरु को तो आप तब समझ पायेंगे जब आपके हृदय की आंखें खुलेंगी, नहीं तो नहीं भी समझ पायेंगे। आप उन्हें एक सामान्य मनुष्य समझ कर रह जायेंगे। आप एक पगड़ण्डी पर

चलते हुए भी

अपने आप को राज मार्ग

पर चलने का अधिकारी समझ सकते

हैं, आपकी वाणी घटिया शब्द भी बोल सकती

है, आपके हृदय में हल्के विचार भी आ सकते हैं, और पिता  
के मोह से, पत्नी के मोह से या माँ के मोह से बंधकर के अपने  
रास्ते से गठक भी सकते हैं। भटक कर अपने जीवन को गुमराह  
भी कर सकते हैं और सही रास्ते पर चलकर उन्नति के रास्ते पर  
चल भी सकते हैं।

जीवन का श्रेष्ठतम् शब्द प्रेम है, और सम्पूर्ण रूप से स्वार्थ

रहित प्रेम है। एक बार प्रेम करके देख, सब कुछ छोड़—छोड़ करके

कि इसमें क्या मजा है। कवीर ने कहा है कि मजा तो फकीरी में है,

निश्चिन्न, निर्द्वन्द्व, निर्लिपि। फकीर हो गये तो फिर विन्दा है तो नहीं,

तन पर कम्भा है तो है, नहीं है तो नहीं है, एक साली है तो है दूसरी साली

नहीं है तो देखा जायेगा। वह फिर संचय नहीं करता। इस प्रकार भी स्थिति जब आती है, तो पहला  
पाव इस राजमार्ग पर पड़ता है।

शंकराचार्य ने उच्चता प्राप्त करने के बाझे सूत्र बताये और उनसे हटकर के एक सूत्र की पांच  
व्याख्याएं और भी कीं। प्रेम शब्द को उन्होंने पांच भागों में बांटा कि प्रेम का मतलब यह नहीं है कि  
आप गुरु को नमस्कार करें, प्रेम का मतलब यह नहीं है कि आप उनके धरणों में जूँकें, प्रेम का अर्थ है  
कि हर क्षण उनका ही विन्दन भाग्य में रहे। एक ही शब्द, एक ही ध्यान, एक ही धारणा, एक ही समाधि,  
कि हर क्षण उनका ही विन्दन भाग्य में रहे। एक ही शब्द, एक ही ध्यान, एक ही धारणा, एक ही सोनने  
एक ही विवार, एक ही विन्दन। वह अच्छा है या बुरा है, खारा है या खोटा है, वह सो बाद में सोनने  
की प्रक्रिया है। क्या होगा? बूढ़ा जायेगे, तो बूढ़ा जायेगे। हमारे बाप—दादा बूढ़े गये, हम भी बूढ़े जायेगे,  
मगर निकल गये तो समुद्र को पार कर लेंगे, अगर हमारी मूजाओं में ताकत है और यदि गुरु की  
कृपादृष्टि है तो। और इतनी तुम्हारी अनुभवी आंखें कब्जी नहीं हैं, कि तुम सामने गुरु को परिवान न  
सको। और पहिचान लेते हो तो फिर प्रेम करो, पूर्ण प्रेम करो।

और शंकराचार्य ने पांच उपलक्षण प्रेम के बताये। उन्होंने कहा प्रेम निर्जीव रो नहीं हो सकता,  
प्रेम पृथ्वर से भी नहीं होता। प्रेम साकार व्यक्ति या साकार विष्व से होता है, भीरा ने साकार विष्व से  
किया, आप लोग साकार व्यक्तित्व से कर रहे हैं, गीर्घा ने भी साकार व्यक्तित्व से किया, बाल्नीकि ने भी  
साकार व्यक्तित्व से किया। और जो उस समय नहीं कर सके वे बाद में पछताते रहे, सिर धुनते रहे।

विशिष्ट स्वयं अपने वशिष्ठोपनिषद में कहते हैं—“मैं बहुत अभागा रहा कि मैं दशरथ के पुत्र  
को केवल राम समझ के बैठ गया, युवराज समझ कर बैठ गया, मेरी बुद्धि, मेरा ज्ञान, मेरी वतुराई, मेरा

क्षणोंकि उन्होंने राम को केवल युवराज समझा, युवराज होना तो उनका एक नाटक था। हम में  
से राजमंच पर प्रत्येक व्यक्ति को नाटक खेलना ही पड़ता है, आपको मुझको कभी हँसना पड़ता है, कभी  
रोना पड़ता है, कभी पत्नी को कुशलाना पड़ता है, कभी बहकाना पड़ता है, कभी साधारण जीवन व्यतीत  
करना पड़ता है, मगर मन में एक लौ, एक लगन होती है, कि प्रेम है। और मुझे इस में के क्षण पर ही  
गतिशील होना है।

### प्रेम का

मर्ज है सब कुछ दे देना। प्रेम की

तरिभाष बरा एक ही है, इसकी दो परिमात्राएं होती हैं।

नहीं, तेना तो इसमें कुछ होता ही नहीं और सामने चाला भी जो प्रेम करता है,

वह नी यह कहता है, मुझे देना ही है। आप मुझे दे रहे हैं, तो मैं भी आपको दे रहा हूँ। तो यह प्यार का सोदा नहीं है।

इसलिये शंकर ने कहा कि प्रेम करने वाला एक काक चेष्टा होता है, कि कब उसकी आख छड़की, कब हय समझे और कब काम किया। दूसरे पक्षी तो थोड़ा रा आप हाथ लटाहगे तो उड़ जाते हैं। परन्तु कौआ, आपने हाथ थोड़ा पटाया और उड़कर के दूसरी भागह बैठ गया। चेष्टा होनी चाहिये इशारे को समझने की, कौए की तरह।

प्रेम में तो कहा और किया। फिर रात और दिन कुछ होता ही नहीं, रात दिन तो हमने बनाये हैं, न रात होती है, न दिन होता है, दिन को भी आप सोए तो रात हो जायेगी, रात को भी आप जागें तो दिन हो जायेगा। यह हमारे बनाये हुए शब्द हैं — बारह बजे, एक बजे, ये हमारे शब्द हैं। आदमी छः महिने नींद नहीं ले तब भी जिन्दा रह सकता है, और छः महिने बराबर नींद लेता रहे तब भी रह सकता है। इस समय सीकड़ों लोग सो रहे हैं, वे भी जिन्दा हैं। आप जाग रहे हैं, आप भी जिन्दा हैं, यदि हम पर्च बजे उठ कर बैठ जायें, तो भी जिन्दा हैं और यदि आठ बजे तक सोते रहें तब भी जिन्दा हैं। इसीलिये प्रेम की पहली परिमात्रा होती है, कि दूसरे की आंख को पहिचानें और कर दे जैसे कौआ करता है — काक चेष्टा।

बिल्कुल चेष्टा युक्त दो कि वह जोले और काम हो जाये। श्रेष्ठ व्यक्ति हशारा रामडाते हैं, मनुष्य बोलने के बाद आज्ञा पूर्ण करते हैं, और अधम व्यक्ति कहने के बाद भी आज्ञा पूरी नहीं करते, यस यही डिफरेंस है। उत्तम, मध्यम, अधम पुरुष का अंतर हशारा ही है। सब लोग तो एक से ही होते हैं, मगर गूँज व्यक्ति को आज्ञा दी जाये किर भी वह आत्मस्य में कहता है, कि बाद में कर लेंगे। मनुष्य वे होते हैं जिन्हें कहे कि तुम्हें यह काम करना है और वे कर लेते हैं। श्रेष्ठ जग वे होते हैं जो हशारा समझ लेते हैं और कायं सम्पन्न कर लेते हैं।

मुझे पानी पीना है, एक बार मैंने गिलास की तरफ देखा और दूसरा समझ गया कि इनको पानी पीना है, यह उत्तम पुरुष के लक्षण है। मध्यम पुरुष वह है जो समझे नहीं और मैं कहूँगा तो वह पानी पिला देगा। अधम पुरुष यो है कि कहें तो वह सोचेगा गिलास लेकर आना पड़ेगा, अच्छी पिक्चर बल रही है, कहा जायें, वह बैठा रहता है आत्मस्य के मारे — यह अधम पुरुष कहलाता है।

अधम पुरुष और कीड़े-मकोड़े का जीवन एक जैसा होता है, इसलिये चेष्टा होनी चाहिये कि आप मुरु़ की आंख के हशारे को समझें। यह शिष्य का पहला लक्षण है। तभी पूर्ण प्रेम है।

और दूसरा लक्षण है — बको ध्यान। जापने बगूले को देखा होगा, नदी में एक पात्र पर खड़ा रहता है, घट्टों तक केवल एक पात्र पर, और आप आवाज दें, ताली बजायें, पत्थर नदी में फेंकें, उसका ध्यान नहीं हटता। उसका ध्यान केवल नदी की तरफ है कि मछली आवे और मैं पकड़ूँ बस खरम। आप उसके बिल्कुल पास पहुँच जायें तो बगूला हटता नहीं है, उड़ता नहीं है। आप उसके पंख को रपर्श कर लें, तब भी उसकी समाधि टूटती नहीं। उसकी चेष्टा एक ही है कि मछली ज्योंहि निकली नहीं कि पकड़ा नहीं। और श्रेष्ठ शिष्य भी एक ही चेष्टा में रहता है, कि न मालूम मुरु़ कब आज्ञा दे दे और मुझे मुख कर देना है।

तीसरा लक्षण बताया है – श्वान निदा। सबसे अच्छी नींद कुछ लेता है, श्वान लेता है, किन्तु ही सोया हुआ हो आप थोड़ी ही पैर की अंहट दें आख खोल लेता है। फिर मले ही सो जाता है या उठ जाता है, मगर आख खोल कर देख जरूर लेता है, फिर भी वह पूरी नींद लेता है और जिन्दा तो रहता ही है। आलिंगों की तरह घनधोर नींद नहीं लेता कि पास में थालियां बजती रहे और पढ़े रहते हैं।

अल्प निदा – चार पाँच घण्टे की नींद बहुत होती है। और वैज्ञानिकों ने कहा है कि केवल 35 मिनट की नींद 24 घण्टे तरोताजा रख सकती है। यदि आपके पास गहरी नींद है तो पूरी गहरी नींद पैतीस मिनट ले लें तो आप तरोताजा रह सकते हैं। ऐसा व्यक्ति खल्पाहारी भी होता है, क्योंकि जो कम भोजन करता है उसके पास आलस्य नहीं आ रहता, प्रभाव नहीं आ सकता, उसके पास न्यूनता नहीं आ सकती।

बीथा लक्षण शंकराचार्य ने कहा है कि व्यक्ति एक ही विन्दन, एक ही भावना, एक ही इच्छा, यह रखे कि यह गुरु मुझे बड़ी मुश्किल से मिला है और इसके लिये आपने आप को न्यौधावर कर देना है तब्दीकि मैं करूँगा तो यह व्यक्ति उल्लसित होगा। और उल्लसित होगा तो यह कुछ करेगा। मगर मेरा आत्मोत्सर्व बेकार नहीं जायेगा, मैंने अपना कर्तव्य किया और मेरा कर्तव्य बेकार इसलिये नहीं जायेगा, क्योंकि वे फिर कोई अन्य कार्य कर पायेंगे। पांचवा लक्षण बताया है – 'मित्राधी', बहुत कम बोलने वाला। जब आप ही बोलते रहेंगे, तो सामने वाले का ज्ञान कब ग्रहण कर पायेंगे? इसलिये कहा है शास्त्रों में –

काक चेष्टा बकौ व्याज, अल्प निदा लथैब च, खल्पाहारी मित्राधी शिव्यत्व एवं लक्षण। ये पांच लक्षण हैं तो हग सही अर्थों में शिव्य हैं, अन्यथा आप जूँ भोलकर, छूँ कर के गुरु को बहुका सकते हैं। और गुरु बहकता नहीं है, वह समझता है कि यह केवल मुझे बहका रहा है। मगर गुरु इतनी कंचाइ पर होता है, कि सब समझते हुए भी वह आख मूंद कर कहता है – 'ठीक है, तुम ठीक हो।'

और आप ऐसा करके अपने लिये ही खाइ खोद लेते हैं। और पांच लक्षण और भी होते हैं जिनसे पता चलता है कि यह साधारण व्यक्ति है या महापुरुष है। उसके लिये भी शंकराचार्य ने पांच लक्षण बताये हैं, कि रामान्य मनुष्य और गुरु में, रामान्य मनुष्य में और महापुरुष में कैसे अन्तर करें? कृष्ण खड़े हैं और दुर्योधन कह रहा है – ये राक्षस हैं, बदमाश हैं, दुष्ट हैं, शत्रु हैं। वही कृष्ण खड़े हैं और भीष्म कह रहे हैं – ये गगवान हैं, उच्च कोटि के व्यक्तित्व हैं, ब्रह्म हैं, साक्षात् निर्गुण खलम हैं, सगुण हमारे सामने खड़े हैं। एक ही व्यक्ति को दो व्यक्ति तो अलग अलग तरह से देखते हैं, कृष्ण तो एक है, आप कैसे देखते हैं उस पर सब निर्भार है।

ये माम प्रपञ्चन्ते ते एथात्य भजाम्य।

आप जिस रूप में मुझे देखेंगे, उसी रूप में मजन करेंगे, शत्रु के रूप में देखेंगे तो शत्रु के रूप में मजन करेंगे, मित्र समझेंगे तो मित्र के रूप में मजन

करेंगे, ही समझेंगे रूप में

कहा डम

किसी भी

आए औ

उठा और आइस्टा तो अनु कैसे विदो धर्म पर किं वह एक ग्रन्थों व

रहा है, भी और रहता है मगर उस मुरकुरा स्वजननों

करेंगे, ईश्वर  
समझेंगे तो ईश्वर के  
रूप में भजन करेंगे।  
तो शंकराचार्य ने  
कहा उम कैसे पहिलाने?

इसके लिये उन्होंने लक्षण बतायें, कि जो व्यक्ति  
किसी भी क्षण, किसी भी विषय पर घण्टों बराबर बोलने की क्रिया जानता हो, तो यह पहला लक्षण है।

अचानक जब घरीका ली गई आइस्टाइन की तो उनको कहा गया आप आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में  
आएं और आपको माध्यम देना है दो घण्टे का। आइस्टाइन ने कहा — 'किस विषय पर माध्यम देना है?

उन्होंने कहा — 'विषय हम वहीं बतायेंगे, उसी समय और उसी क्षण आपको बोलना है।'

आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के और अमेरिका के सारे वैज्ञानिक वैठे और उस यूनिवर्सिटी का प्रोफेसर  
उठा और चौंक से ब्लैकबोर्ड पर पूरा घेरा बना दिया, बस! न कुछ कहा और न आवाज दी। और  
आइस्टाइन ने इस ब्रह्माण्ड पर पूरे दो घण्टे बराबर बोला। उसने कोई पहले तैयारी नहीं की थी, वह  
तो अणु के विषय का एक ज्ञाता था। अणु क्या होता है, उसका विख्यापन कैसे होता है, उसका शोध  
कैसे किया था, पृथकी पर या ब्रह्माण्ड पर तो कभी बोला ही नहीं था, मगर उसने तब भी ब्रह्माण्ड पर  
दो घण्टे धारा प्रवाह जो प्रवचन दिया, आज तक वह प्रवचन इतिहास में अमर है। ऐसा प्रवचन ब्रह्माण्ड  
पर किसी ने नहीं किया कि ब्रह्माण्ड क्या है, उसका रहस्य क्या है? प्रवचन इसलिये कर सका क्योंकि  
वह एक प्रज्ञा पुरुष था, महापुरुष था। महापुरुष वह है जो तुरन्त किसी भी विषय पर बोल जाए, हजारों  
ग्रंथों के उद्धरण दे दे।

और उसका दूसरा मुण होता है — सहनशीलता, सामने वाला बक—बक कर रहा है, हल्ला कर  
रहा है, लड़ाई—झगड़ा कर रहा है मगर फिर भी वह शान्त है। चपरासी से लगाकर के अफसर तक  
भी और धर के छोटे से छोटे बालक से लगाकर के कुचेष्टा रत पल्नी या पुत्र से भी वह क्रोधरहित  
रहता है। वह अन्दर से जलता रहता है मगर ऊपर मुस्कुराता रहता है, अन्दर हाहाकार होता है  
मगर ऊपर फिर भी आँखों से आँसू नहीं टपकता। ऊपर अपने आप में प्रेम और माधुर्य की  
मुस्कुराहट बिखेरता हुआ चलता रहता है, यह प्रज्ञा पुरुष का दूसरा लक्षण होता है।

उसका तीसरा लक्षण होता है कि बराबर अपने आसपास के शिष्यों को, मित्रों को,  
स्वजनों को आगे गतिशील करता ही रहता है, कि तुम्हें आगे बढ़ना है।

एक बार, दो बार, दस बार कहता है  
 कि तुम ये काम करो! तुम्हें बढ़ना है, यह काम करना  
 है, क्योंकि तुम्हें मेरा स्थान लेना है। यह स्थान तो खाली  
 रहेगा नहीं, गुरु बनने के लिये तो हजारों लोग तैयार बैठे हैं कि हम  
 भी गुरु बनकर अपने आप को ऊंचा तथा अन्य शिष्यों को नीचा दिखा  
 सकें, अपना अहं पूरा करना चाहते हैं इसलिये सदगुरु अपने समान दूसरों को  
 तैयार करने की वराबर कोशिश करता रहता है।  
 औथा प्रश्ना पुरुष का लक्षण होता है कि उसका पूरा शरीर एक जहर से  
 भरा होता है, क्योंकि घर और समाज जहर के अलावा कुछ देरा ही नहीं  
 क्योंकि उसका रास्ता अलग होता है, घर-समाज का रास्ता अलग  
 होता है। घर का रास्ता अव्याशी का होता है और वह अपने  
 आप में एक सामान्य जीवन व्यक्ति करना चाहता है। घर  
 का रास्ता स्वार्थमय होता है और वह अपने आप में  
 स्वार्थरहित होता है। घर का धिन्तन यह होता है कि  
 हम किस प्रकार से इससे छीना-झपटी करें और  
 अपना स्वार्थ पूरा करें और वह निश्चन्ता से गतिशील  
 होता रहता है, युद्ध के वातावरण में मैं खड़ा रहता है,  
 जैसे महाभारत का युद्ध था। बौबीरों घण्टे युद्ध करता  
 है और बाहर से मुर्कुराता रहता है। ऐसे व्यक्ति को हम  
 थपथपायेंगे नहीं, ध्यान नहीं देंगे तो हम बहुत बड़े पाप  
 कर्म में खड़े हो जायेंगे, क्योंकि असमय में हम उसको  
 भीत दे रहे हैं, उसका जहर थोड़ा बहुत हमें पीना पड़ेगा।  
 और उसका जहर पी नहीं सकते, क्योंकि वह पीने देता ही  
 नहीं है, वह बताता ही नहीं है, अन्दर उसके हाईकार भवा  
 होता है, उसके बाद भी वह प्रेम बाटता है, मुर्कुराहट  
 बाटता है, सुख बाटता है, दूसरों की पीठ थपथपाता  
 है और जब कोई बात कहता है तो कभी-कभी  
 उसकी आंखों से आंसू छलछला जाता है मगर वह

पौछ लेता है और फिर अपने गन्तव्य स्थल पर गतिशील हो जाता है,  
व्योकि उसे मालूम होता है मुझे क्या करना है।

शंकराचार्य कहते हैं — प्रज्ञा पुरुष का पांचवां लक्षण होता है कि वह  
अपने आप में एक विशाल हृदय स्थल लेकर खड़ा होता है, जिसके अन्दर सारे शिष्य,  
सारे व्यक्तित्व समाहित हो जाते हैं। ऐसे प्रज्ञा पुरुष को यदि हम नहीं पहचानें तो  
हमारी ये आंखें कमज़ोर हैं, हम अंधे हैं, हम धृतराष्ट्र हैं, हम न्यून हैं, हम घटिया हैं,  
कि हम उसे पहचान नहीं पाये, हम उसके साथ चल नहीं पाये, हम उसके आंसू पोछ नहीं  
पाये, हम उसकी सेवा नहीं कर पाये, हम उसका सहयोग कर नहीं पाये, और इतिहास हमें  
कहा करेगा नहीं, फिर पछताने के अलावा कुछ हमारे पास रहेगा नहीं।

शंकराचार्य ने कहा कि कुछ ही लोग ऐसे व्यक्तित्व को पहचान लेते हैं और पहचान  
लेते हैं तो समर्पित हो जाते हैं, पूर्ण रूप से उसमें मिल जाते हैं, प्रेममय हो जाते हैं। प्रेम को  
अलग—अलग किया ही नहीं जा सकता। प्रेम के दुकड़े नहीं हो सकते, प्रेम तो गर्दन कटाने का  
नाम है। अपने आप को फना कर देने का नाम प्रेम है। तलवार की धार पर चलना प्रेम है।  
अपना सब कुछ सौंप देने की क्रिया का नाम प्रेम है। और गुरु के लिये भर मिटने का नाम  
प्रेम है। और जो प्रेम में जीता है, उसके पास धृणा, क्रोध, दुःख, छल व्याप्त नहीं हो पाते।

परन्तु अगर प्रज्ञा पुरुष को नहीं पहचानते तो ये व्याप्त होंगे ही और वह तो अपने  
रास्ते पर गतिशील होता हुआ चला भी जायेगा। कभी इस पृथ्वी पर होगा, इसको छोड़कर  
किसी और ग्रह पर चला जायेगा और पृथ्वी वासी उस व्यक्तित्व से विचित हो जायेगे।  
उसको भी इस बात का दुःख होता ही है कि ये लोग समझे ही नहीं और उसके जाने  
के बाद लोगों को भी दुःख होगा कि हम उनके पास नैठे नहीं। वह पूरा हाहाकार लिये  
हुए जल जाता है। उसका शरीर जल जाता है।

द्वापर युग में कितने लोग कृष्ण को समझ पाये, ब्रेता में कितने लोग राम  
को समझ पाये, कहा नहीं जा सकता, मगर मुट्ठी भर लोग ही समझ पाये।  
अधिकांश लोग उनके विरुद्ध ही रहे और इसीलिये वे दुःख और परेशानियों के  
साथ गतिशील होते रहे। किसी भी एक महापुरुष का नाम ले लें, उसने दुःख  
के अलावा तो कुछ झेला ही नहीं, अमृत और गुरुकुराहट के अलावा कुछ बांटा  
ही नहीं।

आप ऐसे अमृत को प्राप्त कर सकें, आप ऐसे व्यक्तित्व को  
पहचान सकें, उनके प्रेम में हूब सकें, उनके प्रति  
समर्पित हो सकें, ऐसा ही मैं हृदय से  
आशीर्वाद देता हूँ।

पूज्यपाद सद्गुरुदेव ■

# त गुरोरधिकं न गुरोरधिकं शिवसानतः शिवसानतः

अध्यात्म की सर्वोच्च उपलब्धि होती है शिष्य या साधक का स्वयं में निहित आनन्दकुण्ड में अवगाहन कर निमग्न हो जाना, आत्मलीन हो जाना, यही शिवत्व की दशा भी होती है और उसी को उपलब्ध करवाने में पग-पग पर सहायक होते हैं - श्री सद्गुरुर्देव!

इन्हीं अर्थों के साथ गुरु से भ्रेंट करना, गुरु को स्वयं में आत्मसात करना शिष्य के जीवन की सार्थकता होती है...



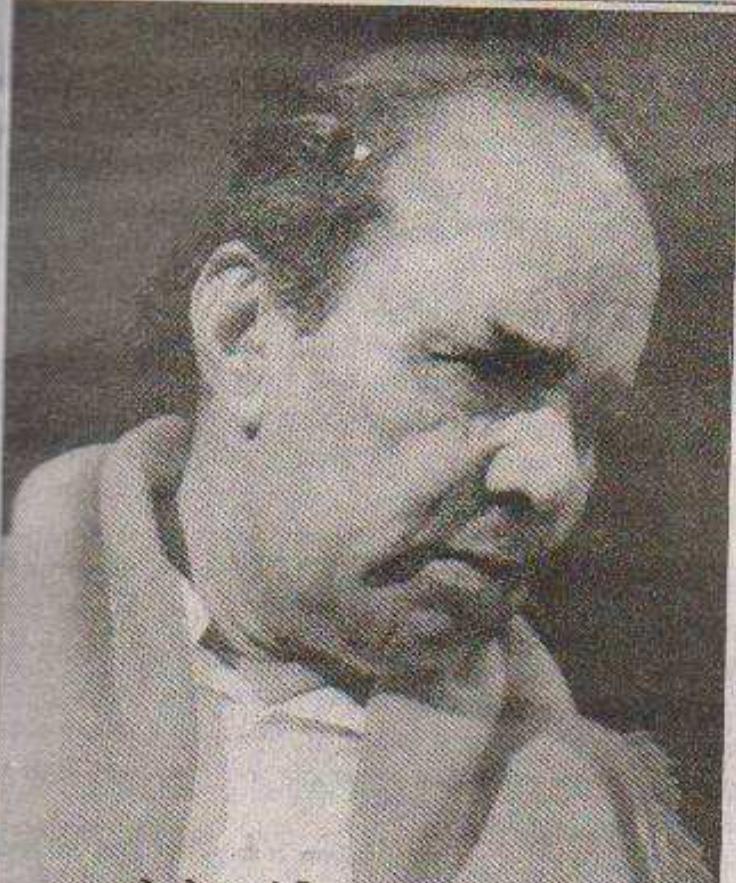
रात्रीय आध्यात्मिक चिन्तन की यह एक सहज सी धारणा है कि श्री सद्गुरुर्देव का स्थान साक्षात् भगवान् शिव के रूप में स्वीकार किया गया है। यूं तो सद्गुरुर्देव ने केवल शिवत्व की ही नहीं वरन् विष्णुत्व एवं ब्रह्मत्व की भी धारणा की गई है अथवा इस समस्त ब्रह्माण्ड में ज्ञान विज्ञान के जितने भी पक्ष है, उन सभी की समाहिती श्री सद्गुरुर्देव के विषय में स्वीकार की गई है किन्तु उनकी उस जगत में प्रस्तुति केवल पूर्ण शावमय रूप में ही वर्णित की गई है। भारतीय आध्यात्मिक चिन्तन की यह सहज सी धारणा केवल एक भावमय चिन्तन ही नहीं वरन् न्यथ में अत्यन्त गृह चिन्तन भी है।

प्रश्न यह नहीं है कि क्या श्री सद्गुरुर्देव, शिवस्वरूप होते हैं अथवा क्या भगवान् शिव ही इस जगत में श्री सद्गुरुर्देव के रूप में अवतरित होते हैं। क्योंकि यह एक विचित्र सा तथ्य है कि सामान्यतः साधक अपने जीवन में जिन भगवान् शिव को मन-प्राण मैं स्थान देकर उनकी अध्यर्थना करते हैं, उनका उसने प्रारम्भिक स्तर पर अपने चर्म चक्षुओं से तो दर्जन किया

नहीं होता है। चर्म चक्षुओं से किसी भी दर्वा या देवता का साक्षात् करना साधना का अत्यंत उच्चतर सोपान होता है और ऐसे साक्षात् से पूर्व साधक निस धारणा के आधार पर स्तुति, प्रार्थना या साधना करता है वह एक भावमय धारणा या भावमय स्थिति होती है।

दूसरी ओर साधक जिन श्री सद्गुरुर्देव को साक्षात् जीवंत शिव के रूप में स्वीकार कर उनकी अध्यर्थना करता है, क्या उनका वास्तविक शिवमय स्वरूप क्यों साधक के सम्मुख स्पष्ट हो पाता है? यद्यपि ओरों से कोई कुछ भी काहना चाहे, वैसा वह कहने के लिये स्वतंत्र है लेकिन व्यक्ति जब तक किसी तथ्य को हृदय में पूर्ण स्पष्ट से धारण किया जिना चाहे रहा होता है तब तक वह किसी और को नहीं वरन् स्वयं को ही छल रहा होता है।

श्री सद्गुरुर्देव की इस जगत में प्रस्तुति बाह्य रूप से तो सामान्य मनुष्य की ही भाँति गर्भ से जन्म लेकर ही भाव द्वारा होती है और अनेक अवसरों पर वे सामान्य मनुष्य से भी अधिक सामान्य बनकर अपने कायों का सम्पादन करते हैं



## बन्दे बोधमयं नित्यं गुरु शंकर रूपिणं

क्योंकि उनके समक्ष केवल अपने परिवार के पोषण का मरण नहीं बरन शिष्य परिवार के पोषण का भी प्रश्न होता है और वह एक कड़ा सत्य है कि जितने सामान्य ढुँढ़ होंगे उनके समाधान के लिये रागाधान कर्ता को भी उतना ही अधिक सामान्य बनने की विवशता होगी – यद्यपि गुरु अपनी चेतना से क्षण मात्र के लिये भी सामान्य नहीं होते हैं। उनके लक्ष्य और अपने शिष्यों के प्रति कल्याण की भावना प्रतिपत्ति एक उच्चता के आसन पर आसीन होती है, लेकिन इस जगत् व्यवहार में उन्हें जिस तरह से क्षुद्र स्तर के छन्दों का समाधान करना पड़ता है वही तो उनका विषयान होता है। शिष्यों की अहंकृता, दम्भ, गपच, छल और विषय-वासनाओं के मध्य रहकर जिस प्रकार मेरे बृहद कार्यों को पूर्णता देते हैं, वह वास्तव में नीलकण्ठ भगवान शिव की ही सार्थकता होती है और इसी कारणशंख गुरु पद अन्यत सम्मान के साथ प्रणाम करने योग्य होता है।

किन्तु जिस प्रकार से विषयान की एक छटना, भगवान शिव के सम्पूर्ण वेवन्त्र की परिचायक नहीं है उसी प्रकार ऐसे सद्गुरुवेव का विषयान करना उनके सम्पूर्ण अस्तित्व का प्रमाण अथवा परिचायक नहीं होता है। इस विषयान के साथ-साथ गुरु मूर्ति में चेतना, प्रेम, करुणा, वर, अभ्य की ज्वाला अहमेंश प्रज्ञवलित रहती है, वही उनकी उपस्थिति का एक प्रमाण हो सकती है।

इस अनन्त आकाश के ऊर-छोर को आज तक कौन नाप सका है? वास्तव में गुरु की चेतना को आंकने का प्रयास करना ही किसी शिष्य की एक मूँहता होगी। गुरु की चेतना को सहन मानव बुद्धि के आधार पर परखना एक क्षुद्रता की बात होगी किन्तु व्यक्ति स्वयं को ढाड़म देने के लिये उपाय सोचता रहता ही है।

यह मानव का सहज स्वभाव होता है कि वह तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा स्वयं को आश्वस्त करना चाहता है। आश्वस्त इस कारण से करना चाहता है क्योंकि वह अन्तर्गत से भयभीत होता है। इस बात से कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता

है कि किसी भी व्यक्ति की आर्थिक अथवा सामाजिक स्थिति व्या है, क्योंकि अलग-अलग स्थितियों के साथ भय के केवल सरर ही बदलते हैं, उनके स्वरूप में ही परिवर्तन होता है, भय का मूल तत्व बिनष्ट नहीं होता है . . . और गुरु की इस जगत् में उपलब्धिति का उर्थ अपने शिष्य को अभ्य प्रदान करना होता है। यही भगवान शिव की भी विशेष लक्षण है। भगवान शिव का ही यह वरदायक प्रभाव होता है कि वे जीव को न केवल सामान्य भय से बरन जन्म-मरण के भय तक से मुक्त कर देने की समर्प्य रखते हैं। उनका शपशानवासी होना भी उनके किसी एककड़पन का परिचायक नहीं बरन वास्तव में इस तथ्य का प्रतीक है, कि केवल वे ही ऐसे वेब हैं जो जीवन की सबसे दार्शन स्थिति में भी परम निर्लिप्त एवं जात्स्मलीन रह सकते हैं।

भगवान शिव का चित्र-विचित्र स्वरूप एवं आवरण बालतब में एक सन्देश होता है कि किस प्रकार से विसंगतियों

के निरन्तर प्रहार के मध्य भी सम रहा जा सकता है और मानों जिस सन्देश को वे प्रतीक रूप में जनमानस में स्पष्ट नहीं कर पाते हैं उसे ही आवरण के रूप में स्पष्ट करने के लिये सदगुरुदेव के रूप में इस धरा पर अवतीर्ण हो जाते हैं।

पूर्वपाद गुरुदेव ने एक अवसर पर कहा था -  
 "गुरुपत अपने आप में और कुछ नहीं बस काँटों की सेम होती है।" काँटों की सेम होने के उपरान्त भी क्यों कोई उदात्त व्यक्तित्व इसे स्वीकार करते हैं? यदि इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त करुणा हो, तो ध्यान रखना होगा कि भगवान शिव में जहां अन्यथा गुण होते हैं वहीं सब गुणों का आधार बन कर करुणा की एक गंगा निरन्तर उनके मन में प्रवहित रहती है। उनकी जटाओं से गंगा का अवतरण होना तो एक प्रतीक है, पीरापिक कथा है, उस तथ्य की जो उन्हें जानते बृजते हुए विष पीने के लिये विवश सा कर देती है।

प्रेम को नापने के लिये आज तक इस जगत में विज्ञान न कोई वैरोगीटर बना सका है और न कभी बन सकेगा। वह तो केवल प्रेम करने वाला ही जानता है कि उसके इष्ट में भ्रान्तियों की ओर सी उत्तुंग लहरें प्रवाहित हो रही हैं। सामने वाला तो केवल सैकितों के द्वारा कुछ कुछ समझ सा सकता है ज्यों भगवान शिव के साथ उपस्थित एक एक प्रतीक से, चाहे वह उनके गले में लटके सर्प हों या उनके मस्तक पर विद्यमान चन्द्रमा, उनके स्वरूप में, विषय में, अपनी मस्तिष्क की क्षमता भर कोई बोध किया जा सकता है।

भगवान शिव का वास्तविक रहस्य तो उनके विषय में बोध होने पर ही प्रकट हो सकता है और यही सदगुरुदेव का भी वास्तविक स्वरूप होता है। सदगुरुदेव को किसी अन्य रूप से नहीं, केवल बोध के द्वारा ही ग्रहण किया जा सकता है क्योंकि सदगुरुदेव दैहिक आवरण से भी कहीं अधिक बोधमय स्वरूप में ही निहित होते हैं। यह सदगुरुदेव की ही विशिष्टता होती है कि वे अपने बोधमय आत्मलीन स्वरूप में आसीन होने के बाद भी अपने शिष्य को यह पात्रता प्रदान करते हैं कि वह स्वयं भी बोधमय होता हुआ न केवल उनके स्वरूप को ग्रहण करने में समर्थ हो सके बरन् अपने जीवन को भी धन्य कर सके।

भगवान शिव तो कदमित फिर भी अपने साधक पर यह दायित्व आरोपित करते होंगे कि वह उनके स्वरूप को अपनी जीवन से समझता हुआ उनमें लीन होने का प्रयास करे किन्तु सदगुरुदेव अपनी असीम करुणा में लीन होकर अपने शिष्य के लिये इतना भी दायित्व शेष नहीं रहने देते हैं क्योंकि

उनका तो येन-केन-प्रकारेण वस एक ही लक्ष्य होता है कि उनका शिष्य उनके अवतरण के साथ, उन्हें अपने जीवन चक्षुओं, आत्म चक्षुओं से पहचानता हुआ, आत्मवत बनता हुआ उनमें लीन हो जाए।

इसी कारणावश सदगुरुदेव का स्थान भगवान शिव से भी कुछ ऊँचा ही माना जाया है किन्तु ऐसा स्वीकार करना भगवान शिव के प्रति किसी न्यून चिन्तन के कारण नहीं बरन भगवान शिव के ही भौतिकी स्वरूप सदगुरुदेव की असीम करुणा के कारण सम्मान्य हुआ है।

अन्य देवी-देवता तो युग के निश्चित अंतराल पर इस धरा पर अवतरण लेते होंगे किन्तु सदगुरु, अपने शिष्य को एक बार दीक्षा के माध्यम से स्वयं से संयुक्त करने के बाद प्रतिक्षण उस शिष्य की जेतना में 'अवतरण' लेने लग जाते हैं, उसके मानस में विविध कृपी से व्यक्त होने की क्रिया प्रारम्भ कर देते हैं। स्थितियों के अनुरूप कभी वे पितॄवत रूप में अभिव्यक्त होकर उसे (शिष्य को) संरक्षण व अभ्य प्रदान करते हैं तो कभी मातृवत् बन स्नेह का औदार्य लुटाने लग जाते हैं। कभी वे बन्धुवत् अभिव्यक्त होकर जीवन की भौतिक स्थितियों में समाधान देते उपस्थित होने हैं तो कभी कोमल पक्षों में किसी मित्र की भाँति आत्मीय बन विचार-विमर्श भी कर सकते हैं।

गुरु अपने शिष्य से कभी विलग हो ही नहीं सकते किन्तु जो अपने मानस से गुरुदेव के समझ जितना अभिव्यक्त हो जाता है, उसी के समझ वे भी अपने विविध स्वरूपों के साथ उसके मानस में अभिव्यक्त हो जाते हैं।

गुरु व शिष्य का सम्बन्ध अन्य भौतिक सम्बन्धों की तरह कहीं से भी नाश होता ही नहीं। गुरु व शिष्य का सम्बन्ध तो केवल मानसिक ही होता है और मानसिक स्थितियों का यह सम्बन्ध निर्मित होना, मन में एक जिज्ञासा का आना और गुरु का मन में ही समाधान कर देना - यही बोध की स्थिति होती है।

गुरुदेव के समझ शिष्य के जीवन का कोई भी पक्ष गोपन रह ही नहीं जाता। शिष्य तो वह होता है जो गुरु को आपनी अद्वा, भक्ति ही नहीं निवेदित करना है बरन् अपना काम, कोध, मद, लोभ, मोह, अहंकार सब कुछ निवेदित करता जाता है और जो गुरु को अपना व्यक्तित्व जितना मैट करता जाता है उतनी ही अधिक शुद्धता, निर्मलता व मानसिक स्थिरता प्राप्त करता जाता है, जो जितना गुरु से छुपा लेता है उसके साथ उतना ही शेष रह जाता है।

हो सकता अनुरूप एक ही अ बन जाये। गुरुदेव प्र स्वरूप के स्वरूप के ने भी बो तत्त्व को अन्तरोग नतिविधि छाया, उ वास्तव में तो कोई किसी म अपने शि किसी जि होता भी समझ चु

व्यक्त कर विश्व से का भावा की शिव

की गई

आ व 3  
आ

**सम्प्रवतः** यह किसी अन्य देवी-देवता का आश्रह नहीं हो सकता कि वह अपने साधक को आत्मवत् अर्थात् अपने ही स्वरूप बना ले किन्तु गुरु का तो भावि से अंत तक केवल एक ही आश्रह होता है कि उनका शिष्य उनके आत्मवत् ही बन जाय। शिष्य के जीवन में ऐसा सम्प्रवत् करने के लिये ही नुस्खे प्रतिक्षण शिष्य के समक्ष उसके मानस में बोधमय स्वरूप के साथ उपस्थित होते रहते हैं, किन्तु गुरु के ऐसे स्वरूप के 'दर्शन' प्राप्त करने के लिये आवश्यक है कि शिष्य ने यो बोधमय बनने का विन्दन प्रारम्भ किया हो। उसने इस तथ्य को हृदय से स्वीकार किया हो कि गुरु का स्वरूप अनन्तोगत्वा जानमय ही होता है।

सदगुरुदेव के केवल बचन ही नहीं उनकी एक-एक नितिविधि, उनके मुखमण्डल पर आ रही भावों की एक-एक छाया, उनका प्रत्येक पग संचालन, उनके हस्तों की मुद्राएं चाल्तव में बोध का एक-एक आयाम ही होती हैं। गुरुदेव से न तो कोई प्रश्न पूछने की आवश्यकता शेष रह जाती है और न किसी समस्या को निवेदित करना क्योंकि गुरु की गति संवेद अपने शिष्य से कहीं आगे होती है और जब शिष्य अपनी किसी जिजासा या समस्या को लेकर उनके समक्ष उपस्थित होता भी है तब तक वे उसके कहने से पहले ही सब कुछ समझ चुके होते हैं।

हर प्रश्न अथवा जिजासा का उत्तर किन्तु ओठों से व्यक्त करना सम्भव ही नहीं होता है, वह केवल सदगुरुदेव के विश्रह से अभिव्यक्त हो सकता है तथा उस मौन अधिव्यक्ति का भावार्थ आत्मसात करना ही बोध होता है और वही शिष्य की जिज्ञासा भी होती है।

३ शास्त्रों में इसी कारणवश शिष्यों की तीन श्रेणी वर्गित की गई है। प्रथम श्रेणी वह होती है जो गुरुदेव की इच्छा को

समझ कर ही कार्य सम्पादन कर देता है, द्वितीय श्रेणी वह होती है जो आज्ञा मिलने के पश्चात् प्रमाद नहीं करता है तथा तृतीय श्रेणी का शिष्य आज्ञा मिलने के बाद भी अपने तकनीक में पढ़ा रह जाता है।

**बस्तुतः** जिस प्रकार बाह्य रूप से आनन्दमग्न, निस्युह भगवान् शिव अपने अंतः पक्ष से अत्यंत गृह्ण हैं उसी प्रकार सदगुरुदेव में निहित शिवत्व की भावभूमि को गृहण करना भी अत्यंत गृह्ण और कठिन कार्य है।

यह सामान्य क्षमता नहीं हो सकती कि गुरुदेव में निहित शिवत्व का मर्म पूर्ण रूपेण जात्सात किया जा सके और इसी कारणवश उनके एक ही स्वरूप को आत्मसात करना अधिक सुगम है। उनका यह स्वरूप उनके बोधमय स्वरूप के मध्यम से ही अधिव्यक्त हो सकता है और शिष्य प्रयास करे तो प्रतिक्षण ही सकता है। सदगुरुदेव के इसी बोधमय स्वरूप में उनका फितूत्व, मातृत्व, बंधुत्व, सखा भाव इत्यादि भी छिपा होता है।

**श्रीमद्भगवद्गीता** में उच्छृत है कि आत्मा उसी को उपलब्ध होती है जो जात्मा की खोज करता है। इसी प्रकार बोध की स्थिति, गुरु का बोधमय स्वरूप उसी को उपलब्ध हो सकता है जो हृदय से उसके लिये आश्रहशील होता है, अन्यथा मानसिक विभ्रम को और भी अधिक घनीभूत करने के लिये समाज पग-पग पर कोटि बिछाता ही रहता है।

इस नव वर्ष में गुरुदेव से यही याचना है कि वे हमारे नेत्रों व मानस में वह शक्ति, वह दूरता दै जिससे हम पहिवान सकें कि गुरुदेव आज भी हमारे समक्ष किस रूप में उपस्थित हैं। हमारा जीवन भी गुरुदेव। आपकी बोधमय उपस्थिति के द्वारा बोधमय होता हुआ शिवत्व की ओर ऊँसर हो सके, ऐसे आशीर्वाद की कामना है।

**// नमस्ते नाथ भगवन् शिवाय गुरु स्वपिणे, विद्वावत्तार संसिद्धये स्वीकृतात्मेक विश्रहः //**

(शुभ गीत)

अर्थात् शिष्य को ज्ञान प्रदान करने के लिये ज्ञान स्वरूप, अनेक विद्य शरीर धारण करने वाले शिव स्वरूप गुरुदेव को बारम्बार नमस्कार है। जब शिष्य के अज्ञान-विक्षिप्ति की अवस्था आती है, तब शिव ही शिष्य को ज्ञान देने के लिये मानव शरीर धारण कर, उसे पूर्णता प्रदान करते हैं, क्योंकि शिष्य जिस धरातल पर खड़ा होता है, उसके बराबर की अवस्था में आकर ही ज्ञान प्रदान किया जा सकता है, अतः शिष्य जिस स्थिति में होता है, बुल भी उसी स्थिति में आते हैं।



# महाशिवरात्रि पूजन विधान

**प्रा**

त, नित्य किया से निवृत होकर पूर्व, उसर की ओर मुख कर पवित्र आभ्यन्त पर बैठें। पूजन के समय आप धोनी पहनें, ऊपर गुरु चादर औहें।

**साधना सामग्री** : प्राप्त प्रतिष्ठित रामेश्वर शिवलिंग, महादेव रक्ष कंकण, २ पंचमुखी लदाक्ष एवं हर-गौरी मुद्रिका।

**पूजन सामग्री** : बेत पत्र, पुष्प, गुलाब जल, इव, योगीपतीत, मिछान, दूध, धी, शहद, शक्कर, फल, धूप, वीपक।

साधने एक पात्र में शिवलिंग को स्थापित करें, मुद्रिका को शिवलिंग के बाईं ओर स्थापित करें, २ लदाक्ष को दायीं ओर एवं कंकण को शिवलिंग के सामने स्थापित करें। अगर बनी व दीप जला कर साधक अपने दाईं ओर स्थापित करें। पहले संक्षिप्त गणपति पूजन और गुरु पूजन सम्पन्न कर लें।

**द्यान** : भूत भावन भगवान रामेश्वर शिव का ध्यान करें -

स्वच्छ स्वर्ण पद्मोद मौत्तिक जपः वर्णे मुखे पंचभिः।

ज्येष्ठे रचित मीशमिन्दु मुकुटं रामेश्वराख्यं प्रभुम्॥

शूलं टंक कृपाण वज्र दृश्यनाम नगेन्द्र घण्टा कृशान्।

पाणं भीसि हरं दधान ममिता कल्पो न्यवलाङ्गं भजे॥

**स्नान** : दंच पात्र के जल से रक्ष कंकण, हर गौरी मुद्रिका और दोनों पंचमुखी लदाक्ष को स्नान कराएं -

गंगे च गमुने चैव गोदावरि सरस्वति,

नमेऽस्मिन्दु कावेरि स्नानार्थं प्रतिगृहाताम्॥

तीनों सामग्री को पोछ कर पुष्प का आभ्यन देकर पहले की तरह शिवलिंग के दाएं, बाएं व सामने स्थापित करें, तीनों वस्त्रों पर कंकुम, अक्षत व एक-एक पुष्प छढ़ाएं।

**शिवलिंग पूजन** : अब शिवलिंग पूजन प्रारम्भ करें

**आवाहन** - दाएं हाथ में पुष्प लेकर यह इलोक बोलकर भगवान्

विशेषः महाशिवरात्रि पूजन से सम्बन्धित मंड मिछ सामग्री प्राप्त करने हेतु नोड्युर के दर्ते पर रु. ६३८ - का 'मंत्र-तंत्र-वंत्र विज्ञान' के नाम से बना ड्राइट बेन है। साथ ही अपने जो मिजों के डाक पते भेज दें, उन्हें एक वर्ष की वार्षिक सदस्यता नियुक्त प्रशान की जाएगी।

महाशिवरात्रि के इस पूजन के महाव आदि का विवेदन जनवरी अंक के पुष्प ४३ पर किया जा सकता है।

ज्ञ 'फरवरी' 2010 मंत्र-तंत्र-वंत्र विज्ञान '18' क

शिव का आवाहन करें तथा पुष्प शिवलिंग पर अर्पित करें -

आवाहयामि देवेश आदि मध्यान्त वर्जितं

आधारं सर्व लोकाना आश्रितार्थं प्रदायिनं।

ॐ उमा महेश्वराभ्यां नमः आवाहने समर्पयामि।

**आशन** - शिवलिंग के समान एक आसन रूप में पुष्प चढ़ाएं -

विश्वास्त्वेन नमस्तु त्वं चिदम्बर निवासिने

रत्नं सिंहासनं चालु वदायि करुणानिधे।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः आसनादै पुष्पं समर्पयामि।

**पात्र** - शिवलिंग पर पात्र रूप में आचमनी से जल बढ़ाएं -

नमः शर्वाय सोमाय सर्वं मंगलं हेतवे,

तु त्वं सम्प्रदावे पात्रं श्री केताश निवासिने।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः पात्रो पात्रं समर्पयामि।

**अर्च्य** : दाहिने हाथ में जल, अक्षत व पुष्प लेकर चढ़ाएं -

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः हस्तयोः अर्च्यं समर्पयामि।

**आचमन** : निम्न इलोक बालते हुए द आचमनी जल छोड़ें -

अशेषं जगवाधार निराधार महेश्वर,

ददामि आचमनं तु त्वं सून्दरेश नमोऽस्तुते।

**स्नान** : शिवलिंग को निम्न उच्चातण लार जल से स्नान कराएं -

गंगा विलङ्ग जटा भार सोम सोमार्थं शेखर।

नद्या मया समानीतैः स्नानं कुरु महेश्वर।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः स्नानीय जलं समर्पयामि।

**दुर्घट स्नान** : शिवलिंग को निम्न इलोक का उच्चारण करते हुए वृद्ध से स्नान कराएं, इसके बाद पुनः जल से स्नान कराएं -

मधुरं गोपयः पुष्पं पटं पूर्ते निवेदितं।

स्नानार्थं पार्वतीनाथ गृहणं परमेश्वर।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः परमः स्नानं समर्पयामि।

दधि स्ना

घृत स्ना

म

ग

मधु स्ना

शर्करा स

त

स

पंचमुत

में शिव

जगद्धोष

बोलते हु

जल आ

पर निष्ठा

शुद्धोष

बुद्ध वस

वस्त्र :

यज्ञोपव

सुगन्धि

**इष्टि स्नान** : वही से स्नान कराएं, पुनः जल से स्नान कराएं—  
दूर्लभ दिवि सुखादु दधि सर्वत्रियं शुभं।

पुष्टिवं पुष्टिकर्तव्यं स्नानाथ प्रतिगृहात्॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यो नमः दधि स्नानं समर्पयामि।

**धूत स्नान** : वही से स्नान कराकर पुनः जल से स्नान कराएं—  
धूत गव्यं शुचि स्त्रियं भुसेव्यं सुखमिच्छतां,

गृहण गिरिजा नाथ स्नानाथ चन्द्रजेष्वर।

ॐ उमामहेश्वराभ्यो नमः धूत स्नानं समर्पयामि।

**वृद्ध स्नान** : शहन से स्नान कराएं, पुनः जल से स्नान कराएं—  
मधुरं मधु मोहनं स्वरं भग्नं विनाशनं,

महाविद्यम उत्सुई तथं स्नानाथं शंकरः।

ॐ उमामहेश्वराभ्यो नमः वृद्ध स्नानं समर्पयामि।

**शक्करा स्नान** : शक्कर स्नान, फिर जल से स्नान कराएं—  
ताप शान्ति करीशीता सिता सुखादु संहिता,

स्नानाथं चन्द्रमीलीशं शक्करेणं प्रवीयतां।

ॐ उमामहेश्वराभ्यो नमः शक्कर स्नानाथं प्रतिगृहात्॥

**पंचामृत स्नान** : दूध, दहा, धी, शहद, शक्कर के पंचामृत से शिवलिंग को स्नान कराएं, फिर जल से स्नान कराएं—

पंचास्थं पञ्चभूतेशं पञ्चकृत्यं परायणं

पंचामृताशीर्दद्यं त्वां स्नापयेहं सदाशिव॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यो नमः पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

**गन्धोदक स्नान** : एक चमच में गुलाब जल लेकर श्लोक बोलते हुए शिवलिंग पर चढ़ाएं, पुनः शुद्ध जल से स्नान कराएं—

मलयाचलं सम्भूतं चन्दना गुरुं सम्भवं

चन्दनं देयं देवेशं स्नानाथं प्रतिगृहातां॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यो नमः गन्धोदक स्नानं समर्पयामि।

**जल अभिषेक** : जल में थोड़ा दूध मिला जे, उससे शिवलिंग पर निम्न मंत्र बोलते हुए ११ बार आयमने से अभिषेक करे—

॥ ॐ रुद्राय पशुपतये नमः ॥

**शुद्धोदक स्नान** : गुरु जल से शिवलिंग का स्नान कराएं, शुद्ध वस्त्र से पौछ कर किसी अचल पात्र में स्थापित कर दें।

**वस्त्र** : शिवलिंग या गोली के दो टुकड़े पर वस्त्र अपित करे—  
दिग्भवर नमस्तुभ्यं गजाजिनं धशय च।

ज्याघ्रं वर्मोन्तरीयाय वस्त्रं युग्मं ददाम्यहं।

ॐ उमामहेश्वराभ्यो नमः वस्त्रापत्रं समर्पयामि।

**यज्ञोपवीत** : भगवान शिव को एक यज्ञोपवीत पेट करे—  
चराचरं नगदरत्नं प्रोतं सूतं धशय ते,

नामं वज्रोपवीताय लूपवितं ददाम्यहम्।

ॐ उमामहेश्वराभ्यो नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि नमः।

**सुगन्धि द्रव्य** : भगवान शिव को सुगन्धित इव लगाइ—  
अ 'फरवरी' 2000 मंत्र-तत्र-यंत्र विज्ञान '19' ८

ॐ अम्बकं वजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं।

उवास्कमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यो नमः सुगन्धि द्रव्यं समर्पयामि नमः।

**तिलक** : तर्तनी, मध्यमा और अनगिका से चन्दन लेकर शिवलिंग पर विपुण्ड लगाएं—

नमः सुगन्धि देहाय द्वावनध्यं फल दायिने।

तुभ्यं तिलकं प्रदास्यामि चान्धावासुरं भजन॥

**अक्षत** : बिना टूटे हुए चाकल मंगलकारी होने हैं, इसे अपित करे—  
अक्षतान् धबलान् देवं सिद्धं गन्धर्वं पूजित।

सुन्दरेशं नमस्तुभ्यं गृहणं वरदो भव॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यो नमः अक्षतान् समर्पयामि।

**पूष्प** : विविध पूष्प भगवान शिव (शिवलिंग) को चढ़ाएं—  
तुरीयं वनं सम्भूतं परमानन्दं सौरभम्।

पूष्पं गृहणं सोमेशं पूष्पं चापं विभंजन॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यो नमः पूष्पाणि समर्पयामि।

**बिल्व पत्र अपि** : तीन पत्ते बोले ११ बेल पत्र प्राप्त कर लें।

एक बेल पत्र के नीन पत्तों पर कुंकुम या चन्दन से क्रमण; इन

तीन बीजों का अंकन करे— 'नि', 'खि', 'ल'। इस प्रकार ११ बेल पत्र पहले से ही तैयार कर रख लें। फिर निम्न मंत्रों को

बोलते एक एक करते हुए ११ बेल पत्र शिव जी पर चढ़ावें—

ॐ भवाय नमः। ॐ जगत् पित्र्ये नमः।

ॐ मृदाय नमः। ॐ कालान्तराय नमः।

ॐ सूदाय नमः। ॐ प्रणतार्तिहाराय नमः।

ॐ महेशाय नमः। ॐ कालकण्ठाय नमः।

ॐ शिवाय नमः। ॐ लास्यप्रियाय नमः।

ॐ नागेन्द्राभरणाय नमः।

**पृष्ठापर्ण** : निम्न गंत बोलते हुए शिवजी पर / पुष्प चढ़ाएं—

ॐ अम्बकाय नमः। ॐ अधोराय नमः।

ॐ विस्तुपक्षाय नमः। ॐ शर्वाय नमः।

ॐ विश्वरूपिणे नमः। ॐ पशुपतये नमः।

ॐ शूलवाणये नमः। ॐ कपरिनि नमः।

**धूप-दीप** : शिवलिंग को धूप दीप धिलाएं—

ॐ उमामहेश्वराभ्यो नमः धूप दीपं धशयामि।

**नैवेद्य व फल** : निम्न मंत्र के साथ भगवान का गिराव क

भोग लगाएं तथा फल अपित करे—

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धामहि ततो रुद्रः प्रत्योप्यात्।

ॐ उमामहेश्वराभ्यो नमः नैवेद्यं निवेदयामि।

नाना ऋतुकलानि च समर्पयामि।

**आचमन** : शिवलिंग के समक्ष '3' आचमनी जल अपित करे—

ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय  
स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा ।

**ताम्बूल :** लौंग, इलादबी और सूपारी के साथ पान चढ़ाएं –  
फिर स्ट्रोक्स माला (यदि हो तो) से ११ माला (अथवा  
बिना माला के १ घाटे तक) निम्न वरदानी मंत्र का जप करें –  
वरदानी शमेश्वर महादेव मंत्र

॥ ॐ शमेश्वराय परम तत्त्वाय महादेवाय नमः ॥

Om Raameshvarya Param Tatvaya Mahadevaya Namah  
आरती : मंत्र जप के बाद शिव आरती सम्पन्न करें।

**पृष्ठांजलि :** पृष्ठ लेकर भगवान शिव के चरणों में बढ़ाएं –  
हर विश्वास्त्रिलाभार, निराधार, निराश्रयः,  
पृष्ठांजलि गृहणेण सोमेश्वर नमोऽस्तुते ।

ॐ उमामहेश्वराम्या नमः, मंत्र पृष्ठांजलि समर्पयामि ।

## शिव जी की आरती

कर्पूरजीरं करुणावतारं संसारसारं भृजेन्द्रहारम् ।  
सदा वसन्तं हृदयात्तर्विन्दे भवेष भवानी सहितं नमामि ॥  
जय शिव ॐ कारा, भज शिव ॐ कारा ।  
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अद्वैती धारा ॥ ॐ हर ...  
एकाननं चतुरुननं पञ्चाननं राजे ।  
हृसात्मनं गरुडाम्बनं वृषवाहनं साजे ॥ ॐ हर ...  
दो भूजं चारं चतुर्भूजं दस्मभूजं अति सोहे ।  
तीनों रूप निरखते निभुवनं जनं मोहे ॥ ॐ हर ...  
अक्षमाला बनमाला रुण्डमाला धारी ।  
त्रिपुरानाथ मुरारी करमाला धारी ॥ ॐ हर ...  
श्वेताम्बरं पीताम्बरं बाधाम्बरं अमे ।  
सनकादिकं गलडादिकं भूतादिकं संगे ॥ ॐ हर ...  
कर मध्ये सुकमण्डलं चक्रं विश्वलं धर्ता ।  
सुखकर्ता दुःखहर्ता सुख में शिव रहता ॥ ॐ हर ...  
काशी में विश्वनाथ विराजे नंदी बक्षचारी ।  
नित ऊल जलानं दिन-दिन अधिकरी ॥ ॐ हर ...  
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविदेय ।  
प्रणवाक्षर ॐ मध्ये ये तीनों एका ॥ ॐ हर ...  
त्रिगुणा स्वामी की आरति जो कोई न रह गावे,  
ज्योरां मन शुद्ध होय जावे, ज्योरां पाप परा जावे,  
ज्योरां सुख संपत्ति आवे, ज्योरां दुःख दारिद्र्य जावे,  
ज्योरां धर लहसी आवे, भगत भोलानन्द स्वामी,  
रहत शिवानन्द स्वामी इच्छा फल पावे ॥

ॐ हर हर हर महादेव

**प्रार्थना :** दोनों हाथ गोड़कर भगवान शिव से मन  
ही मन प्रार्थना करें, कि वे सभी दृष्टियों से अनुकूलता प्रदान  
करें, सफलता प्रदान करें। फिर निम्न संदर्भ को लोले –  
बन्दे देव उमापति सूर्यगुरु वन्दे जगत्कारणं,  
बन्दे पत्नग शृणवं मृगधरं बन्दे पशुनां पतिं ।  
बन्दे सूर्य शशांकं वलि नवनं बन्दे मुकुन्द प्रियं,  
बन्दे भक्त जनाश्रयं बन्दे शिवं शंकर ॥

इधेके बाद भगवान शिव, शिव स्वस्य सदगुरुदेव भगवान  
के चरणों में प्रणिपात होते हुए पूजन सम्पन्न करें। शिवलिंग पर चढ़े  
जल को गुरु चरणामूर्त मानते हुए गहण करें।

'शिवलिंग' को पूजा स्थान में ही रहने वे, 'भड़ाकेव रक्ष  
कंकण' को साधक पूर्ण सफलता एवं विजय के लिये भवय धारण कर  
ले। 'हर जीरी मुद्रिका' को धर की झीं धारण करे, निम्ने अख्यात  
पीभाष्य, लहसी, शान्ति धर में बनी रहे। '२ रुद्राङ्क' धर के दो बच्चे  
धारण कर भक्त हैं, निम्ने बल, दुष्कृति, मेशा में लृक्षि हो सके। साधक  
यदि चाहे तो भयों भाग्यों ल्लय भी धारण कर सकते हैं। यदि साध्मव  
हो तो शिवलिंग के जगले चार दिन बिना किसी पूजन के उपरोक्त  
रामेश्वर महादेव मेव का वेत्तल एवं धारणा नियं जप कर लें। एक माह  
बाद कंकण, मुद्रिका, व स्ट्रोक्स को जल में चिप्पिंग कर दें।

## जल आरती

(इसे श्री शिव आरती के बाद गायें)  
जे शिव ॐ कारा । यन भज शिव ॐ कारा ।  
मन रट शिव ॐ कारा । हो शिव भूरी जटा वाला ।  
हो शिव दीर्घ जटा वाला । हो शिव भाल चन्द्र वाला ।  
हो शिव तीन नेत्र वाला । हो शिव उपर गंगधारा ।  
हो शिव बरसत जलधारा । हो शिव तीव्र नेत्र ज्याला ।  
हो शिव गल दिव रुडमाला । हो शिव कम्ल ग्रीव वाला ।  
हो शिव भस्मी अंग वाला । हो शिव फाणिधर फण धारा ।  
हो शिव वृषभ स्कन्ध वाला । हो शिव ओड़त मृग छाला ।  
हो शिव धारण मुण्डमाला । हो शिव भूत-प्रेत वाला ।  
हो शिव बेल चहण वाला । हो शिव पारबती प्यारा ।  
हो शिव भत्तन हिनकारा । हो शिव दुष्ट दलन वाला ।  
हो शिव पीवत भेंग प्याला । हो शिव मस्त रहन वाला ।  
हो शिव दरसन दो भोला । हो शिव परसन हो भोला ।  
हो शिव बरसो जलधारा । हो शिव काटो जमकासा ।  
हो शिव मेटो जमतासा । हो शिव रहते मतवाला ।  
हो शिव ऊपर जलधारा । हो शिव ईश्वर ॐ कारा ।  
हो शिव ब्रम ब्रम ब्रम भोला । ब्रह्मा विष्णु सदाशिव,  
भोले भोले नाथ महादेव । अद्वैती धारा ।  
ॐ हर हर हर महादेव ...

देने को ।  
उपस्थित  
सदगुरु  
गुणगुना  
स्थापित

जय  
जय

की जिन  
हो रही है  
सन्द्र के  
प्रमुखित  
करके म  
विभिन्न  
भावनाओ  
बन एक  
किन्तु ऐ  
जीवन के  
पुनः आ  
बहु वे द

# गुरु आरती



मात्र शब्दों का लयबद्ध संयोजन नहीं वरन्

- . . . मंत्र है हृदय में सद्गुरुदेव के स्थापन का
- . . . पुकार है शिष्य के अन्तस की

... 'आर्त' शब्द से बना शब्द है 'आरती', स्वयं में एक सम्पूर्ण साधना है आरती, रटे-रटाए शब्दों को दीहरा देने को ही नहीं कहते हैं आरती, आरती स्वयं में आर्तनाम होती है कि गुरुदेव विवश हो जाएं अपने शिष्यों के मध्य उपस्थित होने को... आरती मंत्र में शिष्य पग धरा का आशय छोड़कर अबन्त आकाश को पाने के लिये जो सद्गुरुदेव का ही स्वरूप हैं उठ खड़ा होता है, हाथ आकाश की ओर तेजी से ऊपर की ओर उठने लगते हैं, तन-मन में बुनबुलाहट फैल जाती है, आँखों में अशुद्धारा बहने लगती है, देह छटपटा उठती है सद्गुरुदेव से मिलन हेतु।

गुरु आरती एक कर्म काण्ड नहीं है, यह तो हृदय में उठ रहे भावों की व्याख्या है, इन्हीं भावों को मानस में स्थापित करते हुए आरती करें हम प्रिय सद्गुरुदेव की ...

**जय गुरुदेव दयानिधि दीनन दितकारी ।  
जय जय मोह विनाशक अव बन्धन हरी ॥१॥**

ॐ जय जय जय गुरुदेव

अर्थात मैं जय धोष कर रहा हूँ अपने उन श्री सद्गुरुदेव की जिनकी कृपा दृष्टि से मेरे जीवन में मुझे सर्वत्र विजय उपलब्ध हो रही है। वे स्वयं में दयानिधि हैं, कृपा करने के लिये निरन्नर स्मृत्र की ही भाँति उमड़ते रहते हैं। यदि उनका यह अकारण प्रमुदित होने का सहज गुण न होता तो क्यों वे मेरा उत्तर करके मुझे अपनी समीपता देते? मैं तो किसी पश्च की तरह विभिन्न प्रकार के मोह रूपी कीचड़ में लोटता हुआ, व्यर्थ की भावनाओं रूपी खूटे में उलझ कर गिरता-उठता, हास्यापद बन एक देन्यता में अपने जीवन की इतिहासी मान चुका था किन्तु ऐसे ही अवसर पर जिन्होंने मेरा परम हितैषी बन मुझे जीवन के सत्य को समझाया, मैं उन श्री सद्गुरुदेव की पुनः पुनः अप्यर्थना करता हूँ।

**दहा विष्णु सदाशिव गुरु मूरत धारी ।  
वेद पुराण बखानत गुरु महिमा भारी ॥२॥**

ॐ जय जय जय गुरुदेव

अर्थात मैंने वेदों, पुराणों परं अन्यान्य प्राचीन शास्त्रों

के माध्यम से वह समझा है, मुझे इन शब्दों ने यह जान दिया है कि यह सम्पूर्ण प्रकृति त्रिगुणात्मक है। इसी प्रकृति की सत् शक्ति ने ब्रह्म सृजन का कार्य करते हैं, विष्णु रज शक्ति के माध्यम से उसका योषण करते हैं तथा तमो गुण का आश्रय लेकर भगवान शिव समस्त पाप ताप दोष हरण का कार्य करते हैं किन्तु ये तीनों ही गुण या शक्तियां जिस एक विघ्रह में एक ही क्षण में समाहित होती हैं वह विग्रह केवल श्री सद्गुरुदेव का ही हो सकता है। केवल यही नहीं वरन् जिन पुनीत शब्दों ने मुझे इस प्रकृति का रहस्य बताया है उन्हीं शब्दों का यह भी कथन है कि जब भगवान ब्रह्मा, विष्णु या शिव को अपनी लीला का विस्तार करना होता है तब वे श्री सद्गुरुदेव का ही आश्रय लेकर ही अपने कार्यों को सम्पादित कर पाते हैं और हस्त कथन में आश्रम्य ही क्यों और कैसा? हम शिष्यों ने जिस प्रकार से पग पग पर केवल एक ही नहीं वरन् अनेकलेक शिष्यों को प्रतिपल श्री सद्गुरुदेव द्वारा शिष्यों को गढ़ते, उनकी न्यूनताओं पर चौट करते और योषण करते देखा है उससे तो वास्तव में वे भगवान ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव का समयेत रूप ही परिलक्षित हुए हैं। मैं ऐसे त्रिगुणमय और त्रिगुणातीत श्री सद्गुरुदेव की बार बार बनदना करता हूँ।



जप तप तीरथ संयम दान विविध कीजि ।  
गुरु बिन ज्ञान न होवे, कोटि जतन कीजि ॥३॥

ॐ जय जय जय गुरुदेव

अर्थात् धर्म के वर्तमान समय में अनेक रूप प्रचलित हैं, धर्म की अनेक व्याख्याएं की जा रही हैं। कोई मंत्र जप को सर्वश्रेष्ठ कह रहा है तो कोई तीर्थ यात्रा करने को, किसी की भावना में शील संयम का पालन करना ही धर्म है तो कोई दान कल्याण के कार्य को ही धर्म का सर्वश्रेष्ठ मान रहा है। जि.अन्वेषण ये सभी स्थितियाँ, ये सभी कार्य श्रेष्ठ हैं किन्तु अन्ततोगन्तव्य ये उसी प्रकार की क्रियाएँ हैं मानों किसी से अपने घड़े को धोकर मानकर स्वच्छ तो कर लिया है किन्तु केवल बतना करने से ही तो उसमें वह शीतल निर्मल जल नहीं भर सकता जो धूधा को नुपुण कर सके? वह वह भी एक धृत ही है जो हन क्रियाओं से स्वच्छ तो हो जाती है किन्तु इसमें जान रूपी जल नहीं समाविष्ट हो सकता है जब दीक्षा के माध्यम से मुरु तत्व का समावेश हो सके। मैं कौन हूँ, मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है, मेरा वह लक्ष्य किस प्रकार से प्राप्त हो सकेना — इन्हीं बातों का रहस्य मुरु चरणों में बैठ कर समझना ही सही अर्थों में 'जान' है व्यर्थोंकि इसी में शीतलता है, शेष सब बातें धर्म का, जान का आवरण भर ही है। मेरे जीवन में स्वयं की उपस्थिति से जान तत्व का लोक कराने वाले श्री सद्गुरुदेव के चरणों में मेरा पुनः पुनः नमन।

माया मोह नदी जल जीव बहे सारे ।  
नाम जहाज बिठा कर गुरु पल में तारे ॥४॥

ॐ जय जय जय गुरुदेव

अर्थात् पवित्र का आता हुआ प्रत्येक क्षण, वर्तमान

ऋ 'फरवरी' 2000 मंत्र-तत्त्व-यंत्र विज्ञान '22'

के क्षणों में बदलता हुआ तीव्रता से मृत्युकाल का एक अंग बन जाता है। काल के प्रवाह पर सम्प्रवत, किसी का कोई नियंत्रण नहीं, काल एक नदी के समान है और जिसमें प्रत्येक जीव कृपा है और इस नदी में जो उत्तुग लहरे हैं वे हैं माया और मोह की जिनके धक्कों में फंस कर व्यक्ति कभी इस तट से टकराता है तो कभी उस तट से । कभी वह ईश्वर प्राप्ति के लिये व्यय होता है, तो कभी धन सम्पद, परेश्वर्य के लिये और इस विचित्र सी स्थिति में जो सहायक होते हैं वे केवल श्री सद्गुरुदेव ही होते हैं। वे अपना चिन्तन, अपना चिन्मय, अपनी नेत्रस्थिता का एक अंश देकर मानों तृकान में फंसे किसी व्यक्ति को नीका प्रदान कर देते हैं। जिस तरह से नीका में बैठा व्यक्ति तटों से टकराने में अपने छाणों को व्यर्थ नहीं करता। वरन् उन्हें निष्ठारता हुआ अपनी यात्रा को सम्पूर्ण कर लेता है, ठीक उसी तरह में श्री सद्गुरुदेव की शरण में आया जीव, जीवन के प्रति एक साक्षीभाव अपना कर निर्मल और निःसंशय हो जाता है। जीवन के गूढ़तम द्वन्द्वों से मात्र एक क्षण में निकाल लेने में समर्थ पूज्यपाद गुरुदेव का मैं सतत स्मरण करता हूँ, उनका जयच्छाया करता हूँ।

काम क्रोध मद मत्सर चोर बड़े भारी ।  
ज्ञान खड़ग ढे कर मैं गुरु सब संहारी ॥५॥

ॐ जय जय जय गुरुदेव

अर्थात्

मेरा यह शरीर जो वास्तव में ईश्वर की ओर से दिया गया एक उपहार है, धर्म कार्यों को पूर्ण करने का एक साधन है। इसमें दस द्वारा भी है और मैं भले ही कितना ही संग्रह कर्त्ता न रहूँ, इससे विविध चौर — काम, क्रोध, लोग, मोह, मात्सर्य (ईर्ष्या) प्रवेश कर ही जाते हैं। ये मेरी जीवनी शक्ति, मेरी प्राण ऊँगों को खींच कर, इहें मुझसे छीनकर स्वयं का पोषण करते हैं। मैं स्वयं में इनसे संघर्ष करने में अपने आप को असमर्थ सा अनुभव करने लग गया हूँ, क्योंकि मैं यह समझ ही नहीं पाना किये कब मेरे अन्वर प्रविष्ट हुए और जब तक समझता हूँ तब नक ये सबल हो चुके होते हैं। ऐसी विकट स्थिति में मेरा आश्रय एकमात्र गुरुदेव ही है, जिहेंने मुझे समय-समय पर जान रूपी तत्त्वार देकर वह चेतना ही है जिससे मैं आत्म

विज्ञेय  
पूज्य  
स्वरूप  
मैट कर  
मशुओं  
नाम  
सब

गुणों का  
और व्रत  
कहता है  
है तो वि  
छोड़ने व  
ही थी न  
जाल में  
गुरु के  
कृपा का  
पहुँच स  
विज्ञान  
है और  
केवल  
व्याख्या  
के गम्भी  
लेना चा  
निरन्तर

गुरु  
वचन

की विषय  
ही नहीं द  
हो जाते।  
देवी-देव  
संसर्पण  
गया है।

विज्ञेषण करता हुआ पुनः पुनः निर्मल हो सका हूँ। यह मेरे दून्य की सदगुरुदेव का जो अग्नि स्कुलिलंग सदृश्य शिव स्वरूप है, जिसे मैं आज तक केवल उपने द्वारुण रूप विष ही बेट कर सका हूँ, उसे मैं हडवय से उमड़े निर्मल गंगधारा जैसे जलजों से भी अग्रियत कर देना चाहता हूँ।

**नाना पथ जगत में निज निज गुण गावै ।  
सबका सार बता कर गुरु मारग लावै ॥६॥**

ॐ जय जय जय गुरुदेव

#### अर्थात्

मैंने ज्ञान ग्रन्थि के लिये आज तक केवल उन जड़ों का ही अध्ययन किया है, जिनमें कोई कहना है कि जीवन और ड्राघ दो हैं, तो कोई कहना है कि दोनों अभिन्न हैं, कोई कहना है कि वह परम तत्त्व केवल धनि के द्वारा ही उपलब्ध है तो किसी के मत में वह नाक दबाकर सांस खींचने और छोड़ने की क्रिया छारा ही प्राप्त हो सकता है। यह मेरी मुद्रना ही थी कि मैं मात्र बुद्धि का पोषण करने वाले हन शरणों के जाल में वहाँ तक अपने शण व्यर्थ करता रहा और जीवन गुरु के चरणों में नहीं बैठ सका किन्तु गुरुदेव अब आपके ही कृपा कटाक्ष से मैं समस्त घृणाल को काटकर आप तक पहुँच सका हूँ और आपने अत्यंत सहजता से समस्त ज्ञान-विज्ञान को जिस एक शब्द में समेट दिया है अब वही पथ भी है और पथप्रदर्शक भी और वह शब्द है – गुरु, गुरु और केवल गुरु जो केवल जीवन ही नहीं, जीवन की सम्पूर्ण व्याख्या हैं ऐसे श्री सदगुरुदेव का अनुसरण कर मैं इस मां के गर्भ से चिता तक सीमित यात्रा को वास्तव में जीवन बना लेना चाहता हूँ। मैं जयघोष के माध्यम से अपने प्रणाली में लिरन्तर ऊर्जा का संचार होने अनुभव भी कर रहा हूँ।

**गुरु चरणामृत निर्मल सब पातक हारी ।  
वचन सुनत श्री गुरु के सब संशय हारी ॥७॥**

ॐ जय जय जय गुरुदेव

#### अर्थात्

मैं अपने श्री सदगुरुदेव के चरणों में केवल इस संसार की विषमता, वैगनस्यता और पीड़ा से छिपने का एक स्थान ही नहीं देखता, मुझे वहाँ कांडों और कन्धाकुमारों के भी दर्शन हो जाते हैं, मुझे ऐसा लगता है कि माझे मैं ही नहीं वहाँ समस्त देवी-देवता भी आश्रय पाने के लिये दौड़े चले आए हैं और इस संसर्ग से मैं स्वयं को निर्मल होता हुआ अनुभव करने लग गया हूँ। मुझे ऐसा लगता है कि निश्चय ही मैं सीधाव्यशाली

हूँ, स्वयं मैं धन्य-धन्य हूँ जो मैंने जीवन में ऐसे देव दुर्लभ ज्ञानों के सम्भाल किये।

इसके पश्चात भी मेरे मन में जो संशय, तर्क-कुतक था वह वह श्री सदगुरुदेव के श्रीमुख से आशीर्वदन सुनकर सदा-सर्वदा के लिये विष्ट हो चुका है। पूज्यपाद गुरुदेव के नरणों में बैठकर मैंने जिस ज्ञान के अमृत को पिया है वही वास्तव में चरणामृत है और इसने मुझे इस पाप चिन्तन के दोष से मुक्त कर दिया है कि मैं दीन-हीन, दुर्बल और पतित हूँ। अशुभ का चिन्तन ही सबसे बड़ा अशुभ है, मुझे ऐसा जीवन मर्म समझाने वाले पूज्यपाद गुरुदेव के वरणों में मेरा सतत प्रणाम।

**तज मन धन सब अर्पण गुरु चरनन कीजै ।  
ब्रह्मानन्द परम पद मोक्ष गति लीजै ॥८॥**

ॐ जय जय जय गुरुदेव

#### अर्थात्

मेरा वह शरीर, मेरा मन और मेरी समस्त सम्पद सब कुछ गुरु कृपा से ही उत्तम द्वारा है और उन्हीं में विलय ही रही है। मैं इन सभी का स्वप्नी नहीं अपितु एक दृष्टी मर ही हूँ, जिसका कार्य इस सम्पद की सुरक्षा करने हुए केवल उतना ग्रहण करने का है जो मेरे जीवन के लिये अति आवश्यक हो तथा मेरे जीवन के लिये कब क्या अति आवश्यक है, इसका भी ज्ञान मैं श्री सदगुरुदेव से प्राप्त करने का इच्छुक हूँ। मैं व्यर्थ की तुष्णाओं, कामनाओं और वासनाओं में उलझ कर अपने जीवन के शण निरर्थक ढाँढ़ी में नहीं व्यतीत करना चाहता। गुरु के पास आने में किसका स्वार्थ नहीं होता? किन्तु मैं वह बड़ा स्वार्थ रखता हूँ, उस स्थिति को प्राप्त करना चाहता हूँ, जिसे कहीं ब्रह्मानन्द, कहीं परमात्मा तो कहीं मोक्ष कहा गया है। मैं जीवन में गति चाहता हूँ, सुमति चाहता हूँ और अंत में सद्गति चाहता हूँ। गुरुदेवा मैं पुनः पुनः आपका जयघोष, एक हुंकार के साथ कर रहा हूँ क्योंकि वरी हुंकार मैं, इसी जयघोष से मुझे स्मरण बना रहता है कि मैं विश्व अद्वितीय युग चुरूष का शिष्य हूँ। यही गर्व बोध मेरे समस्त जीवन का आधार है।

**बस्तुतः गुरु आरती की वह व्याख्या भी स्वयं में सम्पूर्ण नहीं है क्योंकि 'गुरु' शब्द की कुछ इब्दों या लक्षणों में समेटा गा ही नहीं सकता। वह तो एक विनष्ट प्रयास भर ही है व इस सावधान्य में जहाँ नहाँ मैं शब्द का प्रयोग हुआ है वह लेखक का व्यक्तिगत मैं न होकर किसी भी शिष्य का मैं है या हो सकता है। इसे कृपया इसी भाव में ग्रहण करे।**

अमरीका जैसे  
भौतिक चकाचौंथ के  
पविपूर्ण देश में भी

**D**त वर्ष यू.एस.ए. के कैलीफोर्निया प्रांत से एक साधिका द्वारा सदगुरुदेव को अंग्रेजी में लिखे गए पत्र का यह हिन्दी रूपान्तर है, जिससे यह प्रकट होता है, कि देश और काल, जाति और लिंग, धर्म और सम्प्रदाय आदि कुछ भी आड़े नहीं आते, जब व्यक्ति साधनाओं के क्षेत्र में उत्तर जाता है। और जब निश्चल भाव और पूर्ण विश्वास से उत्तरता है, तो उसे वे सब परिलक्षित होता है, जो विज्ञान की कस्टोटी पर परखा नहीं जा सकता।

कैलिफोर्निया निवासी 'ननी सोंता' पूज्य गुरुदेव की दीक्षा प्राप्त साधिका हैं, जो व्यवसाय से एक शिक्षिका हैं और अमेरिका में ही रहकर निर्वाह कर रही हैं, तथा समय-समय पर पूज्य गुरुदेव से पत्र अथवा कोन द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त करती रहती हैं। प्रस्तुत है उनका गुरुदेव को लिखा गया भावनात्मक पत्र, जिसमें उनके साधनात्मक स्थिति का अनुमान मिलता है—

## गुरु के लक्षण

शारतो दातः कुलीत्यरच विलीतः शुद्धवेशवान्,  
शुद्धराचारः नुप्रतिष्ठः शुचिर्वक्षः नुद्धिमारः।  
आश्रमी व्याप्तिनिष्टय संत्रमत्रविश्वारदः,  
विज्ञानग्रहे शत्रूः नुस्त्रिच्छिभीयते ॥

जो शास्त्र, धारा, कुटील (आचार-विनाय प्रभृति वर्तविधि गुण सम्पद), दिनीठ शुद्धवेशसम्पद, विशुद्धाचार, सुप्रतिष्ठ (सत्कार्य द्वारा वशस्थी), पवित्र स्वभाव, क्रिया जिपुण, सुषुप्ति सम्पद, आश्रमी, ईश्वर हयान परायण, टंक-मंत्र विज्ञान में साधारण पञ्चित, और जो शिष्ट्यों के प्रति शासन य अब्लुग्ह करते में समर्थ, उक्तो समाल आहाण ही गुरुपदके द्योदय हैं। ये समालक्षण चित्रमें लें, यो घारु पद क्य अधिकारी हो सकता है?

ਮਿਥ ਭਾਖੁਅੰਦੇਰ ਜੀ।

मैं कृतज्ञ और भावदशाली भी हूँ, किंतु आपसे युक्ती हूँ,  
और आपके द्वाया भेजी गई दोनों साधारणाओं के लिए आर-आर  
कृतज्ञ हूँ। मेरी जान प्रियासा आयथो और ईश्वर को जाकरे के  
लिए प्रतिक्रिय बलवती होती जा रही है।

आय अपनी सर्वव्यापकता के कारण में बारे जानते हैं। जब भी मैं आपकी ओर बुझि ठालती हूँ, तो मैं विशुद्ध प्रेम की शक्तिशाली धारा में दूसरी हुई पारी हूँ और स्वयं में शरिक व अनुशासन प्राप्त करती हूँ। मैं अपनी कलिखों को भली भांति जागती हूँ और उसके कभी-कभी खिड़की हो जाती हूँ और मन में कभी-कभी वे भाव जागत हाने लगते हैं, कि मैं आपसे बतना कृष्ण प्राप्त करने के लिये पार हूँ भी बा जड़ूँ।

मुझे डाल ही मैं वेदात्म मन्त्रिक (बू. पुस्त. पु.) में आपके दर्शन प्राप्त करने का खोभाव भिला। बहाना ढी नहीं, आपकी उपलब्धियाँ से, वी भाजिक स्वरूप से अविकलित प्रदूष जो वहाँ पाला हुआ था, उत्तरां भी आपके इवरूप को वेष्टा।

मैं कुछ मंत्र जिव मंत्र का जय कहती हूं तथा अपनी साधनाओं का अनुश्रव आयको बताऊ चाहती हूं। मैंने कुलजेव्यवधी साधन के प्रथम वर्षण में कुछ सफलताएँ प्राप्त की हैं। इस से मेरी आर्थिक स्थिति सुधरी है और गौकर्मी में अच्छी परदानाति भी हुई है।

साधाराकाल ब्रं मुखे आश्वर्यजिक दुःख देखके को  
मिले, तीव्रसी उंधा से मुख्य सुन्दर घंटियों की आवाज मंत्रों के  
आक सुनाई पड़के लगी। मठवाटी शूरवेष्वरी भैरव पास आई  
और मुझे और मुझे जाठवना क आशीर्वाद दिया। दुःखी गठथा  
को हात में ऊपर उठी और पूर्ण सुन्दरसा में आवेदित थोकर  
सिद्धप्रभ गई, वहां भगवानी सरस्वती मुख्यसे गिरी वे पूर्ण सुनहरे  
प्रलाप से गृह थीं और उसी प्रकाश में मेशा चुलाव किया।

जब लैंगों से दही थी, तब उन्होंने मुझे शांत किया। ऐसे उससे प्रार्थना की कि देखो पीड़ाओं को हट दें। उन्होंने कहा, कां पद धीरे-धीरे समाप्त होकी। मुझे बहुत आनंद हुआ।

मना कर दिया। सुन्हो  
बहु भी पता चल याइ  
कि मैं सुन्हो से बच सकी  
हूं। अब मैं अपक्रा जीवन  
इस प्रकार विताका  
चाहती हूं, कि मानवता  
में आध्यात्मिकता का  
वास हो और लोग धर्मकर  
के लकड़ी हो सकें।

स ह ज । की  
महमी साधना हैं इतने

  
एक अज्ञ अवसर पर आप मुझे पाए को स्वर्ण बाजे  
की दिया लिया रहे थे। मैंने कुछ शुल्क पाश प्राप्त भी कर  
दिया है, क्योंकि आप मुझे पाए जान देने?

एक दूसरी स्वर्णया पर मैंने अनुभव किया, कि आप  
जटी के जल के ऊपर पदमस्तक में बैठे हुए हैं, और आप मुझे  
जिर्देशम दे रहे हैं। जैसे ही मैंने मंत्र जप उमापत किया हुव्य  
उमापत हो गया।

एक तिज मैंने अनुभव किया, कि एक जालवर आया  
और वो पांव में धूंधक छांदे हुए हैं। उसके शरीर से तुर्ङोंदंड आ  
रही थी और उसके साथ कई कुत्ते भी थे और उसके पास एक  
कोड़ा भी था। उसके कोड़े से लेदी दीक की छड़ी पर प्रह्लाद  
किया और ऐसे ही मैंने मंत्र जप उमापत किया, वैसे ही बहु  
दृश्य दूर हो गया।

एक अन्यथा को मैंने अपने आपको अज्ञातिका में पाया  
और जैसे ही मैं लौटी, तो मुझे यह अनुभव हुआ कि मैं पढ़ियुकार  
कुर्सी पर बैठे एक बुद्धिया के ऊपर घृणकर काट रही हूं और  
एक बुद्धक उस बुद्धिया की भवद कर रहा है। जब वह बत्तुवक  
खेला गया, तो बुद्धिया एक जागान मड़िला में परिष्ठिति हो गई  
और उसके साथ एक छोटा बद्धा भी था। फिर वह पहियुकार  
कुर्सी एक जाल से ढक गई, उसके बाल एक बड़ा जा साधन  
आया और कुर्सी को दूर ले गया। मैं अनुभव कर रही थी, कि  
जो कुक्ष में देख रही हूं, वो लेहे जीवन से जग्निधित हैं। बाद में  
मुझे पता चला कि पढ़ियुकार कुर्सी का दूर हो जाना केंजर से  
बद्धने का संकेत था।

अन्तिम बाल को मैंने देखा, कि मैं अपने आई (मुन्ह  
आई) के साथ बैठी हुई हूं। वहीं आप दुक बढ़ा पाए दिवलिया  
को आव विक्षोष होकर देख रहे हैं, मैं आपके दरहरों में विज्ञ  
आव से नम्रन करती हुई प्रार्बन्धि करती हूं, कि आप मुझे पाए  
दिवलिया प्रदान करें। पुनः मुझे भवयती श्रुतियों के दर्शन  
दृष्ट और मैंने उनसे शोबे की शिल्पी माँगी, तो उन्होंने देने से

अनुभव गर्भी मिले, पर मुझे इस साधना में यह आवेदन प्राप्त हुआ  
कि मैं साधन हीनों व गर्भीव लोगों की सहायता करूँ। श्रुतियोंवाली  
साधना का दूसरा घटना आजत था। और उसके अनुभव से युक्त  
बही था, मैं धन्तियों की धवलि सुन्हती रही हूं और पुक लवद्या  
धवती जाकात आई और मुझसे २१ माजा मन्त्र जप के उपचारत  
यों जाओ को कहा।

प्रति के अंत में मैं इतना ही कहना चाहती हूं, कि पहले  
की तरह मेरे मन में साधनाओं के प्रति विश्वाशा थी। अब उसका  
अंत हो चुका है, फिर भी मुझे कुछ कलेजायों का उभी साधन  
करका पड़ रहा है। मैं अठी जानती कि ये बाधाएँ वर्षों और कैसे  
आ रही हैं। मैं साधन करती रहूं, इसके लिए मुझे आपके प्रेम व  
करुणायुक्त मार्गदर्शन की आवश्यकता है। अपनी  
साधनात्मपक सफलता और आपके निरन्तर सुखम रख्य से  
मार्गदर्शन से मैं अधिकांश समय प्रसङ्ग होती रहती हूं। आपके  
मेरे जीवन में एक असीम दिव्य आवश्यक का संचार कर दिया है,  
इसके लिए आपने आपको आपके दरहरों में बाहुद्याय जमन  
कर रही हूं।

आपकी प्रिय देटी व लिया, ननी सीता,  
डॉन गोल्डन ऑवरडम, ९९०१, लूरलिन एवन्यू,  
ब्राटसवर्थ, कैलिफोर्निया -९१३११,  
संयुक्त राष्ट्र अमरीका (यू.एस.ए.)

साधनात्मक ज्ञान के परचम जब सुदूर पश्चिम में,  
अमरीका, इंडिया, कनाडा और मारीगास जैसे देशों में लहरने  
लगे हैं, वहां पर भी पृथ्यावाद सद्गुरुपेव के शिष्य साधनात्मक  
जीवन व्यतीत कर विवानुभूतियों को प्राप्त कर रहे हैं, तो  
ऐसा प्रतीत होता है, कि सद्गुरुपेव का वह स्वप्न अवश्य ही  
एक न एक विन साकार होगा ही, जब पूरे विश्व में साधनाओं  
की, मन्त्रों की धवनियां गृनेंगी, विश्व पुनः अध्यात्म की ओर  
बढ़ सकेंगा और एक नए युग की संरचना होगी।

होली तो तंत्र का पर्व है, इसमें  
सम्पन्न करें जीवन को प्रकाश से भर देने में समर्थ ये,

होली बहन रात्रि : 19.3.2000 अथवा  
तंत्र सिद्धि कल्प : 4.3.2000 से 12.4.2000

# अचूक सतरंगी लामा साधनाएँ

अ

जात रहन्हों को खोन विचारशील मनुष्य की स्वाधारिक किया कही जाती है। वेदों में मनुष्य के शरीर को ब्रह्मण्ड की संज्ञा दी गई है। अर्थात् मनुष्य अपने प्रातर आमूल रूप परिवर्तन करने की क्षमता रखना है, सम्मोहन, वशीकरण, आकर्षण, विद्वेषण इत्यादि तो बहुत छोटी तात्त्विक कियाएँ हैं। पञ्चिक के जनवरी तंत्र में यह स्पष्ट किया गया कि किस प्रकार वैदिक संस्कृति के बल धीरिति संस्कृति बनकर रह गई, लेकिन उसी वैदिक संस्कृति के एक अधिन्त अंग बोधिसत्त्व बुद्ध ने अपने ही जीवन में शिष्यों को तंत्र का विशुद्ध ज्ञान कराया और यह विशुद्ध ज्ञान भारत के पूर्ववर्ती राज्यों में तो फैला ही, लेकिन इसके साथ ही बुद्ध के शिष्य समाट अशोक की पुरी संघमित्रा एवं पुत्र विंद्रसार ने यह ज्ञान जाया, सुमात्रा, चीन इत्यादि में फैलाया – इसीलिये लंका, इण्डोनेशिया, थाईलैण्ड, मलेशिया, चीन, ताइवान, जापान इत्यादि में यह ज्ञान फैल सका। इस ज्ञान का केन्द्र बिन्दु बना तिब्बत प्रदेश जो हिम से आच्छायित है लेकिन वहां ले कर इलामा मठों में आज भी उसी परम्परा का पूर्ण रूप से पालन होता है।

लामा उसे कहते हैं, जिसे अपने गुरु से ज्ञान प्राप्त किया हो और वह उसे आगे देने का अधिकारी हो। कालान्तर में 'हीनयान' और 'महायान' दो सम्प्रदाय अवश्य बन गये – दोनों को किया पद्धति में थोड़ा अन्तर अवश्य है, लेकिन मूल उद्देश्य है शरीर की सुख शक्तियों को जागत करना।

लामा तंत्र कोई रहस्य तंत्र नहीं है, सद्गुरुवेद ने तो अपने जीवन के कई वर्ष लामा यतों में व्यतीत कर वह ज्ञान

प्राप्त किया। तंत्र वह क्रिया है, जिससे जीवन विशुद्ध हो सके। तात्त्विक क्रियाये भी मुहूर्तगुत काल में ही प्रारम्भ की जाती है। होली पर्व तंत्र पर्व है और मूल रूप से यह 'तंत्र सिद्धि कल्प महारात्रि अद्यात शिवरात्रि' से प्रारम्भ होता है। और इसकी पुर्ता तवरात्रि के अन्तिम दिवस तक मात्र नहीं है। इस कल्प में (अर्थात् 4.3.2000 से 12.4.2000 के बीच) शक्ति के आधारपूर्ण भगवान शिव का सिद्धि विवरण महाशिवरात्रि, प्रचण्ड स्वरूप होलिका, जाऊलयमान स्वरूप तवरात्रि जाते हैं। इन दिनों में तंत्र की क्रिया की जाये तो वह अवश्य ही पूर्ण होती है।

आगे लामा साधना के बे विशुद्ध साधनात्मक प्रयोग विद्ये जा रहे हैं, जिनमें तंत्र के पंचमकालों अर्थात् मत्प्य, मांस, मीन, मुद्रा, मैसुन का कोई स्पान नहीं है। ये बे तंत्र की क्रियाएँ हैं जो साधिक भाव से जीवन की सर्वांगीण उज्ज्ञाते के लिये सम्पन्न की जाती हैं।

क्रियाशीलता का तत्पर्य है वीक्ष अर्थात् स्वयं के जीवन का नवनिर्माण करना। यह अवसर होता है वसंत का जब प्रकृति शीनकाल की डड़ता को छोड़कर अपना नव सूर्यार कर चुकी होती है, सारा वातावरण एक जीव सी खुमारी में ढूँढ़ा होता है, पवन का एक एक प्रवाह सारे तन मन में जादू सा जगाने लगता है और गुणगुनाहट खुद व खुब कुट पड़ने को तैयार हो जाती है। प्रकृति के बे संकेत क्या संचेत नहीं करते कि साधक खुद को भी चैतन्य कर ले?

जिस तरह से सात रंगों से मिलकर एक ही रंग श्वेत रंग बन जाता है, उसी तरह से जीवन के भी सात पक्ष हैं, जिनके आपस में तालमेल से वह जीवन, जीवन कहलाने के



## तिष्ठन के एक समाप्ति दृश्य मन्त्रानन्दामा

योग्य होता है, प्रकाशवान होता है। . . . और जीवन के दे सात पक्ष हैं — १. अध्यात्म, २. प्रामाणिक शान्ति, ३. प्रेम, ४. ऊर्जा, ५. ऐश्वर्य, ६. विषदाओं से मुक्ति, ७. सर्वांगीण उन्नति। जीवन के इन सात पक्षों में से यदि कोई भी पक्ष न्यून रह जाये तो वह खुद इन्सान को एक बोझ लगने लग जाता है। सात ही स्वर होते हैं रंगात में शो, यदि एक भी स्वर कमज़ोर पड़ जाये तो कैसा बेसुश हो जाता है कोई भी रंग।

परिका का सदा से यह प्रयासर रहा है, कि पाठों एवं साधकों के सम्मुख जो भी प्रस्तुत किया जाये वह नूतन तो हो ही साथ में प्रामाणिक भी हो, कस्तीटियों पर खुरा उत्तरा हो और इसी धारणा से प्रस्तुत किये जा रहे हैं सर्वथा पहली बार ये अचूक लामा मंत्र जो अभी तक अप्रकाशित रहे हैं। सारे विश्व ने एकमत होकर इस बाल को स्वीकार किया है कि अश्व के सर्वथेष्ट भाष्वक लामा रहे हैं, केवल सर्वथेष्ट ही नहीं सम्पूर्ण भी। जीवन का कोई भी पक्ष क्यों न हो लामा पद्धति के अन्तर्गत सटोंक और अनुक समाधान मिलता है और हमारी इस बाल की पुष्टि कर रहे हैं ये ग्रन्थों —

### 1. जीवन में सावित्री ऐश्वर्य प्राप्ति के लिये

किसी भी जीवन का नव निर्माण हो सके इसके लिये प्रथम और अनिवाय स्थिति धन की होती है। धन के अभाव में व्यक्ति की सारी सोम्यता, चुक्कि, कीशल पक और धरे एह जाने हैं, किन्तु यह धन केवल रूपये या चाँदी के भिंडियों के रूप में ही न हो अपितु ऐश्वर्य के रूप में हो अथवा व्यक्ति के पास निरन्तर धन का सहज प्रवाह हो, वह उन्मुक्त हाथों ये नितना खर्च करे उसका दुगना उसे प्राप्त होना रहे, आकर्षियक धन प्राप्ति के योग बनते रहे — ऐसी अनेक स्थितियों के लिये लामा तंत्र में निस प्रयोग का

उल्लेख मिलता है, वह डरा प्रकार से है —

लामा मंत्रों से सिद्ध 'त्रिपिटक' को प्राप्त कर उसे होलिका धून की रात्रि (19.3.2000) में या तत्र सिद्धि कल्प (4.3.2000 12.4.2000) की किरणी भी रात्रि जो चावल को एक देरी बनाकर उस पर रूपापित कर दे। इन वस्त्र धारण कर उत्तर विशा की ओर मुख करके बढ़ें। धूं का दीपक जलाकर इस त्रिपिटक के सामने एक धण्डे तक निम्न मंत्र का जप करें —

मंत्र

// उ॒ ए॑ हु॒ ऐ॒ देजा॑ यु॒ लु॒ पे॒ मा॒ सि॒ द्धि॒ हु॒ //

Om Eh Hum Bendejja Guru Pema Siddhi Huu

मंत्र जप के पश्चात रात्रि विश्राम सञ्चान स्थल पर ही करें और रात्रि में जो स्वान आये उन पर नमस्त्रिता से चिन्तन करें। चावलों पर जो त्रिपिटक रूपापित या, उसे अब भाङ्हार में मिला है तथा एक माह पश्चात त्रिपिटक को नदी या तालाब में विसर्जित कर दें।

त्रिपिटक — 110/-

### 2. सम्पूर्ण रूप से कायाकल्प हेतु

यह दर्शर योग का भी साधन है और भोग का भी। अस्वस्थ व्यक्ति न जीवन के भोग कर पाता है और न योग की, उसके भास्य में केवल कुण्ठा ही शेष रह जाती है। वास्तव में धन नामानि ऐश्वर्य का भी नभों कोइ अर्थ है वह शरीर रूपस्य हो, पुष्ट हो और सार व्यक्तिन में एक चुप्पकीय गुण ही। कायाकल्प अथात एक अल्प काल में ही काया का नवनियोग डो सके, उनमें योग मुक्ति आ सके, पुष्टता आ सके, यही कायाकल्प का अर्थ है। यह अर्थ नहीं है कि यानो-शत लाखाव बहु जायेगी या काला रंग जेरे रंग में बदल जायेगा। शरीर आत्मिक एवं बाह्य रूप दोनों से एक संतुलन में आ सके, इसमें सांबंधित लामा तंत्र में जो उपाय है।

ज 'फरवरी' 2000 मंत्र-तंत्र-यज्ञ विज्ञान \*27\* ॥

दिये एक  
सम्पन्न क  
तेवार कि

किसी भी  
अग्रवत्ता  
करें तथा  
किसी स  
तथा धुट  
ध्यान एव  
मंत्र

// ३  
Om

सहित उ  
सख दें र  
बशीकर

## 6. जी

अनुसार  
का इच्छ  
करना च  
में सचि  
है। कह  
जीवन क  
भी नहीं  
नियमों  
भावना  
जीवन क  
लिये उ  
अथवा

यदि  
में स  
।  
रोत  
म

उसके अनुसार साधक/साधिका को लामा मंत्रों से वैतन्य विशुद्धिनी प्राप्त कर होलिका दहन/तंत्र सिद्धि कल्प की किसी भी रात्रि में निम्न मंत्र का एक घण्टे तक जप करना चाहिये—

मंत्र

॥ उमे पेमो उलिका विमार्ते हुं फट् ॥

Om Pemo Unikas Bimsole Hum Phat

मंत्र जप के दूसरे दिन विशुद्धिनी को स्थान करने के बाद सम्पूर्ण शरीर पर फेर कर उत्तर दिशा की ओर फैल दें।

विशुद्धिनी - 135/-

## 3. विपदाओं से मुक्ति हेतु

लामा साधकों एवं उनके साधनात्मक ग्रंथों के अनुसार जीवन के सहज प्रवाह में जो कुछ भी बाधा डाल रहा हो वहें वह व्यति दो वा कोई घटना, वह विपदा होती है अथवा मुकदमेवारी हो या शनौताचा, राज्यवाधा हो अथवा युद्ध पृथी के विवाह में आ रही अड़वन, गृह कलंड हो अथवा पुत्र का कुमारीं पर बढ़ जाना — जीवन की ऐसी समस्या अद्यतने लामा साधकों ने विपदा मानी है और इसके विशारण के लिये विस मंत्र एवं विधि की स्वच्छा की है वह स्वयं में तीव्रतम रही है। यहां विस मंत्र की प्रस्तुति की जा रही है, कई साधकों ने उसका हाथों-हाथ अनुभव किया है। यहां तक कि शत्रु-संकट अथवा प्राण मय की विश्विति में तो मंत्र जप समाप्त होते-होते ही अनुकूल समाचार तक मिले हैं। इस तीव्र विपदा निवारक साधना को सम्पादन करने के लिये साधक के पास लामा मंत्रों से वैतन्य 'सर्वाङ्ग' होना आवश्यक है। होलिका दहन की रात्रि उत्तर तंत्र सिद्धि कल्प की किसी भी रात्रि में नाल वस्त्र पहनकर एकांत में विशिष्ट की ओर मुख्य कलंड बैठें तथा अपने सामने किसी ताम्रपात्र में सर्वांग को स्थापित कर दें।

विस विपदा से मुक्ति चाहते हैं उसका उच्चारण करें। वह ध्यान रहे कि एक सर्वांग पर केवल एक समस्या से गम्भीरित साधना की जा सकती है। यूं साधक इस साधना को अलग-साधना में भी सम्पन्न करने के लिये स्वतंत्र हैं। सर्वांग की स्थापित करने के पश्चात एक तोल का बड़ा दीपक जलाकर अगे दिये मंत्र का किसी भी माला से १०८ बार उच्चारण करें—

मंत्र

॥ तावत्या उमे भेखण्ड जे महा भेखण्ड जे रण्डेजा  
साम्बुजांते सोहा ॥

Tasyatya Om Bhekhand Je Mahaa Bhekhand Je  
Randejas Saamyognante Sohan

सर्वांग को अलगो दिन प्रातः होलिका अज्ञि में भरम कर दें अत्यन्त जल में विसर्जित कर दें।

मंत्र - 110/-

## 4. मानसिक शान्ति हेतु

वैद्य धर्म, विससे लामा मंत्र उद्घाट हुआ उसका आधार है ध्यान और ध्यान का तात्पर्य है वित को विविध वासनाओं से पृथक करने हुए निस्सीम शान्ति में खो जाना। वह कोई आवश्यक नहीं कि जीवन में कोई शत्रु हो नाहीं ताकि वे कभी-कभी ऐसी परिस्थितियां भी जन जाती हैं, जो मनुष्य के साथ शक्यत व्यवहार करके उसे अव्यवस्थित कर देती है। इस युग की जटिल संरचना, व्यवसाय की जटिलहृष्ट, भावनात्मक देस प्रेरी होती है जहां व्यक्ति अपने वित की शहज एकाग्रता को खोकर उड़िन बना रहता है। ऐसी ही वितियों में जहां व्यक्ति अन्य कोई सम्बाधन न सूझ रहा हो तो लामा तंत्र में वर्णित एक लघु प्रयोग होलिका दहन की रात्रि अथवा तंत्र सिद्धि कल्प की किसी रात्रि में सम्पन्न करना अचूक रहता है।

इच्छुक साधक को चाहिये कि वह एक 'कोटानम' जो लामा मंत्रों से सिख हो, प्राप्त कर उसे खेत वस्त्र पर स्थापित कर, स्वयं पौर इवत वस्त्र पहन कर उत्तर दिशा की ओर मुख निम्न मंत्र का एक घण्टे तक जप करे—

मंत्र

॥ उमे अमरिता अयुर दण्डे सोहा ॥

Om Amarita Aayur Dande Sohan

मंत्र जप के बाद कोटानम की किसी सफेद वस्त्र में लेपेट कर अपने दाहिनी भुजा में बांध ले तथा एक भाष आद विसर्जित कर दें। सात्यिक साधनाओं, कुण्डलिनी जगरण से सम्बन्धित साधनाओं में सचि रखने वाले शिष्यों-साधकों के लिये वह प्रयोग पूज्यपाद गुरुदेव की ओर से एक उपहार होती है। जीवन में मानसिक शान्ति ही समस्त धोग और योग का साध है, अतः धोष्य विष्व को चाहिये कि वह सी कार्य छोड़कर भी इस वर्ष होलिका दहन की रात्रि में इस प्रयोग को उच्चस्य सम्पन्न करे।

साधना सामग्री पैकेट - 90/-

## 5. मनोनुकूल जीवन साथी प्राप्ति हेतु

यह प्रत्येक मनुष्य का — यह वह स्त्री हो या पुरुष, सहज स्वामाव होता है कि जब वह जीवन के प्रारम्भिक दौरों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है तो उसके मन में कामनाओं का उदय होता है। कामनाओं की पूर्ति से ही मनुष्य के हृदय के कोमल पक्षों की पूर्ति होती है, कामनाओं का उदय होना तो इस बात का संकेत होता है कि अभी जीवन इंठ नहीं हुआ है और समस्त कामनाओं में जो सर्वोपरि कामना होती है वह किसी भी स्त्री या पुरुष की यही होती है कि उसे मनोनुकूल जीवनसाथी मिल सके। कभी-कभी ऐसा होता है कि विभिन्न कारणों से, ग्रहोंवाहिनी से ऐसा स्योग नहीं बन पाता, तब मन को एक हताशा धेर लेती है। लामा तंत्र में

दिये एक प्रयोग इस ऐसी स्थिति के समाधान हेतु उपयुक्त है। इसे स्वच्छ करने के लिये साधक/साधिका के पास लामा पद्धति से दिया र किया गया 'तिर्यक चक्र' होना आवश्यक है।

होलिका दहन की रात्रि अथवा तंत्र सिद्धि कल्प की किसी भी रात्रि में स्वान कर सुखुचिपूर्ण वस्त्र पहन कर, सुगच्छित झटकती नली कर फूलों की पञ्चुडियों पर तिर्यक चक्र को स्थापित करे तथा स्वस्त्र रूप से अपनी मनोकामना को करें। यदि मानस में किसी स्त्री (या पुरुष) का नाम है, तो उसका भी उच्चारण करे तथा बुटनों के बाल बैठकर दोनों हाथ जोड़कर तिर्यक चक्र पर ध्यान एकाय करते हुए आधे घण्टे तक निष्ठा मंत्र का जप करें।

मंत्र

// ओम बोद्धो री रारो लिसारी मो री वारी सोहा //

Om Bobo Ree Sarree Nisarree Mo Ree Varee Sohaa

मंत्र जप के पश्चात तिर्यक चक्र की फूल की पञ्चुडियों सहित उठा कर किसी स्वच्छ रुमाल में बांध कर अपने सन्दूक में रख दें तथा एक माह पश्चात विसर्जित कर दें। यह एक तीव्र वशीकरण प्रयोग भी है।

तिर्यक नं० - 165/-

## 6. जीवन में सर्वगीण उन्नति हेतु

प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन को अपनी ही भावनाओं के अनुसार ढालना चाहता है, कोई कला के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करने का डच्छुक होता है, तो कोई साधनाओं के क्षेत्र में उच्चता प्राप्त करना चाहता है। किसी को शान्ति में उच्च पद्धति अधिकारी बनने में सक्षम होती है, तो कोई राजनीति के क्षेत्र में उग्रसर होना चाहता है। कहो का तात्पर्य यह है, कि प्रत्येक व्यक्ति अपने ठंग से अपने जीवन को श्रेष्ठता की ओर ले जाना चाहता है और इसमें ऐसा कुछ भी नहीं जो अनुचित हो जब तक कि वह सामाजिक और नैतिक विषयों के विरुद्ध न हो। जीवन में जड़ों भी उसे श्रेष्ठता देने की भावना हो निश्चित रूप से साधना का मार्ग ग्रहण करना चाहिये। जीवन स्वप्निम बन सके, प्रभावशाली और क्षमतावान हो, इसके लिये लामा तंत्र में एक सहज उपाय है – होली दहन की रात्रि अथवा तंत्र सिद्धि कल्प में लामा मंत्रों से सिद्ध 'बोधिसत्त्व भाला'

### लामा साधना साकल्य मंत्र

किसी भी लामा साधना का प्राप्तम् करने से पूर्व यदि इस मंत्र का पांच मिनट जप कर लिया जाए, तो साधना में सफलता की सम्भावनाएँ बढ़ जाती हैं –

// नमो रत्न वयाय ऊ खं खनि खं खनि रोत्सनी  
रोत्सनी टोटनी टोटनी त्रसनी त्रसनी प्रतिहना प्रतिहना  
सर्व कर्म परम्परा निषय सर्व सतो नयत्स सोहा //

ल 'फरवरी' 2000 मंत्र-तंत्र-यत्र विज्ञान '29' ल

को लेकर अपनी मनोकामना मन में स्पष्ट कर उससे निष्ठा मंत्र की पांच माला साधक को जप करना चाहिये –

मंत्र

// उमे धुम रोहा //

Om Dhram Rohaa

मंत्र जप के पश्चात इस माला को गले में धारण कर लेना चाहिये और निरन्तर एक माह तक (शीब कार्यों एवं रात्रि में शयन काल को छोड़कर) धारण किये रखना चाहिये, तत्पश्चात विसर्जित कर दें। साधक चाहे तो मंत्र का अगले एक माह तक भी नित्य एक माला जप कर सकते हैं, यद्यपि यह अनिवार्य नहीं है।

साधना सामग्री पैकेट – 150/-

## 7. जीवन में पूर्ण आध्यात्मिक उन्नति हेतु

जीवन का पहला और अन्तिम लक्ष्य किसी भी साधक के लिये जो हो सकता है वह यही है कि वह अपने इष्ट, अपने गुरु में लीन हो सके। जीवन में भौतिकता-आवश्यक है किन्तु ऐसी भौतिकता जो आध्यात्म के पथ पर अग्रसर करने में सहायक न हो व्यर्थ है, तुच्छ है। लामा तंत्र इसी ध्यानाके साथ निश्चित होता है। जिस तरह से शक्ति करने पर ये मुंह में गिरास नहीं चुल जाती, उसी तरह से ओढ़ों से गुरु-गुरु शब्द कहने से जीवन में, प्राणों में गुरुदेव नहीं समाहित हो सकते। इसके लिये निश्चित प्रक्रिया अपनानी पड़ती है।

होलिका दहन की रात जहाँ जीवन में अच्युतों को समाहित करने का क्षण है, वहीं अच्यात्म को समाहित करने का भी दुर्लभ क्षण होता है। हमारे हृदय प्रत्यल पर गुरुदेव पूर्ण प्रसन्नता से विराजमान हो सके और पूरा वर्ष उनकी मूल्य उपस्थिति में एक छलछलाहट के साथ ब्यानीत हो सके, इसके लिये आवश्यक है कि साधक समय रहते लामा मंत्रों से युक्त 'गुरु यंत्र' प्राप्त कर होती की रात अथवा तंत्र सिद्धि कल्प की किसी रात्रि में निष्ठा मंत्र का मात्र एक घण्टा मंत्र जप करें –

मंत्र

// ॐ मणि यदमे हुं //

Om Mani Padme Hum

जप के बाद यंत्र को श्रद्धा पूर्वक अपने पूजा स्वान में स्थापित कर दें। सम्भवतः इस विश्व विश्वात मंत्र के विषय में साधक को विशेष कुछ बनाने की आवश्यकता नहीं है। लामा तंत्र में तो यह केवल मंत्र ही नहीं वरन् मंत्ररात्रि कहा जाता है।

लामा मंत्रों से युक्त गुरु यंत्र – 210/-

आशा है इन दुर्लभ मंत्रों के द्वारा आप अपने जीवन में मनोनुकूल परिवर्तन कर सकेंगे। जिन साधनाओं में विशेष रूप से वस्त्र, दिशा का उल्लेख नहीं हुआ है साधक गण वहाँ दिशा उत्तर एवं वस्त्रों का रंग श्वेत ही समझें।



# होती और साबर प्रयोग

ज्यों सोने में आ घुली हो सुनव्य

होली दहन रात्रि :  
19.3.2000 अम्बा  
तत्र सिद्धि कल्प :  
4.3.2000 से 12.4.2000

साबर मंत्र, अटपटी भाषा से कोई सामान्य मंत्र नहीं सम्पूर्ण तंत्र है जिनका प्रयोग  
व्यर्थ जाता ही नहीं, कैसे? स्वयं अनुभव कर लीजिये . . .

शा

यद ओ कोई मात्रक होना जो इन तथ्यों से अपरिहित हो कि साबर मंत्रों को घुरे वर्ष भर में सिद्ध करने का सिद्ध नहीं होता है होली पर्व अंगत होलिका रहन की गति, सायकलन छ, बजे से अगते दिन प्रातः, छ, बजे तक का अबसर तो प्रकृति की वैतन्यन के कारण कुछ अलग ही होता है। इस कल्प में यदि किसी भी साबर मंत्र का मात्र १०८ (अष्टावश्मात् वार) उच्चारण कर दिया जाये तो वह घुरे वर्ष भर के लिये तैनात्य व सिद्ध हो जाता है। केवल साबर मंत्रों को सिद्ध करने की वृष्टि से ही नहीं, इसी काल में किसी भी साबर मंत्र का मात्र १०८ बार (एक माला) जप करना भी किसी तात्कालिक समस्या को जड़ मूल ने समाप्त कर देने में चाहायक होता है। प्रस्तुत है कुछ अभियंग साबर साधनारं प्रियं यदि होली की रात सामाज न कर सके, तो किसी माला की अनवस्था से भी स्वप्न कर सकते हैं। इन प्रयोगों में दिना दिनांक व वस्त्रों का रंग पीला होना आहिये। यह बात अचानक देने वाली है, कि साबर साधनाओं में तुलसी की माला वर्तित है।

## 1. शत्रु विजय हेतु

जीवन का अधिकार होते हैं शत्रु जो सुख, चैन, नींद सबका हरण कर लेने हैं। जीवन में कोई भी शत्रु बनने में शायद ही सांख रखता ही किन्तु सामने वाले के मन में धूगा, धैर, ईर्झा, धैर जैसे भाव न आ सके, इसके लिये क्या करना जा सकता है? बहुधा जीवन में परिस्थितियां इस तरह की बन जाती हैं कि कोई अनायास ही शत्रु बन जाता है और ऐसी स्थिति में जिसमें कि अपने प्रतिपक्षी के मन से शत्रुता का भाव समाप्त हो सके, साबर साधनाओं में एक लघु प्रयोग मिलता है। हीनी अथवा तत्र सिद्धि कल्प को किसी भी रात्रि में 'ओश्च' केरवच को सामने एक ताम्र पाप में स्थापित कर किसी भी माला से निष्ठ मंत्र का १०८ बार उच्चारण करें।

**मंत्र** ॥ॐ उलट बन्दे नरसिंह, उलट नरसिंह पलट नररिह की काया, मार रे मार बलवंत वीर पलटन यम की काया, क्यों कवच हम वज चलाया, क्यों कवच तुम सामने आया, आदेश गुरुजी आदेश आदेश।

ऋ 'फरवरी' 2000 मंत्र-व्यंत्र विज्ञान '30' ४

यदि किसी विशेष शत्रु से पीड़ित हो तो उसका नाम लेकर भी यह मंत्र जप किया जा सकता है। मंत्र जप के बाद गोरखकवच की काली धारे के साथ दाढ़ी भूजा में बोध ले तथा एक माह बाद जल में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - 150/-

## 2. तांत्रिक प्रयोग विवाहण हेतु

जिस तरह से शुद्ध दोष का कोई मूर्त रूप नहीं होता, उसे केवल परिस्थितियों के आधार पर समझा जा सकता है। उसी तरह से यदि किसी व्यक्ति पर तांत्रिक प्रकोप हो तो उसे भी पारस्थितियों के आधार पर ही समझा जा सकता है। भर में किसी न किसी सावस्य का बीमार पढ़े रहना, कोई ऐसा रोग हो जाना जो डॉक्टरों के भी समझ में न आ रहा हो, सारे शरीर में तीव्र पीड़ा बने रहना, विकिप्त जैसी स्थिति हो जाना, व्यक्तसाध के प्रति उच्चारण हो जाना, अनायास लड़ाई झगड़े होने रहना, शूद्ध-बलह का सघेव बने रहना इत्यादि ऐसी ही स्थितियां होती हैं। यदि साधक स्वयं को किसी रूप में स्वभवित या चांध विद्या गया अनुभव करता हो, तो उसे चाहिये कि वह होलिका रहन/तत्र सिद्धि कल्प को रात्रि को 'नथीला' सामने रखुकर उसके समाप्त किसी पात्र में थोड़ा जल भी रख ले तथा किसी भी माला से निष्ठ मंत्र का १०८ बार उच्चारण कर लें।

मंत्र ॥ दुबरा रे दुबरा, दुबरा रे दुबरीला, तिनका रे

तिनका, तिनका रे तिनकीला, राम राव राजा रंक राणा प्रजा वीर जोगी सदका सिधीला नाम गुरु का काम गुरु का दिंदीला ॥

मंत्र जप के बाद नथीला की सात बार पानी में दुबो कर वक्षण दिशा में फेंक दें। थोड़ा जल सम्बन्धित व्यक्ति को पिला दें और शेष परिवार के ऊपर व घर में छिड़क दें। इस प्रयोग को संकल्प लेकर किसी तत्र बाधा से ग्रस्त व्यक्ति के लिये भा सम्पत्ति किया जा सकता है।

साधना सामग्री पैकेट - 90/-

वास्तव सम्पर्व में, किस नहीं रह बृद्ध, स धनवान नीवन द ऐसा व्या जीवन ज समझ है में ईश्वर भनमोल सहनता दू प्रवहि इत्ताती जाता है, दर जग केवल ए

# त्रिंशैषिं गणी परा

माँ! जीवन का एक पल आयेगा, मैं आपका स्मरण करूँगा, फिर अगला पल आयेगा और मैं उसमें भी आपका ही स्मरण करूँगा, फिर अगला पल... और यह जीवन जो पलों का एक संघटन मात्र है, सुखपूर्वक, आङ्गाढ़पूर्वक व्यतीत हो जायेगा, मेरा यह विश्वास है और इस पुण्य वेला में आपसे मात्र इतना ही आशीर्वाद प्राप्त करने का आग्रही हूँ....

इस निन्य परिवर्तनशील प्रतीत होते किंतु वास्तव में जड़ जगत में क्या किसी की सहज गति सम्भव है? कौन नहीं है जो स्वयं को किसी कुर पाश से, किसी अदृश्य पाश से बंधा अनुभव करके छटपटा नहीं रहा है? किशोर हो अथवा युवा, प्रीढ़ हो अथवा वृद्ध, स्त्री हो अथवा पुरुष, जानी हो अथवा मृत्यु, धनवान हो अथवा निर्धन, कौन नहीं है, जिसने अपना जीवन घड़ी को सुइयों को समर्पित कर दिया। और ऐसा व्यक्ति यंत्रवत्, पाश में बद्ध होगा ही और जिसका जीवन जो काल के कुर पाश में बद्ध हो, वह यह कभी समझ ही नहीं सकता कि कैसे यह जीवन जो वास्तव में ईश्वर की ओर से दिया गया एक उपहार, एक अनमोल भेट है - वह एक पल से दूसरे पल में किसी सहजता, कितनी मधुरता और कितनी लव के साथ ये प्रवहित हो सकता है, जैसे कोई नदी, जो सहन ही इठलाती, बल खाती कब नाकर समुद्र में बिलोन हो जाती है, कुछ पता ही नहीं चलता।

काल के कुर पाश की नकारने की क्षमता इस जगत में यदि किसी से सम्भव होती है, तो वह केवल एक शिशु से ही हो सकती है, क्योंकि उसका



वन्दनीय माता जी

ऋग्वेदी 2000 मंत्र-तत्र-यत्र विज्ञान '31'

बहुत बात का भी यक्षिता का सम्बन्ध ग्रीष्मिक उसकी संवर्धने के माध्यम में रखना के चरण

याचना निर्मल साधना को भी जाता है का कोई जगदम्ब उल्लंघन

ताप, निमुक्तमें करना उससे हुए साप्राप्ति सम्पन्न

ननाम चात हम जगदम्ब जननी करना,

शास्त्र दिवांग

उस मां शक्ति और आशीर्वाद साप्तवी

प्रकृति से वार्तालाप करने की क्रिया स्वयं प्रकृति ही सिखाती है, यदि उसे मां के रूप में स्वीकार कर सके या उसके ही मूर्तिमंत स्वरूप जगदम्बा के समक्ष एक शिशु की भाँति निष्कपट रूप में उपस्थित हो सके। यही जगदम्बा साधना का सर्वोच्च भाव है। एक मां स्वयं इस बात का ध्यान रखती है, कि उसके शिशु का प्रत्येक रूप में संरक्षण हो, पोषण हो, संवर्धन हो। एक मां को जिस बात की कामना होती है वह मात्र इतनी ही होती है कि उसकी सन्तान बस प्रसन्न रहे, उसकी किलकारियों से घर गूँजता रहे, वह उसे देखकर हुलसता रहे और सबसे बड़ी बात कि प्राणों का सम्बन्ध बना रहे। जगदम्बा साधना का भी यही अर्थ है कि साधक और जगतजननी के मध्य प्राणों का सम्बन्ध स्थापित हो सके। जगदम्बा साधना, मां से अपना अभीष्ट प्राप्ति की याचना तो ही है। साथ ही विनाम बनने की, शिशु के समाज विर्मल बनने की भी साधना है।

रामबन्ध मानव या समाज रचित किसी जड़ नियम से न होकर प्रकृति की उस लय में होता है जिस लय से सम्मानजन कर कोई भी व्यक्ति योगी अनन्त हुआ जाते में शिशु सदृश्य हो हो जाता है। इस सम्पूर्ण ऋद्धाण्ड में एक विचित्र सी सम्मोहक लय छिपा हुई है, जिससे तादातम्य करना हो यथार्थ में पुष्टिदायक होता है और इस पुष्टि को प्रवान करने के कारण ही प्रकृति को मातृ रूप में स्वीकार किया जाया है, उसे जगतजननी, जगदम्बा की संज्ञा दी गई है। जगदम्बा वास्तव में किसी भी मूर्ति के प्रति उपमा है भी और नहीं यो क्योंकि अपने विराट रूप में जिस प्रकार से ब्रह्म कोई रूप नहीं है, किन्तु वही ब्रह्म, मानव रूप में श्री सद्गुरुदेव के रूप में मनुष्य के समक्ष अवतरित होता है, ठीक उसी प्रकार से जब इस नित्य लीला विहारिणी प्रकृति को अपना अभय और मातृत्व सम्पूर्ण मानव समाज को प्रवान करना होता है तो वही किसी शुद्ध व पवित्र विश्रह का आश्रय लेती हुई मां के रूप में सम्प्रस आती है।

और ऐसी मां का कोई विशिष्ट रूप नहीं होता है, न उसके चार या छह हाथ होते हैं, न वह सिंह पर बैठ कर आती है। बस, जिसको देखकर मन में हुलस सी उठे, जिसके दर्शन करके मन से भय, पीड़ा, तनाव और दैन्य जैसे भाव मदा-सदा के लिये तिरोहित हो गये प्रतीत हों, वही तो मां है।

कब किस मां ने अपने शिशु को बोलकर समझाया है? कब किस मां ने अपने शिशु को कहकर आख्यान दिया है? बालक भाषा भी तो तभी समझेगा जब उसकी मां उसे सिखायेगी। यदि ऐसा न होता तो मातृ भाषा की संज्ञा ही क्यों बनती? जिस तरह से शिशु के बाल अपनी मां के चेहरे पर तैर रहे मातृत्व के भावों, नेत्रों में वात्सल्य और सिर पर अपकी बनकर लगती आश्वसित की भाषा को 'पढ़ना' जानता है, ठीक उसी तरह से एक योगी भी इस चराकर प्रकृति के लक-

एक मूक संकेत को 'पढ़ने' की कला में निष्पात हो जाता है। योगी का अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति किसी विशेष लक्षणों से युक्त हो। जो व्यक्ति यह समझता है कि स्वयं में उसका उस्तित्व तब तक अपूर्ण है, जब तक वह विराट सत्ता से तादातम्य नहीं करता और जो ऐसे तादातम्य या योग के लिये बेष्टात होता है, वास्तव में वही योगी है।

प्रकृति से वार्तालाप करने की क्रिया स्वयं प्रकृति ही सिखाती है, यदि उसे मां के रूप में स्वीकार कर सके या उसके ही मूर्तिमंत स्वरूप जगदम्बा के समक्ष एक शिशु की भाँति निष्कपट रूप में उपस्थित हो सके। यही जगदम्बा साधना का सर्वोच्च भाव है। जो इस प्रकृति से वार्तालाप करने की कला सीख लेते हैं, वास्तव में वे ही जीवन मुक्त होते हैं। जीवन के सामान्य क्रिया कलाप तो सैदैव चलते रहे हैं और जब तक व्यक्ति की शबास-पञ्चवास चलती रहती है, तब तक उसके वैनिक कार्य चलते ही रहते हैं। किन्तु जो अपना 'स्व' अपने से कुछ पृथक कर 'मह' तत्व अर्थात् प्रकृति में, जगदम्बा में, श्री सद्गुरुदेव में विलीन कर देते हैं, वे जीवन की प्रत्येक घटना के साथी बन जाते हैं, उसमें पात्र बनकर वित्ताप नहीं करते, वे जो नित्य हैं उसमें स्थित हो जाते हैं, अनित्य के केवल दृष्टि भर रह जाते हैं . . . और यह सारा शोक, तनाव, पांडा, भय, दैन्य, कथा अनित्य से सम्बन्ध रखने के कारण ही नहीं उपजता?

एक मां स्वयं इस बात का ध्यान रखती है, कि उसके शिशु का प्रत्येक रूप में संरक्षण हो, पोषण हो, संवर्धन हो। इसके लिये शिशु को कोई जलग से प्रार्थना नहीं करनी पड़ती। एक मां को जिस बात की कामना होती है वह मात्र इतनी ही होती है कि उसकी सन्तान बस प्रसन्न रहे, उसकी किलकारियों से घर गूँजता रहे, वह उसे देखकर हुलसता रहे और सबसे

बहुत की प्राणों का सम्बन्ध बना रहे। जगदम्बा साधना का भी यही अर्थ है कि साधक और जगतजननी के मध्य प्राणों का सम्बन्ध स्थापित हो सके। आयु के बढ़ते वर्ष व्यक्ति को भौतिक रूप से भले ही कितना कुछ क्यों न होते ही किन्तु उसकी सहनता, उसका शिशुत्व छीन लेते हैं। आयु के विकास के साथ बुद्धि का विकास होता है और बुद्धि हमें अपने ही अहं में रहना सिखाती है, प्रकृति की ओर जाना अथवा जगतजननी के चरणों में नह दोना नहीं।

जगदम्बा साधना, माँ से अपना अभीष्ट प्राप्ति की याचना तो ही ही, साथ ही विनम्र बनने की, शिशु के समान निर्मल बनने की भी साधना है। साधक जितनी उच्चकोटि की साधना में संलग्न होता है, उसी के अनुसार उसे अपने मानस को भी स्वच्छ करना होता है अन्यथा सफलता सन्दिग्ध हो जाती है। सुदूर लक्ष्य अथवा दुर्दृश्य रखकर साधना करने का कोई अर्थ नहीं होता और जहां साक्षात् जगतजननी माँ जगदम्बा की साधना हो, वहां यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय हो जाती है।

हमारा जीवन सभी रूपों से सम्पन्न हो, हमें रोग, नाप, चिन्ता, आर्थिक अभाव, शत्रु बाधा, सन्तान कष्ट, मुकदमेबाजी, तंत्र प्रथोग जैसी कठिन स्थिति का सम्मान करना पड़े और यदि दैवतशे ऐसी कोई स्थितियों हो पीं तो उससे शोष ही पुक्कि प्रिल सके, जिससे हम तमाज मुक्त होते हुए साधनाओं में, ध्यान-धारणा-समाधि जैसी स्थितियों की प्राप्ति में एकायता से तर्कीन हो सके — जगदम्बा साधना को सम्पन्न करने का यही अर्थ है।

माँ के समक्ष अपनी कोई भी बात कहने में किसी भी सन्तान को कमी भी कोई हिचक नहीं होती। जीवन में जो भी बात हमारे मन में एक फास बन कर चुप रही हो, उसे भगवती जगदम्बा के समक्ष निवेदित किया जा सकता है क्योंकि वे 'जननीपता' मर्यादित इस समस्त जगत की माँ हैं। और साधना करना, मन की बात कहने का ही एक शास्त्रोक्त रूप है।

## शास्त्रोक्त नवरात्रि पूजन

**दिनांक (५.४.२००० - ११.४.२०००)**

शताब्दी की इस प्रथम नवरात्रि में प्रत्येक साधक उस मंडि की कृपा प्राप्त कर सके, उस विशेष नित्य लीलामध्ये शक्ति स्वरूपा भगवती जगदम्बा की कृपा प्राप्त कर सके, आशीर्वाद प्राप्त कर सके यही तो नवरात्रि के अवसर पर आस्त्रोक्त पद्धति से जगदम्बा पूजन का अर्थ होता है। और

ज 'फरवरी' २००० मंत्र-तंत्र-द्वय विज्ञान '३३'

नवरात्रि के इन पालन विवरों पर कोई भी प्रश्न उच्च साधक साधना विहीन नहीं रहना चाहता।

और जो साधक है वही तो शिष्य भी होते हैं या हो सकते हैं। और कैसा दिव्य संयोग है इस बार कि शिष्यों की परम वन्दनीय माता जी का जन्म दिवस ८ अप्रैल भी नवरात्रि के इन्हीं पावन विवरों के मध्य घटित हो रहा है। इस बार तो जैसे शिष्यों को वन्दनीय माताजी आशीर्वाद और बात्सल्य प्रदान करने के लिये व्यवहृत हैं। प्रत्येक शिष्य को उनके बात्सल्य से वंचित नहीं रहना है।

नवरात्रि के इन दिवरों में जब कि माँ अपने पूर्ण कृपास्वरूप में रहती हैं, तब उनका आशीर्वाद प्राप्त हो जाए, यही तो नवरात्रि के इस पूजन का अर्थ है, उद्देश्य है, वेतु है। और जब माँ का आशीर्वाद प्राप्त हो जाए, तो हिर कोई याचना नहीं करनी होती, जीवन में हर प्रकार से अनुकूलता — समस्त प्रकार से आध्यात्मिक व भौतिक उन्नति प्राप्त होती चली जाती है। सामाजिक जीवन में स्थिरता के साथ ही जीवन में ध्यानावस्था, आंतरिक जानन-व और तृप्ति बढ़ती चली जाती है। जीवन के विशाद, दुर्ख तिरोहित हो जाते हैं और साधक के जीवन में शक्ति तत्व आ जाता है, उसमें शगता आ जाती है, जिससे वह प्रत्येक दोत्र में सफलता अर्जित करता चला ही जाता है। इसी का संधारन नाम है विशेष शास्त्रोक्त नवरात्रि पूजन जो पूरे नवरात्रि काल में सम्पन्न करना होगा। इस विशेष पूजन में परम वन्दनीय माता जी का अभिनन्दन स्तोत्र भी सम्मिलित है, जिससे उनका आशीर्वाद प्राप्त हो सके।

इस वर्ष नवरात्रि ५.४.२००० से प्रारम्भ हो रही है। नवरात्रि के अवसर पर जगदम्बा का विधिवत् पूजन विश्वान पत्रिका के मार्च-२००० अंक में प्रस्तुत किया जायेगा। परन्तु इसके लिये साधक के पास पहले से ही शास्त्रोक्त नवरात्रि पूजन पैकेट होना आवश्यक है। इस पूजन पैकेट में नवार्ण अंगों से सिद्ध 'भगवती जगदम्बा यंत्र', 'ऐ धींज माला', 'चैतन्य कात्यायनी चक्र' एवं 'कराल गुटिका'। जिस प्रकार कराल गुटिका हर प्रकार की शत्रु बाधा, तंत्र बाधा समस्त बाधाओं, पाप, दोषों के शमन के लिये उपयुक्त है, वही कात्यायनी चक्र शक्ति प्रदान करने में समर्थ है तथा यत्र व ऐ बीज माला साधक को जीवन में प्रत्येक प्रकार की सफलता प्रदान करने में सहाय है। इस पूजन पैकेट को शीघ्रातिशीघ्र मंगा लो, जिससे आप इस दुर्लभ अंगों में इस सामग्री का सदुपयोग कर सकें।

साधना सामग्री पैकेट - ४३०/-

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान परिकारों आपके परिवार का अधिकार अंग है। इसके सापेनाहाक मन्त्र को सामान के सभी स्थानों में राखा रखने से रक्षीकर किया जाया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ण का समस्याओं की ढल सरल और सरल रूप में साझित है।

## गौरवशाली छिन्दी मार्गिक पत्रिका

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान की

# वार्षिक सदस्यता

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर आप पायेंगे  
अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

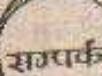
## तंत्र बाधा वीर भैरव यंत्र क्रिवारक

तंत्र की सैकड़ों-हजारों विधियां हैं, परन्तु जितनी तीव्र और अचूक भैरव या भैरवी शक्ति होती है, उतनी अन्य कोई नहीं होती। वीर भैरव भगवान शिव और पार्वती के प्रमुख गण हैं, जिनको प्रसन्न कर मनोवाहित लाभ प्राप्त किया जा सकता है। मूलतः इस साधना को गृहस्थ जीवन को दीरता से जीवे के लिये सम्पन्न किया जाता है। दीरता का अर्थ है प्रत्येक बाधा, समस्या, अड्डन और परिस्थिति को अपने नियंत्रण में लेकर, उस परिस्थिति पर पूर्ण वर्चस्व स्थापित करते हुए, दीरता से जूझते हुए विजय प्राप्त करने की किया। यही दीरता वीर भैरव यंत्र को घर में स्थापित करने पर प्राप्त होने लगती है। गृहस्थ जीवन सुख, शान्ति और निर्विघ्न रूप से गतिशील होता है। समस्याओं पर हावी होते हुए भी पूर्ण आनन्दयुक्त बने रहना - यही वीर भाव है। मुख्यतः इस साधना की तंत्र बाधा, मूठ आवि को समाप्त करने के लिये किया जाता है।

**माध्यन विधि** - इस यंत्र को घर में स्थापित कर नें। किसी थाली में आटे से बनी एक मानवाकृति स्थापित करें। उस पर तेल व सिन्दूर लगाएं। किर धूपबत्ती जलाकर रथि में १५ मिनट तक - 'ॐ श्वेरवाय प्रसन्नाय हुं फट' इस मंत्र का जप करें। यदि कोई आकृतियां दिखाई दें, तो वबराये नहीं। ११ दिन तक नित्य रथि जप के बाद मंत्ररत्नी हुई आकृतियां उस आटे के मानवाकृति में समाजायेंगी। ११ दिन के बाद आटे की उस मानवाकृति को और यंत्र को गल में विसर्जित कर दें। इस प्रयोग से तंत्र बाधा, प्रेत बाधा या अन्य किसी आकृतिक बाधा से मुक्ति मिलती ही है।

यह कुलपि उपहार तो आप पान्निकः तजः वार्षिक सदस्य अपले केटो मिन्द, रिक्तेदार रा सदगल को बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पान्निका के सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

**वार्षिक सदस्यता शुल्क** - 195/- आक खर्च अटिएका 30 / Annual Subscription 195/- + 30/-postage  
आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड द्वारा अक्षरों में भरकर हमारे पाल मेज दें, शेष कार्य हुम सरयं करेंगे।  
Fill up and send post card no. 4 to us at : -



**मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राज.)  
Phone: 0291-432209 Fax: 0291-432010

# शक्ति साधनाएँ ही वास्तविक साधनाएँ हैं

- अपने जीवन में साकार करें - सत्या, भगवती, अम्बिका को  
- निर्मण करें शक्ति के साथ सफल जीवन का



**सा**धना करने का उर्ध्व डै अपने मनोनुकूल ढंग से परिवर्तन की चेष्टा करना। यह प्रकारान्तर से शक्ति तत्व की महिमा को स्वीकार करना नहीं है तो और क्या है? शक्ति की केवल उपासना नहीं की जाती, उसे साधना के माध्यम से जीवन में उत्तर भी लिया जाता है, और प्राप्त कर लिया जाता है वह सब कुछ जो जीवन में आवश्यक हो, अनिवार्य हो।

यह एक सुस्थापित मान्यता है कि न केवल इस जगत वरन् इस ऊर्ध्व ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के मूल में कोई आदि शक्ति ही क्रियाशील है। यह समस्त ब्रह्माण्ड जिस प्रकार से एक क्रिया और लय में बद्ध है, जिस प्रकार से समस्त यह एवं पिष्ठ गतिशील हैं, वह किसी शक्ति के अभाव में सम्भव ही नहीं। किसी भी वस्तु का सृजन शक्ति के द्वारा होता है और विद्या भी उसी द्वारा होता है, इसी कारण शक्ति को विद्युतात्मक माना गया है उर्ध्वांत आदि शक्ति के ही तोन रूप सत्, रज एवं तम हैं। सृजन का कार्य सम्पन्न करने के ही कारण शक्ति को स्वीरूपा, देवीरूपा माना गया है।

जिस तरह से किसी भी जीव का निर्माण उसकी मां के रक्त मण्डा से ही होता है, ठीक उसी प्रकार से शक्ति तत्व भी प्रत्येक जीव के अन्तर्गत निहित होता है। जीतर केवल यह ही जाता है कि किसी को यह बात स्मरण में रहती है और किसी को स्मृतियों में खो जाती है। वर्ष में पढ़ने वाले चार नवरात्रि पर्व (दो प्रकट एवं दो शुभ) इसी बात का स्मरण कराने के लिये निर्मित किये गये हैं। यह स्वयं आदि शक्ति भगवती नगदम्बा नहीं कहती कि तुम अमुक-अमुक विवरों में मेरी उपासना करो तो मैं प्रसन्न होऊँगी वरन् ये अवसर, काल

के विशिष्ट काल दूड़े गये हैं हमारे उन पूर्वजों द्वारा जिन्हें हम कथि कहते हैं, महर्षि कहते हैं और उनका वंशज होने में गौरव का अनुभव करते हैं। हमारे वे पूर्वज प्रकृति से पूर्ण रूप से सामनेजर्य युक्त रहते थे और इसी कारणवश शक्तियुक्त भी रहते थे। मनुष्य ने जबसे प्रकृति के साथ सामनेजर्य को छोड़ा तभी से उसने बलेश में रहना प्रारम्भ कर दिया। क्रिंगण इस तथ्य को भली-भांति समझते थे कि आने वाले युगों में मनुष्य की क्या मानसिकता होगी और वसी कारणवश उन्होंने नवरात्रि जैसे पर्वों का सृजन किया कि यदि अधिक नहीं तो कम से कम वर्ष में अद्वारह दिन तो शक्ति तत्व की उपासना मनुष्य कर ले। वह अपने आपको साधना के माध्यम से एक लय और अनुशासन में बांध कर, शक्ति तत्व से संपुत्र होता हुआ उसने ही जीवन के बलेशों को दूर कर ले। यदि कोई व्यक्ति इतना भी साहस न जुटा पाये, स्वयं अपने ही जीवन के कल्याण के लिये इतना समय न निकाल सके, व्यर्थ की जालीचनाओं और तक्कुतक्की में उलझा रह जाये, हाथों का मूल्य न पहचान सके और कई बर्षों बाद समझ में आने पर पहचानाप के अतिरिक्त कुछ न कर सके तो वह स्वयं समझ ले कि उसे मनुष्य के स्थान पर क्या संज्ञा दी जाये।

जीवन में शक्ति तत्व के महत्व को कोई भी उपेक्षित नहीं कर सकता। दुर्बल व्यक्ति का जीवन पर-पर अपमानित होता है। उसे इस संसार और समाज में तो कोई श्रेयता गिलनी नहीं, उसके लिये आत्मजान का पद मैं अवश्य होता है। 'नाभ्या आत्मा बलह्नेन् लभ्यते' जीर्ति दुर्बल व्यक्ति को आत्मा वा अध्यात्म की उपलब्धि नहीं होती, ऐसा हमारे उपनिषदों का स्पष्ट कथन है। शक्ति तत्व जीवन में दान से

हर की अपनी अभिलाषा है कि मैं सम्पन्न देशवर्ष से होऊँ, व दरिद्रता जी अभिशाप मनुष्य जब सम्हालता ने लेकर ज आखरी व इसके लिए जरुरी नहीं हमारे क्षण सम्पदाओं उन्होंने कुछ छोटे से जो युक्त जीवन

स्वर्ण नियं आदि छारा अवश्य नि धन धान्य होने के क थी। सम्पा स्वर्ण तो प भगवती कु देशवर्ष प्राप्त किया जा सामना न

या अग्रवर करे। अपने स्थापित छ

ही मिल सकता, उसे भक्ति से भी नहीं प्राप्त किया जा सकता । उसे तो अपने दृढ़ संकल्प से, अपने पौरुष से अर्जित करना पड़ता है।

शक्ति का विकास विन्यास समझ कर उसे आत्मसात करना पड़ता है और शक्ति से सम्बन्धित समस्त साधन वास्तव में समस्या विशेष अधिकारी का विशेष से सम्बन्धित एक विन्यास हो जाता है। उसे सम्बन्धित मंत्र, अधिरों के एक समूह भर न होकर एक प्रकार के गृह संकेत या Codification होते हैं।

जीवन की कोई समस्या छोटी नहीं कही जा सकती

और न किसी 'भी मनोकामना' को हेतु कहा जा सकता है। ये समाज की बनाई परिभाषाएँ हैं और जीवन किसी परिभाषा में बद्ध होने का नाम नहीं। 'विश्वा समस्तास्तव देवि भेदाः' – अर्थात् समस्त साधनाएँ विशेषकर शक्ति साधनाएँ उसी आदि शक्ति से उद्भूत हैं, जिन्हें हम मां जगत् जननी भगवती जगदम्बा कह कर अधिनन्दन करते हैं। प्रस्तुत हैं जगदम्बा की तीन साधनाएँ जिन्हें आप नवरात्रि (5.4.2000 से 12.4.2000) के किसी दिन प्रारम्भ कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त किसी भी मास की अन्तिम तथा अमावस्या भी शक्ति साधनाओं को प्रारम्भ करने के शुभ विवर माने जाते हैं।

## सत्या साधना - जीवन में यश, सम्मान, पद, प्रतिष्ठा, कीर्ति प्राप्त करने के लिये

सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्ति के लिए प्रत्येक साधक को यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए। इस प्रयोग के महत्वपूर्ण पक्ष को आत्मसात करना चाहिए और वह यह कि जीवन में सब कुछ प्राप्त होने पर भी यदि मान, प्रतिष्ठा नहीं है, तो जीवन का यह पक्ष अधूरा ही रहता है और उस जीवन को हम पूर्ण नहीं कह सकते। रावण या कंस का जीवन प्रतिष्ठित नहीं था, वर्तोंकि उन्होंने अपने जीवन में इस यश के पक्ष को उत्तरने का प्रयास नहीं किया, इसीलिए वे इतिहास में खलनायक के रूप में प्रतिष्ठित हुए। रावण जैसे व्यक्ति संसार के समस्त धैतिक साधनों से परिपूर्ण होते हुए भी, आश्यात्मिक पक्ष के अंतिम छोर तक पहुंच कर भी सीता अपहरण जैसा ऐसा कार्य किया अब्रवा जन सामान्य को उत्पीड़ित करने का जो कुकृत्य किया। इन सबके कारण वह मान-प्रतिष्ठा का पात्र नहीं बन पाया।

यह प्रयोग सर्वजन के लिए इसीलिए उपयोगी कहा जा रहा है, कि वे केवल मात्र संसार के सुख-भोग को प्राप्त कर संतुष्ट न हों, अपने आपको इतिहास पुरुष बनाने के लिए, शौर्यवान व्यक्तित्व बनाने के लिए इस प्रयोग को सम्पन्न करें। निश्चित रूप से आप इस साधना के माध्यम से श्रेष्ठतम व्यक्तित्व के धनी बन सकेंगे, युग-समाज में उत्तमी बन सकेंगे।

साधना हेतु आप 'जगदम्बा दंत्र' एवं 'शक्ति गुटिका' को किसी पात्र में स्थापित करें। पूर्व की ओर गुंह कर रखन्हुँ आसन पर बैठ जाएं फिर दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करें –

कार्यालय सनुणा त्वं व वस्तुतो निर्णया स्वयम् ।  
परब्रह्मास्त्रवलंष्टो त्वं सत्यो नित्या सजातनी

इसके बाद दाढ़िने हाथ घोंगे जल लेकर संकल्प करें,

ज्ञ. 'फ्रवरी' 2000 मंत्र-तंत्र-यत्र विज्ञान '38' ८

तिथि, वार, अपना नाम व गोत्र बोल कर मानसिक चिन्तन करें कि इस प्रयोग द्वारा आपको यश, मान, प्रतिष्ठा की प्राप्ति हो। जल को भूमि पर छोड़ दें।

### अंगन्यास

ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः ।

ॐ हीं तर्जनीभ्यां नमः ।

ॐ कली मध्यामाभ्यां नमः ।

ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः ।

ॐ विद्ये कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।

ॐ ऐं हीं कलीं चामुण्डायै विद्ये करतल कर पृष्ठाभ्यां

नमः ।

**रक्षा विधान** – आपने बाएं हाथ में जल लेकर बाएं हाथ से ढंके और निम्न सन्दर्भ का उच्चारण करें, तत्पश्चात जल को अपने चारों ओर सभी दिशाओं में ढंके –

ॐ अपर्मन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिता

ये भूता विद्यकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाह्या ।

इसके बाद यंत्र का कुंकुम, अष्टत, पुष्प से पूजन करके निम्न मंत्र का ११ दिन तक नित्य २० मिनट मंत्र जप करें –  
मंत्र

// ॐ ऐं कं प्रमोदिनी कं ऐं नमः //

Om Aycim Kam Promodinee Kam Aycim Namah

प्रयोग के बाद यंत्र को पूजा स्थान व अन्य सामग्री को पूजा स्थान में स्थापित रहने दें तथा दो माह बाद सामग्री को जल में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - 270/-

## भगवती साधना

हर मनुष्य की अपनी एक ज़मिलाथा होती है, कि मैं सम्पदा तथा ऐश्वर्य से परिषृण्ठ होऊँ, क्योंकि दरिद्रता जीवन का भ्रमिशाप है। मनुष्य जब से होश सम्हालता है, तब से लेकर जीवन के आखरी दम तक



इसके लिए प्रयासरत रहता है। प्रयत्न करने के बाद भी यह जरूरी नहीं है, कि वह उस सम्पदा को प्राप्त कर सके, किन्तु हमें क्षणियों तेज जो कि धीर्तिक और आध्यात्मिक दोनों ही सम्पदाओं से पूर्ण थे तथा निश्चित रूप से जो पूर्ण पुरुष थे। उन्होंने कुछ ऐसे उपाय अन्वेषण किए थे, जिनके द्वारा अपने छोटे से जीवन काल में भी थे ऐश्वर्यवान बन सके। श्रेष्ठ ऐश्वर्य युक्त जीवन का निर्माण ही तो स्वर्णिम जीवन है।

शास्त्रों में विवरण आया है कि रावण की नजरी लंका स्वर्ण निर्मित थी, यह हो सकता है कि इसे उपमा अलंकार आदि द्वारा बढ़ा चढ़ाकर अवश्य बताया गया ही, पर इतना अवश्य निश्चित है कि लंका नजरी श्रेष्ठ मवनों से सुसज्जित, धन-धान्य-ऐश्वर्य से युक्त थी एवं अपार सम्पदा का स्वामी होने के कारण ही रावण के व्यक्तिगत मैं दुक्ता और ऐश्वर्यता थी। सम्पत्तिशाली व्यक्ति ही जीवन में निडर बन सकता है, स्वर्ण तो एक आधार है जिससे सम्पदा का मापदण्ड होता है। भगवती दुर्गा की कृपा से जीवन में स्वर्णिम आशा और स्वर्णिम ऐश्वर्य प्राप्त हो सके, घर में बर्सी निर्धनता को पूर्णता से समाप्त किया जा सके, जिससे आने वाली पांडी को भी निर्धनता का सम्मान न करना पड़े, ऐसी ही श्रेष्ठ साधना भगवती साधना है।

नवरात्रि काल में अथवा किंवद्दि भी मास की अष्टमी या अमावस्या को अपने सामने 'पारदेश्वरी दुर्गा' को स्वापित करें। अपने दाँतों और यंत्र के समीप 'स्वर्णकिर्ण गुटिका' को स्थापित करें। पहले निम्न मंत्र बोलते हुए यंत्र को स्नान करावें—

## - जीवन में ऐश्वर्य, धन, धीर्तिक सम्पदा, आर्थिक सबलता के लिये

गंगे च यमुने वैव गोदावरि सरस्वति,  
नर्मदे रिन्धु कावेरि, स्नानार्थ प्रतिगृह्णताम्।  
गंगा जलं समर्पयामि नमः।  
यमुना जलं समर्पयामि नमः।  
गोदावरी जलं समर्पयामि नमः।  
सरस्वती जलं समर्पयामि नमः।  
नर्मदा जलं समर्पयामि नमः।  
सिन्धु जलं समर्पयामि नमः।  
कावेरी जलं समर्पयामि नमः।

इसके बाद यंत्र व गुटिका को शुद्ध वस्त्र से पोछ कर निम्न मंत्रों को बोलते हुए पांच बार भगवती दुर्गा को सिन्धुर का तिळक करें—

महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः  
महामोहा च भवति महादेवी महासुरी।  
खण्डगिनी शूलिनी घोरा गदनी दक्षिणी तथा,  
शंखिनी वापिनी बाणा भुशुण्डी परिघायुधा ॥  
इसके बाद अक्षत समर्पित करें—

सर्वं भगवत् सांगल्ये शिवे सर्वार्थं साधिके  
शरण्ये च्यन्द्रके गौरि नारायणि नमोस्तुते।  
पुष्पमाल्यां समर्पयामि नमः।  
धूपं दीपं नैवेद्यं निवेदयामि नमः।

फिर पारदेश्वरी दुर्गा के समक्ष आर्थिक सुदृढता के लिए प्रार्थना करते हुए निम्न मंत्र का आधे घण्टे मंत्र जप करें—  
मंत्र

// उौं ऐं श्रीं सौरस्त्र वर वरद धारिण्ये नमः //

Om Ayelin Shreem Soukhy Var Varad Dhoarinyei Namah

यह ८ दिन का प्रयोग है, प्रयोग समाप्ति के बाद आपको अर्थोपायन के नये स्रोत मिलने लगें— ये व्यापार वृद्धि के रूप में हीं या रोजगार प्राप्ति के रूप में, अक्षसमात धन प्राप्ति के स्पष्ट में या किसी भी जन्य रूप में, भगवदपाद सद्गुरुस्त्रेव एवं भगवती नगदम्बा के आशीर्वद से आपको निश्चित रूप से सफलता मिलेगी, क्योंकि यह अत्यन्त तीव्र साधना है। साधना समाप्ति के बाद पारद दुर्गा एवं गुटिका को पूजा स्थान में हीं रहने दें।

साधना सामग्री फ़िल्ट - 360/-

# अम्बिका साधना

- श्रेष्ठ सन्तान प्राप्ति अथवा  
सम्पूर्ण परिवारिक उन्नति के लिये

जगदम्बा महाशक्ति है, उन से ही समस्त विश्व का प्रावृभाव हुआ है। जिसका पालन-पोषण और रक्षा के स्वयं पुत्रवत् करती है। जगदम्बा में वात्सल्य का स्वतः स्वभाव समाहित है। ये सभी प्राणियों को मां की तरह वात्सल्य प्रदान करती है, ममता से परिषुष करती है, इसीलिए अम्बिका के रूप में जानी जाती है।

प्रत्येक व्यक्ति के लिये परिवार में पूर्णता आवश्यक है। गृहस्थ जीवन में मधुरता हो, श्रेष्ठ सन्तान हो, परिवार में कलह का बातावरण नहीं बने, क्योंकि शास्त्रों में घर को 'भूतन' कहा गया है। भुवन अर्थात् वह लोक जहाँ व्यक्ति को शारीरिक तुच्छि के साथ मानसिक शान्ति भी प्राप्त हो, एवं जहाँ सन्तान श्रेष्ठ विद्या अध्ययन कर अपने कुल का नाम विस्त्रयत कर सके। अम्बिका साधना जगदम्बा के उस स्वरूप की साधना है, जिससे परिवार में प्रय, व्याधि, रोग, शोक दूर रहते हैं, भूत-प्रेत-पिशाच इन्द्रियादि दूर रहते हैं। इसके साथ ही साथ परिवार में आपसी सामंजस्य, सीढ़ाइ द्वारा उन्नति निरन्तर होती रहती है। अतः इस साधना में परिवार के सभी सदस्यों को संयुक्त रूप से बैठना चाहिये।

प्रातः काल अपने सामने लाल आसन पर जगदम्बा मंत्र को किसी पात्र में स्थापित करें। फिर गुलाब जल से यंत्र को स्नान कराएं, कुंकुम से तिलक करें और पांच पुष्पों की यंत्र पर अर्पित करें। फिर निम्न श्लोक का उच्चारण करें—

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानि यति कश्चन।  
मुसस्त्व वस्तिकाम् काम पील वासिनी॥

धूप-दीप जलाकर स्वच्छ वस्त्र पहन कर पूर्व या उत्तर की ओर मुख कर बैठ जाएं। शुरू पूजन व गुरु मंत्र जप करने के बाव अपने परिवार के सभी सदस्यों के नाम उच्चरित करें और परिवार के मुखिया होने के नामे अपने दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प लें और संकल्प में मावना हो—‘मैं यह साधना पूर्ण पारिवारिक उन्नति के लिये सम्पादन कर रहा हूं। इस साधना का पुण्य फल मेरे पूरे परिवार को प्राप्त हो।’

ऐसा कहकर जल भूमि पर छोड़ दें, फिर दोनों हाथ

ज 'फरवरी' 2000 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '40'

जोड़कर निम्न बोले—

सिंहरकन्थ समाझडां नागालङ्घार भूषिताम् ।  
चतुर्भुजां महादेवी नाग यशोपवीतिनीम् ॥  
रक्तवस्त्र परीधाजां ब्राह्मार्क सदृशीतनुम् ।  
नारदायी मुनिगणीः सेवितां भवते हिनीम् ॥

इस ध्यान के बाद यंत्र का पूजन करें। पहले यंत्र को जल से स्नान कराते हुए निम्न सन्दर्भ का उच्चारण करें—

गंगे व यमुने वैव गोदावरि सररमति ।

नमदि सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन सञ्चिधि कुरु ॥

यंत्र को पोछ दें और निम्न सन्दर्भ बोलते हुए यंत्र पर

कुंकुम से नीं बिन्वी लगायें—

ॐ आं प्राप्तायै नमः । ॐ ई मायायै नमः ।

ॐ ऊं जयायै नमः । ॐ ए सुक्षमायै नमः ।

ॐ ऐ विशुद्धायै नमः । ॐ ओं नन्दिवै नमः ।

ॐ ओं सुप्रभायै नमः । ॐ अं विजयायै नमः ।

ॐ अः सर्वसिद्धिवै नमः । ॐ ई मायायै नमः ।

फिर निम्न मंत्रों बोलते हुए यंत्र पर अक्षत चढ़ायें—

ॐ जयायै नमः । ॐ विजयायै नमः ।

ॐ कीर्त्यै नमः । ॐ ग्रीत्यै नमः ।

ॐ प्रभायै नमः । ॐ शुद्धायै नमः ।

ॐ मेधायै नमः । ॐ श्रुत्यै नमः ।

ॐ प्रतिष्ठायै नमः ।

धूप-दीप, देवेश से पूजन करके, दोनों हाथ में खुले पुष्प लेकर निम्न मंत्र बोलते हुए यंत्र पर पुष्पांजलि चढ़ायें—

नाना शुगंथं पुष्पाणि यथा कालोदध्वानि च

पुष्पांजलि रथा दत्तं गृहाण परमे श्वरि ॥

निम्न मंत्र का 'स्फेद हकीक भाला' से नित्य ११ दिन तक प्रतिदिन ३ माला मंत्र जप करें—

मंत्र

॥ उ॒॒ हौं श्री अम्बायै हौं श्री उ॒॒ नमः ॥

Om Hreem Shreem Ambaayai Hreem Shreem Om Namah

यह प्रातः कालोन साधना श्वारह दिन की है, इसके बाद भी जब तक मनोकामना पूर्ति न हो, तब तक १ माला प्रति दिन करते हैं।

साधना साधनी पैकट - 300/-

मं

ही ज  
हैं, द  
छोड़ने

में मंगीत  
राज और  
व्यक्ति को  
उसे प्राप्तना  
जीवन रख  
नहीं है, व  
बहे राजा  
युद्ध नीति  
जाते थे, व  
का आम  
ऐसे-ऐसों  
तुरन्त तन  
आनन्द उ  
को ही उ

प्रदान के  
करने यो

तंगों द्वारा उपचार सम्भव है।

व्यसन मुक्ति  
किसी भी शुक्रवार से

# क्या आपके... नियंत्रण करते हैं?

वर्तमान सामाजिक परिवेश में मध्यपान करने वालों की संख्या में वृद्धि होती ही जा रही है। इसके दुष्परिणामों को जानने के उपरान्त भी वे उसे छोड़ नहीं पाते हैं, क्यों नहीं छोड़ पाते हैं? सुरा पान क्या वारस्तव में ही हानिकारक है? क्या उसे छोड़ने की कोई मंज साधना नहीं है?



एक मनुष्य जीवन में आनन्द प्राप्त करना चाहता है, हिंदू प्राप्त करना चाहता है, मस्ती चाहता है, नृत्य और शिरकत चाहता है, जीवन में संनीत प्राप्त करना चाहता है, जीवन में हृदय के तारों में राग और सुर चाहता है। जब यह आनन्द, यह राग, यह सुर व्यक्ति को बाहर से प्राप्त नहीं हो पाता, तो उसे कृतिम रूप से उसे प्राप्त करना पड़ता है, हठात प्राप्त करना पड़ता है, तभी जीवन रसायन लेना रह सकता है। और जब तक जीवन में रस नहीं है, व्यक्ति कुछ कर नहीं सकता। प्राचीन समय में बड़-बड़े राजा-महाराजा अनेक राजसी घड़ियाँ, प्रजा संचालन, युद्ध जीति एवं कार्यपार के कारण नाप्रसुक और तनावग्रस्त हो जाते थे, तब उपर्युक्त सामर्थ्य होने के लिये उन्हें बाह्य माध्यम का आश्रय लेना पड़ता था। राजकीयों ने औरधियों के रूप में ऐसे फौजों का निर्माण किया, जिससे यदि कोई भी उसे पिये तो उसने तनावग्रस्त हो सके, चिन्तासुक हो सके, और जीवन में आनन्द और सुर एक रूप में ही प्राप्त हो सके और ऐसे पेय के ही उद्दोने 'सुरा' कहा।

जीवन में सुर प्रदान करे, वह सुरा है। जीवन में रस प्रदान करे, उसे सोमरस की संज्ञा दी गई। ये देवों द्वारा घटण करने वाले वस्तुएँ हैं, इससे जीवन में आनन्द, प्रेम, उमंग,

तरंग की प्राप्ति होती थी। परन्तु जो विनाशकारी था, जो तामसी पदार्थ था, जिस पेय का असुर पान करते थे वह 'सुरा' नहीं 'मदिरा' थी, 'मदिरा' अर्थात् मद का पोषण करने वाली, अहंकार जैसी तामसी वृत्ति का पोषण करने वाला पेय।

राजाओं के काल में भी राजवैद्य आयुर्वेद के सिद्धान्तों पर विशेष रूप से सुरा निर्माण करते थे, जो राजाओं के लिये स्वास्थ्यप्रद भी होती थी, हानिरहित होती भी और स्फूर्तिवायक होती थी। आज भी एलोपीथो के अधिकाश टीनिकों में एल्कोहल (शराब का रासायनिक तत्व) का किसी न किसी प्रतिशत में समावेश होता ही है। आयुर्वेद के 'द्राश्वासब' जैसे पुष्टिवर्धक में भी एल्कोहल का एक विशेष मात्रा में समावेश होता है।

परन्तु प्रश्न यह है, कि आज की शराब को सुरा कहा जाये या मदिरा। और सहमता से देखा जाये तो अति किसी भी वस्तु की हानिकारक होती ही है। दवा भी यदि अधिक मात्रा में ली जाये, तो लाभ की अपेक्षा हानि पहुंचाएगी। मध्यपान की इस अनिवारिता के कारण ही यदि आपके घर में तनाव और क्लेश का बातावरण बन गया है, या आपके परिवार का कोई सदस्य मध्यपान की इस आदत से असन्तुलित हो गया है, तो उसका भी मेड के माध्यम से उपाय समझव है।

यहां यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि मंत्र

जे 'फरवरी' 2000 मंत्र-संत्र-यंत्र विज्ञान '41' ४८



चिकित्सा इस बात का कोई दावा नहीं करती कि उसके माध्यम से नशा करने वाला व्यक्ति एकाएक परिवर्तित हो जायेगा। मंत्र चिकित्सा का आधार व्यक्ति का शरीर न होकर उसका मन होता है। स्वयं 'मंत्र' शब्द की व्याख्या से ही यह बात पूर्णता से स्पष्ट होती है - 'मनसः श्राण्येति सः इति मंत्रः' अर्थात् जिस किया के द्वारा मन को बाण (वंभन मुक्ति) प्राप्त हो वही मंत्र है और नशा करना या व्यसन ग्रस्त होना वास्तव में मन की ही एक स्थिति होता है। यही वर्तमान समय में मनोवैज्ञानिकों एवं चिकित्सकों का भी विचार है। व्यसन ग्रस्त व्यक्ति को किसी भय, दबाव अथवा प्रताङ्गन के आधार पर नहीं बरन उन कारणों को दूर करके ही व्यसन मुक्त किया जा सकता है, जो उसके मन पर एक प्रकार से कहे तो दबाव बनाए रखते हैं।

मंत्र चिकित्सा यही कार्य करती है।

अनेक सामाजिक अध्ययनों से यही बात सामने आती है, कि लगभग प्रत्येक नशा करने वाला व्यक्ति मन के किसी न किसी कोण में यही भावना रखता है कि 'काशा' में इससे मुक्ति प्राप्त कर सकता। वह इसके लिये संकल्प भी करता है और प्रयास भी लेकिन उसकी संकल्प शक्ति अनेक दबावों के कारण क्षीण पड़ जाती है। मंत्र चिकित्सा सही अर्द्धों में किसी भी ऐसे व्यक्ति की संकल्प शक्ति में वृद्धि हो करती है। नशा करना स्वयं में एक प्रकार की दासता ही होता है और इसका अनुभव प्रत्येक नशा करने वाला उस समय प्रबलता से करता है जब उसे समय पर नशे का साधन नहीं मिल पाता।

दासत्व कोई भी मनुष्य नहीं चाहता और यही भावना जब नशा करने वाले व्यक्ति के मन में स्वयं स्थान बना लेती है अथवा किसी प्रकार से (यथा समोहन के माध्यम से) प्रविष्ट करा दी जाती है तो वह सहनता से इससे मुक्ति प्राप्त कर लेता है। मंत्र चिकित्सा ऐसी प्रत्येक स्थिति में सहायक होता है अर्थात् रोगी स्वयं चाहे तो इसका आश्रय लेकर रोगमुक्त हो सकता है और यदि वह ऐसा करने में असुधि करे तो उसके नाम का संकल्प लेकर भी इसे सम्पन्न किया जा सकता है। दोनों ही स्थितियों में समान प्रभाव होता है।

भारतीय समाज में इस प्रकार की स्थितियों का निराकरण देवोय शक्ति के माध्यम से करना कोई नवोन बात नहीं है। अल्पतर प्रत्यान काल से, प्राकृतिक उपचारों, जड़-बूटियों के साय-साय वे उपाय भी अस्तित्व में रहे हैं, जिन्हें सामान्य बोलचाल की भाषा में टोटका कहा जाता है तथा अनेक दु-साध्य स्थितियों में जिस तरह से इन टोटकों को अचूक सिद्ध होते देखा गया है, उससे इनकी प्रामाणिकता पर

विश्वास करना पड़ जाता है। गुरु गोरखनाथ द्वारा प्रारम्भ किये गये नाथ पंथ के योगी इस ज्ञान में सब से आगे रहे हैं। नाथ पंथ के ही किसी अलात योगी द्वारा प्रचलित एक टोटका, जो किसी भी प्रकार के व्यसन से मुक्ति पाने से सम्बन्धित है, पाठक स्वयं अनुभूत कर सकते हैं। शुक्रवार के दिन एक पीपल के पते को लेकर उसके ऊपर काला तिल व सिन्दूर स्मान मात्र में लेकर, तेल का दीपक जलाकर लगभग अधे घण्टे तक 'देवा हो देवा, पीरा हो पीरा, लंगुलिया' के नाथ अनन्दिता के बीच मंत्र जपकर, नशा करने वाले व्यक्ति के द्वारा प्रयोग किये जाने वाले किसी कपड़े (जैसे स्माल आदि) में बांध कर शुक्रवार की रात्रि में ही उस पीपल के पते को किसी निर्जन स्थान पर फेंक दिया जाये तो मनोनुकूल परिवर्तन होगे लग जाता है।

टोटकों या जिन्हें लघु प्रयोग कहना अधिक उचित रहेगा, का निश्चय ही अपना महत्व होता है किन्तु प्रायः इनमें एक न्यूनता होती है कि इनसे जीवन में केवल तात्कालिक समस्याएँ ही हल की जा सकती हैं। नहीं जीवन में निश्चय करके मनोनुकूल परिवर्तन लाना ही वहां साधना मार्ग का अवलम्बन लेना ही अधिक उचित रहता है। नशे से मुक्ति प्राप्त करने के सन्दर्भ में मंत्र चिकित्सा के अन्तर्गत जिस साधना विधि का वर्णन मिलता है उसे 'अनुकूलन प्रयोग' की संज्ञा दी गई है। इस प्रयोग की विशेषता है कि यदि कोई नशा करने वाला व्यक्ति इसे स्वयं सम्पन्न नहीं करता तो ऐसी स्थिति में कोई भी व्यक्ति (भले ही वह सम्बन्धी हो या न हो) इसे संकल्प लेकर सम्पन्न कर सकता है। इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिये मंत्र सिद्ध 'अनुकूलन चंत्र' (धारण करने वाला) व 'मूँगा माला' साधक के पास होनी आवश्यक है। किसी भी शुक्रवार या रविवार की रात्रि में इस धंत्र को किसी तापयात्र में रखकर मूँगा माला से निम्न मंत्र की एक माला जप करें -

॥ उर्म ज्वरौ सर्व सद्गीती प्राण अत्मते नमः ज्वरौ उर्म ॥  
Om Glaum Sarva Saakshetra Praana Atmaanu Namah  
Glaum Om

यह किया निरन्तर १३ दिन तक सम्पन्न करने के पश्चात माला को विसर्जित कर दें तथा धंत्र को या तो रोगी के गले में एक माह तक धारण कराएं अथवा उसके धंत्र के साथ बांध कर किसी सन्दूक में रख दें तथा एक माह के पश्चात विसर्जित कर दें। ऐसा करने से शनैः शनैः व्यक्ति की संकल्प शक्ति में वृद्धि होने लगती है और संकल्प शक्ति में वृद्धि ही किसी भी व्यसन से मुक्ति का आधार है।

साधना सामग्री पैकेट - 390/-

३५५  
करता  
आसनि

३५६  
उसका  
सकता

३५७  
३५८  
करना  
वित नि  
से अ

३५९  
३६०  
सार-  
यारो

३६१  
प्रकाश  
चाहि  
लाने

३६२  
जाता  
निम्न

३६३  
निन्द  
अथवा  
उतन

# गिरावधीर्म

४५७ शिष्य को चाहिए कि वह निरन्तर गुरु का ही ध्यान करे, गुरु का ही स्मरण करे और यदि वह ऐसा करता है, तो वह निश्चय ही ब्रह्ममय बनता है, इसमें कोई सन्केत नहीं है। वह शिष्य शरीर, पठ, ऋषादि की आसक्ति से विमुक्त हो जाता है।

४५८ शिष्य को केवल गुरु का ही चिन्तन मनन करना चाहिए, गुरु को हृदय में स्थापित करने के अलावा उसका कोई चिन्तन नहीं होना चाहिये, गुरु सेवा से बढ़कर उसके लिए अन्य कोई महत्वपूर्ण कार्य ही नहीं सकता।

४५९ गुरु चरणों में जो अपने को पूरी तरह से निर्मन कर लेता है, वही शिष्यता की पूर्णता है।

४६० शिष्य को नित्य एक नियमित समय पर नियमित संख्या में गुरु मंत्र का साधना ऋप में जप अवश्य करना चाहिये, यदि वह ऐसा करता है, तो उसके जन्म-जन्मातरीय दोषों और पापों का क्षय होता है तथा चित निर्मल हो जाता है, जिससे ज्ञान और सिद्धि की भी प्राप्ति हो पाती है। शिष्य को यथा सम्भव अधिक से अधिक जब भी समय मिले गुरु मंत्र का जप करते ही रहना चाहिए।

४६१ गुरु की कृपा से ही आत्मा में प्रकाश सम्भव है, यही देवों ने भी कहा है, यही समरत उपलिष्ठों का सार-निचोड़ है। शिष्य वही है, जो गुरु के बताये मार्ग पर चलकर उनसे ढीक्षा लाभ लेकर अपने जीवन में यारों पुरुषार्थीं - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करता है।

४६२ गुरु के पास बैठे रहने मात्र से ही साधक के हृदय में ज्ञान का प्रकाश होने लगता है, जिसको ब्रह्म प्रकाश कहा जाता है, जिससे मन के समस्त प्रकार के ध्वनि व चिन्ताएं स्वतः ही भाग जाती हैं। अतः शिष्य को चाहिए कि वह गुरु की निकटता के लिए निरन्तर प्रयत्न करे। जिस प्रकार एक दीपक से दूसरा दीपक पास लाने मात्र से ही जल जाता है, उसी प्रकार गुरु के सान्निध्य मात्र से ही शिष्य का कल्याण हो जाता है।

४६३ वह शिष्य तो ही नहीं सकता जो गुरु की निन्दा करे, ऐसा ढीक्षा प्राप्त शिष्य निश्चय ही नरक में जाता है, उसकी सारी तपस्या क्षीण हो जाती है, क्योंकि गुरु निन्दा शिष्य जीवन की सबसे घटिया और निम्नतम किया कही जाती है।

४६४ शिष्य को न तो गुरु निन्दा करनी चाहिए और न ही गुरु निन्दा सुननी चाहिये। यदि कोई गुरु की निन्दा कर रहा है, तो शिष्य को चाहिये कि या तो अपने वाङ्बल से अथवा सामर्थ्य से उसको परास्त कर दे, अथवा यदि वह ऐसा न कर सके तो उसे ऐसे लोगों की संगति छोड़ देनी चाहिये। गुरु निन्दा सुन लेना भी उतना ही दोषपूर्ण है, जितना कि गुरु निन्दा करना।

- श्रीगत्

# गुरु वाणी

अगर ज्ञान के पूजा को प्राप्त करना है, तो तुम्हें गुरु की एक-एक कसीटी को झेलने के लिये तैयार रहना पड़ेगा, गुरु प्रहार करे और उसे तुम्हारे सहन करना ही पड़ेगा। और फिर भी तुम्हें मुरक्कराना ही पड़ेगा, फिर भी अद्वा व्यक्त करनी ही पड़ेगी - मन से, हृदय से, बेतना से, प्राणों से।

गुरु को चाहिये कि वह तुम्हें पादपदम नहीं बनने वे, तुम चाहे कितनी आरजू करो, भिन्नत करो, बापलूसी करो, तुम चाहे कितने ही पांच पसारों पर यदि गुरु सतर्क है तो तुम पर प्रहार करे और देखे, तुम्हें टेस्ट करे, बार-बार करे।

अगर मेरे पास लाख रुपये हैं तो तुम्हें लखपति बनाने में मुझे कुछ सेकण्ड लगेंगे, सिर्फ पांच लाख रुपये तुम्हारी झोली में डाल देना है। मगर उसके पहले गुरु यह देख ले कि यह उसका दुरुपयोग तो नहीं करेगा।

अनायास जो चीज प्राप्त होती है, विना पूर्ण परिश्रम के जो चीज प्राप्त होती है, उसका मूल्य और महत्व शिष्य समझ नहीं सकता, उसको आंक नहीं सकता, गरुर आ जायेगा, और वह गरुर गुरु के लिये बहुत धातक सिद्ध हो जायेगा, इसलिये गुरु को चाहिये कि वह उस गरुर को समाप्त करे।

तुम मेरे सामने कितने ही गिरुगिडाओ, ढाथ जोड़ो, पर मैं जान लेता हूं कि तुम कहां पर खड़े हो, पूरा बैरीगीटर मेरे सामने लगा हुआ है। और जिस क्षण मुझे एहसास होगा कि अब इसमें समर्पण आ गया है, तुम्हें कुन्दन बना देने में मुझे कोई ज्यादा समय नहीं लगेगा, एक क्षण भर ही लगेगा।

शंकराचार्य ने बहुत पहले ही पादपदम को वह ज्ञान दे दिया, जबकि उसका अहम् तोड़ा ही नहीं था। और जब अहम् तोड़ा ही नहीं तो उसके मन में यह आ गया, कि गुड़को अब शंकराचार्य बन जाना चाहिये। और मैं शंकराचार्य तब बन सकता हूं जब इनकी हत्या कर दूँगा। इतना जघन्य अपराध इसलिये हुआ क्योंकि उसका अहम् गला नहीं, उसके खून में

बन्दगी बनी रही। यह शंकराचार्य की न्यूनता थी, यह शंकराचार्य की गलती थी, और उस गलती का परिणाम शंकराचार्य को मुमतना पड़ा।

**ॐ** इतिहास उठाकर देख लें, इतिहास में ये गलतियाँ हुई हैं, गुरुओं ने गलतियों की हैं, और शिष्यों ने उन गलतियों का लाभ उठाते हुए अपने आप को पतन के रास्ते पर लाला है। पर मैं वह गलती नहीं करूँगा जो बुद्ध ने कर दी, महावीर ने कर दी, जो शंकराचार्य ने कर दी।

**ॐ** इसलिये गुरु को चाहिये कि वह पादपदम् नहीं चैदा करे और शिष्य को चाहिये कि वह विवेकानन्द बने, उसके पास सेवा हो, श्रद्धा हो।

**ॐ** अगर तुम्हारी गुरु के प्रति श्रद्धा नहीं है तो व्यर्थ है, अगर तुम मैं सेवा करने की क्षमता नहीं है तब भी व्यर्थ है। और यदि श्रद्धा कर गी रहे हो, सेवा कर भी रहे हो तो तुम कोई एहसान नहीं कर रहे हो गुरु पर।

**ॐ** और यदि आप श्रद्धा देते हैं, सेवा करते हैं, तो गुरु उस ऋण को अपने ऊपर नहीं रख सकता, कोई भी गुरु शिष्य का ऋणी नहीं होना चाहता। परन्तु गुरु की यह विवशता होती है, कि शिष्य को तब तक वह पूर्णता नहीं दे सकता, जब तक कि उसका अहम पूरी तरह गल नहीं जाता। तब तक सेवा के उस ऋण को गुरु को धारण करना पड़ता है, न चाहते हुए भी शिष्य के ही कल्याण के लिये गुरु को ऋण होना पड़ता है।

**ॐ** परन्तु जिस क्षण अहम गज जाता है, शिष्य पूर्णता प्राप्त कर लेता है और गुरु गी ऋण से मुक्त हो जाता है।

# पाठकों के प्रश्न

गढ़वा, बिहार की कुमारी मंजू जो कि दसवीं कक्षा की परीक्षा देने जा रही हैं और उन्हें गुरुदेव पर इतना विश्वास है, कि वे गुरुदेव से अपने पत्र में प्रार्थना ही यह कर रही हैं, कि हे गुरुजी मैं इस बार बोर्ड की परीक्षा देने जा रही हूं, आप परीक्षा में ऐसे प्रश्न देना जिसके उन्नर मुझे याद हों और पास हो जाऊं। आप हमेशा हम पर नजर रखते हैं, हम पर आपनी नजर जस्तर रखते हैं। मैं गुरु मंत्र का जप निरन्तर करती हूं।

यह पत्र एक प्रार्थना ही है, जो कोई श्री साधक, शिष्य या भक्त अपने गुरु या इष्ट से करता है। परन्तु इस प्रार्थना में खोलापन है, निश्चलता है, पूर्ण विश्वास है कि बोर्ड की परीक्षा के प्रश्न भी यदि किसी के हाथ में हो सकते हैं, तो वे श्री उसी ईश्वर के हाथ में, उस विराट गुरुत्व शक्ति के ही हाथों में हो सकते हैं, किर प्रश्न पत्र बनाने वाले परीक्षक तो मात्र उसी ईश्वर के माध्यम से होते हैं। वस्तुतः इस मन्त्र का विश्वास, अपने इष्ट व गुरु में पूर्ण विश्वास तथा समर्पण जब साधक में उत्पन्न होता है तब साधनाओं में सफलता उसे अवश्य ही मिलती है।

बागबाहरा से अलका शर्मा लिखती हैं, कि हालांकि जल्मी वे गुरु दीक्षा तो नहीं ले सकती हैं, परन्तु पवित्रिका में दिये गुरु मंत्र के प्रभाव को अपने जीवन में अनुभव कर सकती हैं। पत्र में लिखा है, कि एक दिन रास्ते में गुरु मंत्र का जप स्वतः प्रारम्भ हो गया, थोड़ी देर बाद अचानक जिस गाड़ी में सफर कर रही थीं, उत्तरसे समय उससे गिर पड़ी परन्तु गाड़ी का पहिया उनके ऊपर आते आते बाल बाल बच गया और बगल से निकल गया। गुरु मंत्र से भयंकर दुर्घटना का योग सामान्य रूप में टल गया।

मिजापुर से एक साधक ने अपना नाम व पता न लिखते हुए पत्र में लिखा है, कि अगर दीक्षा लेने के बाद भी सामग्री लेकर साधना करें और सफलता न मिले तो बहुत बुरा लगता है। समस्या का यदि दीक्षा द्वारा तुरन्त हल न मिले तो दीक्षा का अर्थ ही क्या रह गया? यदि पत्र में कुछ असम्भव लिख दिया हो तो क्षमा चाहता हूं, परन्तु इस स्थिति में साधक क्या करें, किसके चरणों में जाकर रोवें?

नि. सन्देश आपका चिन्तन होना स्वामाविक ही है, परन्तु किर वही बात कहनी पड़ेगी कि दीक्षा, साधना आदि एक धीमी परन्तु सतत प्रक्रिया है, जिसका प्रभाव होता अवश्य है परन्तु शनैः शनैः। इसमें चमत्कार जैसी कोई घटना एकदम से नहीं हो जाती। किर यदि यदि साधक अपना आन्मा विश्लेषण करे, तो वह स्वयं ही समझ सकता है, कि साधना सम्पन्न करने के उपरान्त उसके स्वयं के चित्र में, उसकी आदतों में, विचारों में परिवर्तन हुआ ही है। जिस उद्देश्य के लिए उसने साधना सम्पन्न की है, उसमें भी यदि पूर्ण सफलता नहीं तो आंशिक रूप से सफलता मिली ही है। साधक के लिए धैर्य एक बहुत बड़ा एवं आवश्यक आश्रयण है, हताश हो जाना स्वामाविक है, परन्तु साधकोंचित लक्षण यही है कि पुनः दुरुपये उत्साह से दुकारा प्रयत्न करे, तिकारा प्रयत्न करे। विवेकानन्द जैसे महापुरुष को नीं बार साधना करने के बाद भी काली के छाया रूप में भी दर्शन तक प्राप्त न हो सके थे, परन्तु पुनः पुनः प्रयत्न के कारण ही वे अपने अभीष्ट को प्राप्त कर सके।

पूर्व जन्म के संस्कार और कर्मों के आधार पर ही एक साधक को जल्मी वही दीक्षाया साधना तुरुत फलीभूत हो जाती है, तो दूसरे लोकुच महीनों या कुछ वर्ष बाद, गुरु की ओर से किये जाये जाकिपात में कोई ऐत भाव नहीं होता। वस्त्र यदि गन्धा हो जाया हो, तो उसे पुनः धोना ही पड़ता है और आवश्यकता होने पर कभी कभी एक ही दीक्षा को एक से अधिक बार भी लेना पड़ता है।

श्री अमरचन्द्र जी लिखते हैं, कि ४ वर्ष से मेरी पत्नी मायके से लौटकर बापस नहीं आ रही है। इसके लिये कोई लघु साधना पत्रिका में प्रकाशित करें।

आज के युग में साधनाओं के माध्यम से हजारों लोग अपने आध्यात्मिक एवं भौतिक लक्ष्यों की प्राप्ति कर रहे हैं, इस बात का जीता जागता उत्तरण है लाखों-लाखों शिष्यों का परिवार जिसे सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी ने अंतराष्ट्रीय सिद्धांतम् साधक परिवार के नाम से पुकारा है।

पवित्रिका का प्रयास रहता है, कि लघु और तीव्र साधनाएं प्रकाशित की जाएं जिन्हें सामान्य व्यक्ति भी सम्पन्न कर चरित लाभ प्राप्त कर सके, परन्तु डॉ. प्रकार की समस्या या विषय वरन्तु पर साधना प्रकाशित करना, जैसा कि उपरोक्त सन्दर्भ है, पवित्रिका के लघु कलेवर के अन्तर्गत सहज नहीं है। यदि पवित्रिका में किसी प्रकार की साधना उपलब्ध नहीं है, तो अपनी सम्भव्या को जोधपुर अथवा दिल्ली गुरुधाम पर फौन द्वारा सम्पर्क कर कह सकते हैं। फौन द्वारा अथवा व्यक्तिगत रूप से शिविरों में भाग लेकर अथवा गुरुधाम उपस्थित होकर आप दिशा निर्देश प्राप्त कर सकते हैं।

# साधक साथी है

सन् 2001 से भारत पुक शक्ति के स्वयं में विश्व के समक्ष उभरेगा

पूज्यपाद सद्गुरुदेव निखिल के सिद्धांश्रम प्रस्थान के पश्चात सहस्रा आभास होने लगा था कि अध्यात्म की अविरल धारा में उत्तराव आ जायेगा और हम बिना मार्गदर्शन के रह जायेंगे। यह जानते हुए भी कि सद्गुरुदेव का सद्गुरु आशीर्वाद शिष्यों को सिद्धांश्रम से प्राप्त होता रहेगा, हवस में व्याकुलता और छटपटाहट बनी ही थी। परन्तु स्वप्न में कई बार सद्गुरुदेव के दर्शन हुए, उनका आशीर्वाद मिला और कई प्रकार से सद्गुरुदेव ने मेरे मन में यह धारणा स्थापी कर दी कि गुरु विमृति के रूप में ही उनके गुरुत्व कार्यों का क्रम गतिशील रहेगा।

एक दिन किसी राष्ट्रीय समस्या के बारे में सोचते-सोचते मैं सो गया तो पूज्यपाद सद्गुरुदेव निखिल के संन्यासी वेश में दर्शन हुए, वे कहने लगे - "भारत सन् २००१ से विश्व में एक शक्ति के स्वयं में उभरेगा एवं सन् २००३ के पश्चात भारत का दबदबा पूरे विश्व पर हो जायेगा।"

फिर मुझे देखकर बोलने लगे - "पर क्या तू यह विन देख लकेगा?"

यह सुनकर मैं ध्वना गया, फिर वे बोले - "बहुत कष्टमय जीवन बीता है तेरा, चल सब पूजा या शिव पूजा कर ले, बाद रख तेरे लिये शिव पूजा आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है।" इसके बाद मैं पवित्रा में बर्णित रुद्र साधना सम्पन्न की तथा महामृत्युजय वीक्षा भी प्राप्त की।

आगे जैसा सद्गुरुदेव ने स्वप्नों में पहले संकेत दिया था कि उनके गुरुत्व कार्य गुरु विमृति के रूप में चलेंगे, उसी की पुष्टि हुई। वीक्षा के उपरान्त स्वप्न में मुझे गुरुदेव श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली जी ने दर्शन देते हुए कहा - "कभी कभी मुझे भी कुकुर का तिलक लगा दिया करा।" एक दिन स्वप्न में गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी के दर्शन हुए, बोले - "अंगूजी अच्छी तरह सीख ले।" मेरी इच्छा है, कि सद्गुरुदेव और माता जी के चित्र के साथ ही अपने पूजा स्थान में तीनों गुरुदेव के चित्र भी स्थापित करें।

- कौसल साह, चम्पावट

**दीक्षा में गुरु क्या देते हैं, ये तो वे ही जानते हैं**

सुन्दरनगर शिविर में गुरुदेव श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली जी से वीक्षा प्राप्त करने के बाद हम बस से बापस घर लौट रहे थे, कि बस में बैठे-बैठे एकदम से मैं अपनी सीट पर से उठकर आगे बाली सीट पर चली गई और मन में गुरु चिन्तन अपने आप ही प्रारम्भ हो गया। मैं आगे बाली सीट पर क्यों चली गई, इसका कोई स्पष्ट कारण नहीं है। दो मिनट बाद ही एक औरत के चिल्लाने की आवाज आई, देखा तो वह बुरी तरह धायत हो चुकी थी। हमारी बस को पीछे से आते एक ट्रक ने बुरी तरह टक्कर मार दी थी। उस औरत को अस्पताल ले जाया गया, मैं आश्चर्यचित था कि वह औरत उसी सीट पर बैठी थी, जिसे छोड़ कर दी गयी थी। वीक्षा के प्रभाव को मैं अनुभव कर रही थी, किस स्थप गुरुदेव शिष्यों को क्या दे देते हैं, यह तो वे ही जानते हैं।

- सुनीता भरत, प्रेम नगर, पठानकोट (पंजाब)

**दक्षिणा की भी व्यवस्था में कर्त्ता**

पठना शिविर से पत्नी सहित 'गुरु दीक्षा' प्राप्त कर घर लौट आये। गुरुदेव से 'नवार्ण दीक्षा' प्राप्त करने की भी तीव्र इच्छा थी, परन्तु दक्षिणा की व्यवस्था न हो पाने के कारण ने नहीं सका था। यही सोचते सोचते एक दिन मैं सो गया तो रात्रि में स्वप्न आया कि मूर्य गुरुदेव मधुर मुस्कान लिये धोती कुत्ते में घर में ही आकर खड़े हो गये हैं। हम दोनों पति पत्नी ने चरणोदक लिया, तब गुरुदेव बोले - 'तुम लोग उपास क्यां हो? हम तुम्हारा अभीष्ट तुम्हें देने आये हैं, मुझसे मांगो?'

मैंने स्कृचाते हुए कहा - 'गुरुदेव मैं अभी दक्षिणा की व्यवस्था नहीं कर सका हूं, इसलिये कैसे अभिलाषा प्रकट करूँ।'

गुरुदेव बोले - "जब तुमने सब भार ही मुझ पर छोड़ दिया है, तो दक्षिणा की चिन्ता क्यों कर रहे हो? तेरे लिये दक्षिणा की व्यवस्था भी मैं ही करूँगा। किन्तु तुम लोग

वो भी मुझसे चाहते हों, वह मांगो अवश्य।"

गुरुदेव के इस स्नेह वचन से डानन्दातिरेक में हमने कहा— "प्रभु! हम दोनों पति-पत्नी भगवती दुर्गा की उपासना करना चाहते हैं, अतः नवार्ण दीक्षा द्वाम दोनों को प्रदान करें।"

इसके बाद शूद्रदेव ने द्वम दोनों पति-पत्नी के माध्ये पर हाथ रखते हुए कहा— "जो द्वम तुम दोनों को तत्त्वार्थी करा दे तो उम्रे पक दीक्षा द्वाम से तरफ से तुम्हें आशीर्वाद स्वरूप भीषण दे रहा हूँ। यह नाभिदर्शना अभ्यर्ता दीक्षा है, जो अवश्य ही लिख करो। ऐं औं नाभिदर्शना अभ्यर्ता आशीर्वाद ही है।" इसके बाद शूद्रदेव अन्तर्घटना हो गयी।

— बन्दरमा दुध, कटरा, हाजीपुर, वैशाली (बिहार)

### कुलदेवी का साक्षात् दर्शन

मेरे पैदूक गांव से कुछ दूर निर्जन स्थान पर एक ह्यारे कुल की देवी मैरवी भवानी का मन्दिर है, परन्तु लोगों का कहना है, कि वहाँ ब्रह्मराजों और अधोगी साधकों का निवास रहता है। जो लोग उधर जाने आनंदानि गये थीं, उनको बड़े



कष्ट उठाने पड़े हैं कि यह उसको पृथु सक्त ही गई है। घरवालों ने मुझे भी उस मन्दिर में कभी न जाने की सलाह दी थी, परन्तु नब मैं इस पैदूक गांव में आया, तो अपने आप को इस रहस्यमय मन्दिर के दर्शन करने से रोक नहीं सका। मैंने पूज्यपाद सद्गुरुदेव से दीक्षा ले रखी थी, और मुझे जाह था, कि फूल्यपाद सद्गुरुदेव ने आक्षान भूतन व शिव स्वरूप हैं, और जब उनका वरद सिर पर हो तो शिव को भय कैसा? ऐसा तो नहीं है, अकेले भट्टकों जहाँ मन होगा, क्योंकि गुरुदेव हर पल साझा है, ऐसा सोबत कर सके जब भूमि साहस का संचार हो भाया। मन्दिर का दर्शन कर मैं बापस बम्बई लौट आया और मौं मे बात बताई, तो मौं धरवा गई कि मन्दिर में नहीं जाना चाहिये था। खैर बात समाप्त हो गई।

आज मैं नवरात्रि पीं प्रारम्भ हो रही थी। मेरी मां गुरु यित्र के संक्ष पैवद्य के स्त्रा में एक कटोरी दूध निया रखती थी। निय की तरह मैं भी गुरु ध्यान कर रहा था, कि इसमें किसी ने जो से मेरी छाती पर नोरों से लात मारी, मेरी दद में दीख निकल गई, और आख खोल कर देखा तो कोई नहीं था, साथना कक्ष मीं भन्नर से बढ़ था। उस रात मुझे बूखार चढ़ गया और कटोरी में रखा दूध अपने आप नाथव हो गया, ऐसा

पहले क्रमों नहीं हुआ था। घर के सभी लोग उससे दर गये थे। तूसरे दिन फिर किसाने मुझे थप्पड़ मार दिया और कटोरी का दूध पुनः नाथव हो गया।

तीसरे दिन मैं नोच रक्षा था, कि यहाँ गुरुदेव का वित्र स्थापित है, यहाँ पूर-प्रेत तो आ नहीं सकते, तो फिर यह क्या बला है? तभी एक सुन्दर श्री प्रगट दृढ़, उसने पीली रात्री पहली और क्रोधपूर्ण दृष्टि से मुझे देखकर बोली— "मुझे मुर्ग या बकरे की बलि है?" मैंने पी पूरे तेवर में निर्धारित नवाद दिया— "माली तू कौन हो?" इसने मैं उसने अपना दाहिना हाथ मेरी तरफ किया, उसमें से एक प्रकाश की विलय सी निकलकर मैंने मुख में चली गई और देखते ही देखते मेरी जिहवा की लिल हो गई। मैंने ठर के गरे मन ही मा "अब गुरुदेव का नरा लगाव, तो उसका कोष एकत्र से शान्त हो गया और मेरे पास आकर मंद-मंद मुस्कुरासे लगी। उसने मुझे आशोवाद दिया और उन्नतर्धान हो गई अनन्तु जाने ऐसे पहले कटोरी का बोडा सा दृथ गुरुदेव सद्गुरुदेव जो के विष में बरणों पर चढ़ा दिया और जाकी मुझे छिनाया और कहा— "तू महान् यमर्थ गुरु का शिष्य है, इसलिये यो माल से मैंने किसी को नहीं दर्शन दिये, यह तुम्हें आज वर्षन दिये, मैं ही तेरी कुलदेवी देखकी भवानी हूँ।" मेरी आंखों से आसू निकल पड़े।

— विजय गोपाल भारती, चत्तिर, मुम्बई

### लक्ष्मी ने मुझ पर स्वर्ण वर्षा की

बिलासपुर के साधना शिविर में साधना सब की समाप्ति होने पर मैं शृंगी मैं सो गया, प्रातः जब सो कर उठा तो बिरहाने एक 'श्रीपत्र' रखा भिला। भर सीटकर आया तो दीव जट्टांच के रूप में गुरुदेव की उपस्थिति बराबर अनुभव होती रही। ४.३.१५३६ को घर आकर जब मैं अवकरी महालक्ष्मी साधना सम्पत्ति कर रहा था, तो आकाश में मुझे सभी देवी-देवताओं का दर्शन प्राप्त हुआ।

इसके बाद दिनांक ७.५.१५ को मैंने रशनराजेश्वरी साधना प्रारम्भ की, एक दिन मंत्र जप के समय एक लिङ्ग कु आज्ञा और गुरु भ्रातान के समीप साधा घटा। तक अविचल रूप से बैठा रहा, फिर चला गया। इसके बाद मैंने रशनराजेश्वरी साधना सम्पत्ति की, तो साधना काल में एक रात मधी विशालकाय रूप में, बालों की फैलावे देवी मां के दर्शन हुए, तेरे ऊपर स्त्रीं वर्षी लसनी हुई उन्नतर्धान हो गई। गुरुदेव के आशीर्वाद में मेरा काफी पुराना पेट दर्द भी समाप्त हो गया है।

— शुभ नाशयण सोनवने, राज.आयुर्वेदिक अस्पताल,  
सुरुषी, राजनांदगांव-४५१६६१ (म.ग.)

व्य  
श्व  
ही  
करे  
वार

जो अप  
मनुष्य  
नीचे उ  
भास्तु  
क्या

जनकी  
दृष्टान  
धारें प  
किडिय  
विशिन  
है, वह  
सेकेत  
२४ ध  
तो आ  
यत से

परन्तु  
हिमी  
प्रभु बु

व्यक्तित्व का आमूल चूल परिवर्तन  
श्वास प्रश्वास प्रक्रिया को नियंत्रित कर  
ही सम्भव है, जाग्रत  
करें कुण्डलिनी के इस  
वायु तत्व प्रधान

कुण्डलिनी साधना - ४

# आनाहत चक्र

## भूत, अविष्ट्य और वर्दमान का केंद्र



**M**नुष्ठ ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है — ऐसा यदि आज का मनुष्य कह रहा है, तो वह वह नहीं अपितु उसके अन्दर का अहंकार बोल रहा है, जो अपने आनंद की महिमा सुनने में विश्वास करता है। जो मनुष्य है वर्तमान का, वह कई दृष्टियों में पशु-पक्षियों से भी नीचे उत्तर ढुका है। पशु-पक्षियों के पास कई ऐसी अद्भुत अमताएँ हैं जो मनुष्य के पास नहीं हैं।

### क्या मनुष्य सब जीवों में अधियोग्य है?

पशु-पक्षी मनुष्य से अधिक संवेदनशील होते हैं, उनको अनुभूतियां गहरी होती हैं, अधिक चेतन्य होते हैं वे। नापान में एक चिड़िया होती है जो भूकम्प के आने से चौबीस घण्टे पहले ही गांव छोड़ कर कन्नवत चली जाती है, अगर वह चिड़िया दिखाई नहीं पढ़ रही है, तो इसका मतलब कि पूरकम्प निश्चित रूप से आने वाला है। मनुष्य जिस यंत्र पर इतरा रहा है, वह प्रामाणिक तौर पर मात्र छ, घण्टे पूर्व ही भूकम्प का संकेत दे पाता है। परन्तु उस पूरकम्प की तरंगों को वह चिड़िया २४ घण्टे पूर्व ही अनुग्रह कर लेती है, वह चिड़िया मनुष्य से तो अधिक जैतन्य है ही, मनुष्य के बुद्धि क्षेत्र से बगे उस यंत्र से भी अधिक जैतन्य है।

पूर्व में मनुष्य के सर्वश्रेष्ठ होने की जात कही गई है, परन्तु वह सर्वश्रेष्ठ तभी हो सकता है, जब वह अपने अन्दर छिपी विश्वास सम्भावनाओं को उत्तरांश कर सके। सामान्यतः एक बुद्धिमती वैज्ञानिक भी अपनी मस्तिष्क क्षमता का यात्र

२ प्रतिशत ही इम्नेमाल कर पाता है।

### पशु-पक्षियों की विलक्षण प्राकृतिक क्षमताएँ

यदि कुण्डलिनी चक्रों में निहित इन विश्वास सम्भावनाओं को साधना द्वारा सम्भार किया जा सके, तो मनुष्य पशु-पक्षियों की कई अद्भुत क्षमताओं को भी प्राप्त कर सकता है — पक्षियों का शर्पों को हल्का कर जाकर मैं विचरण करना, थिसों का नल में तैरना, मछलियों का जल के भीतर जीवित रहना, चीटियों में अनुशासनबद्धता और अद्वितीय प्रदीप्ति सम्पन्न होना, तितलियों का विलक्षण घृण शक्ति सम्पन्न होना (पांच किलोमीटर दूर से ही ऊँचे फूलों की गंध मिल जाती है), चील का तीव्र दूर दृष्टि सम्पन्न होना, सर्प का विलक्षण स्मृति शक्ति सम्पन्न होना — ये सभी बातें प्राप्त करती हैं, कि पशुओं में भी कई ऐसी इमताएँ होती हैं, जो मनुष्यों में नहीं होती। मनुष्य में भी पक्षियों की पांच उड़ने की क्षमता (नधिया सिद्धि या काकाश गमन), दूर दृष्टि, दूर स्वरूप शक्ति, पूर्वाभास आदि शक्तियां आ सकती हैं यदि कुण्डलिनी चक्र के दर्शनों को जागत कर लिया जाए।

वसिष्ठी ध्रुव इन हिमालय के वह ऐसे पर्वतीय क्षेत्र हैं, जहां आठ-आठ महीने तक चर्के पिघलती ही नहीं, सारे बनस्पति भी उक जाते हैं, तब वे पशु-मालु बिना कुछ भोजन किये भी जांचित रहते हैं, इतनी कड़की की ऊँच में भी उन्हें कोइ रोग नहीं होता, जे अनियंत्र रहते हैं — यहि कहा जाए तो ईश्वर की ओर से उन्हें हाथी काली विश्वा जन्म से ही प्राप्त है

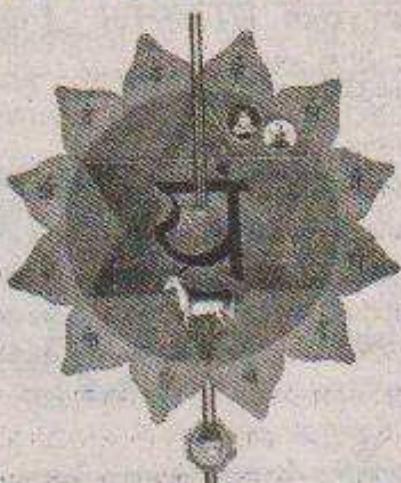
तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है। परन्तु विना कुछ खाए-पिए लम्बे समय तक रहने, सर्दी-गर्मी को हर तरह से डोलने की अनन्ता प्राप्त करने के लिये मनुष्य को प्रवास करना पड़ता है, हाथों काढ़ी विद्या सिद्ध करनी पड़ती है या कुण्डलिनी चक्रों को जागत करना पड़ता है।

मनुष्य अपने बुद्धि कोशल से चाहे जितने यंत्र बना ले, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण निर्मित कर ले, परन्तु वह इन उपकरणों के माध्यम से और भी अधिक

परतन्त्र होता गया है, वह स्वतंत्र नहीं हुआ। इन उपकरणों पर और भी अधिक निर्भर हो गया है। जरा सी भी सर्दी-गर्मी हुई, भूल-भूआ हुआ, कि मनुष्य रोगग्रस्त हो जाता है। वह जितना अधिक अपनी बुद्धि से उपजे हन उपकरणों पर निर्भर हुआ है, उतना ही अन्दर से कमजोर हो जाया है। वह शक्तिशाली कुण्डलिनी शक्ति के द्वारा ही हो सकता है, क्योंकि कुण्डलिनी उसकी स्वयं की शक्ति होती है। उसके अन्दर ही हॉटर कूलर सब होता है, फिर आहर के प.सी. की आवश्यकता ही क्या है। दूरदर्शन और दूरसंचयन सब अन्दर ही विद्यमान है, फिर टेलीफोन और सेटेलाइट तो तुच्छ पढ़ जाते हैं मनुष्य में निहित इन शक्तियों के सामने। परन्तु जब तक इन शक्तियों को मनुष्य जगा नहीं देता तब तक वह पशु-पक्षियों की तुलना में अपनी सर्वश्रेष्ठता को घोषित नहीं कर सकता।

## बाद, घड़ियाल और वाय्य ध्वनि सुनाई देगा ग्राम्भ हो जाता है

कुण्डलिनी साधन के द्वारान साधक को ऐसे कम्पन-झटके महसूस होते हैं, जैसे कि उसे पहले कभी भी अनुभव नहीं हुए होंगे। कई बार प्रत्यक्ष अथवा ध्यानावस्था में ऐसे रंग दिखाई देने लगते हैं, जैसे कभी देखे ही नहीं,ऐसी ध्वनियां सुनाई देती हैं, जो लौकिक जगत के किसी वाय्य यंत्र की लगती ही नहीं। इसी को योगी लोग 'नाव' कहते हैं। वे कहते हैं, अमृत बरस रहा है, नगाड़ी बज रहे हैं, घड़ियाल-दोल बज रहे हैं, मस्ती में झूस लो, नाच लो — तो सामान्य व्यक्ति समझ नहीं पाता, कि कहां नगाड़ी बज रहे हैं? ये ध्वनियां, दृश्य,



अनाहत अक्र

जमृत वर्षण की किया तो योगी के अन्दर ही घट रही है, क्योंकि उसकी कुण्डलिनी जेतना के स्तर तक पहुंच चुकी है।

कुण्डलिनी से बड़ी ही सूक्ष्मा अनुभूतियों का जगत जुड़ा होता है। और जब वे अनुभूतियों होने लगती हैं, तो आम लोगों को कुण्डलिनी साधक एक पागल की भाँति ही नजर आने लगता है। सब लोगों के बीच बढ़ते-बढ़ते कभी-कभी अपने आप में ही अकारण मुस्कुराने लगता है, 'कभी-कभी जब सब हँस रहे

होते हैं, तो वह मर्मीर हो जाता है — और हम उसे पागल समझ लेते हैं। परन्तु वह रोने या हँसने लगता है क्योंकि उसे कुछ दिखाई दे रहा है, कुछ ऐसा दिखाई दे रहा है, जो हम नहीं देख पा रहे हैं, जिसकी अनुभूति हमें नहीं हो पा रही है। पागल नहीं वह एक चैतन्य साधक है।

## श्विष्य की घटबा पहले ही स्पष्ट हो जाती है

दो व्यक्ति सङ्क पर पैदल जा रहे हैं, एक कुण्डलिनी साधक है, वह कहता है, कि अभी एक घण्टे बाब इसी रास्ते पर एक बैलगाड़ी आयेगी, जिसमें तीन आदमी होंगे। तो दूसरा कहेगा — 'मैं नहीं मान सकता, क्या आप कोई भविष्यवक्ता हैं? कहीं कोई बैलगाड़ी नहीं है।' एक घण्टा बीतता है, और सचमुच एक बैलगाड़ी आती दिखाई देती है, तो उस व्यक्ति को मानना पड़ता है, कि चमत्कार जैसी कुछ चीज है, वह चरण छूने लगता है उसके। परन्तु चमत्कार जैसी कोई चीज नहीं है इसमें। यदि व्यक्ति सङ्क पर होगा तो कुछ दूर तक ही देख सकता है, पैदल के ऊपर चढ़कर देखेगा तो उसे और दूर तक दिखाई दे सकता है। हवाई जहाज की ऊंचाई पर जाकर देखेगा तो बहुत दूर-दूर तक के दृश्य देख सकता है। हवाई जहाज की ऊंचाई पर पहुंच कर देखे तो तीन किलोमीटर दूर एक बैलगाड़ी दिख जायेगी। परन्तु वही सङ्क पर खड़े होकर देखे तो नहीं दिखेगा, क्योंकि रास्ते में पैदल होंगे, मकान होंगे, अवरोध होंगे। वही बैलगाड़ी एक घण्टे में तीन कि.मी. की दूरी तय कर एक घण्टे में आ पहुंचती है। तो इसमें चमत्कार नहीं है। उसने एक घण्टे बाब वाली घटना को पहले से ही देख

लिया क  
भविष्यव  
होना प्रा  
तक पहुं  
जाता है।  
**श्वास**

की ओर  
चलती।  
बिलकुल  
हुए श्वा  
उथली ग  
गहरी हो  
अलग  
गति हो  
दूस होन  
होंगे तो

और व्य  
जाता है  
यदि म  
तो अप  
और ह  
स्वयं ल

होने प  
है, श्वा  
उनकी  
हुए ध्य  
पेट ऊ  
साथ उ  
तत्र के  
होता है  
होती ह  
चलत  
मणिपु  
जाती  
फलस

लिया क्योंकि वह ऊचाई से देख रहा होता है। इसी को मध्यविष्ववाणी कह सकते हैं। और जब कुण्डलिनी के चक्र जाग्रत होना प्रारम्भ होते हैं, तो व्यक्ति चेतना के ऊचे से ऊचे स्तर तक पहुंचने लगता है, इसलिये उसे वह सब भी दिखाई दे जाता है, जो नीचे स्तर पर खड़ा व्यक्ति देखने में असमर्थ है।

### श्वास प्रक्रिया से आंतरिक परिवर्तन

**प्रायः** मनुष्य का ध्यान अपनी श्वास-प्रश्वास प्रक्रिया को ओर नहीं जाता, परन्तु जब तक जीवन है यह प्रक्रिया चलती ही रहती है। रात में जो श्वास की गति होती है, वह बिल्कुल धीमी, सहज होती है। वह लोगों के बीच कार्य करते हुए श्वास की गति अलग होती है — छोटी श्वास होती है, उथली श्वास होती है। शान्त चित्त आराम से होते हैं, तो श्वास गहरी होती है, लम्बी होती है। क्रोध में होने तो श्वास की एक अलग गति व लय होगी, कामातुर होने तो श्वास की अलग गति होगी, मद में होने अहंकार ग्रस्त होने तो अलग श्वास का ढंग होगा, मौन होने तो अलग ढंग होगा, प्रसन्न होने या दुःखी होने तो भी श्वास की लय पृथक्-पृथक् होती है।

इसलिये हमारे मन, मस्तिष्क, हृदय, विचार, भ्राव और व्यक्तित्व का पूरा निरूपण श्वास-प्रश्वास की धून से हो जाता है। दूसरी ओर से देखें तो यह कहा जा सकता है, कि यदि मनुष्य अपनी श्वास-प्रश्वास प्रक्रिया को नियंत्रित कर ले तो अपने व्यक्तित्व पर, अपने मन पर, अपनी विचार श्रृंखला और हृदय के आवेगों पर नियंत्रण प्राप्त कर सकता है, वही स्वयं की स्वयं पर विजय होती है।

अनाहत चक्र वायु तत्त्व प्रधान चक्र है, इसके जाग्रत होने पर श्वास-प्रश्वास प्रक्रिया पर नियंत्रण स्थापित हो जाता है, श्वास उथली न होकर नामि से आती है। जो योगी होते हैं, उनकी श्वास नामि से उठती है। यदि किसी बच्चे को सोते हुए ध्यान से देखा होगा तो जैसे ही वह श्वास भरता है, उसका पेट ऊपर उठ जाता है, और उसकी प्रत्येक श्वास-प्रश्वास के साथ उसकी नामि गतिशील रहती है। यह शरीरस्य कुण्डलिनी तंत्र की चैतन्यता का परिचायक है। परन्तु जब यात्रा बढ़ा होता है, तो अभ्यास न रहने के कारण उसकी श्वास उथली होती जाती है, और फिर श्वास तो चलती रहती है, जीवन तो चलता रहता है, परन्तु नामि की गतिशीलता नहीं रहती। मणिपुर चक्र जाग्रत होने के बावजूद तुरन्त नामि पुनः चैतन्य हो जाती है, श्वास-प्रश्वास सन्तुलित हो जाती है, जिसके फलस्वरूप व्यक्तित्व का पूर्ण रूपांतरण सम्भव होता है।

### अनाहत चक्र की उपलब्धियाँ

मणिपुर चक्र से आगे यात्रा करते हुए कुण्डलिनी शक्ति अनाहत चक्र में सुख शक्तियों पर प्रहार कर उन्हें जाग्रत करती है। इस शक्ति के पूर्ण स्पन्दन प्राप्त होने पर व्यक्ति को भूत, मध्यविष्व, वर्तमान सब स्पष्ट हो जाता है। उसे यह क्षमता प्राप्त हो जाती है, कि पूर्वकाल में घटित प्रत्येक घटना को — चाहे वह महाभारत का युद्ध हो या शकुन्तला-दुष्यन्त का प्रेम विवाह — इन सभी क्रियाओं को देख सकता है। जो घटनाएं अभी घटित नहीं हुई हैं, उनका अंकन भी तो काल के गर्भ में होता ही है। इस प्रकार स्पष्ट है कि इस चक्र के जागरण द्वारा ही व्यक्ति की आत्मा का परस्परहा से प्रथम परिचय होता है, जिसके फलस्वरूप वह त्रिकालदर्शिता प्राप्त करता है।

### अनाहत चक्र स्वरूप

हृदय क्षेत्र में अवस्थित इस अनाहत चक्र के मिन्दूरी वर्ण के बारह दल हैं। यह 'वायु तत्त्व' प्रधान चक्र है, और इसके जाग्रत होने पर विद्यु नाद का शब्दण होता है, हृदय क्षेत्र पर विना किसी चोट (आहत) के शब्द का गुनरण होता है। इसी से इसे अनाहत कहा गया है। इस छादश दल कमल के मध्य में धुएं वाले बाल के समान ऐ वाला बटकोणीय वायु क्षेत्र है। इसके मध्य में श्याम वर्णीय बबन बीज 'यं' मृग पर आसीन है। 'यं' बीज के ऊन्दर दद्या का सामर 'हृस' विराजमान है, जो कि अन्तरात्मा रूपी ईश्वर का प्रतीक है। वायु बीज के मध्य में यह हैंस — 'हं' + 'सः' अर्थात् श्वास-प्रश्वास के शब्द गुजरण का भी प्रतीक है। बटकोण वायु क्षेत्र के ऊपर चक्र की पीतवर्णी चतुर्भुजी देवी काकिणी देवी हैं। वह अपने हाथों में पाश और कपाल धारण किये हैं। बाकी दो हाथों से अभय मुद्रा प्रदर्शित हो रही है। इस प्रकार के स्वरूप का ध्यान कुण्डलिनी साधक के लिये आवश्यक होता है।

**कुण्डलिनी जागरण साधना और चक्र**  
जागरण साधना दो पृथक्-पृथक् साधनाएं हैं। पहली साधना में जहां सुख कुण्डलिनी को नियंत्रित किया जाता है, वहीं चक्र जागरण में कुण्डलिनी पथ में आने वाले विभिन्न चक्रों और उनमें विद्वित शक्तियों को जाग्रत किया जाता है। इस प्रकार कुण्डलिनी जागरण साधना से भी महत्वपूर्ण कुण्डलिनी चक्र जागरण साधना होती है, जो कि सात चरणों में सम्पूर्ण की जाती है।

**अनाहत चक्र** – जब अनाहत चक्र सम्बन्धी मंत्र नष्ट सम्भव हो जाये, तो उसके बावर नित्य उपरोक्त प्रकार से हृदय क्षेत्र पर अनाहत स्वरूप का ध्यान करें। ये बीज और मिन्दूर वर्ण प्रादश कमल तथा चक्र के देवी देवताओं का अनुभव करें। जेत्र बन्द कर मात्र पांच मिनट भी इस प्रकार का ध्यान करने से जागरण किया में लगती जाती है। ध्यान के बाद शरीर के दस मिनट तक शवधारण में लेट कर बिश्राम दें।

### अनाहत चक्र के दलों में विहित शक्तियाँ

**कं** – इस दल के जागरण से 'निर्विकल्प समाधि' की शलक प्रारम्भ हो जाती है।

**खं** – इस दल के जागरण से आन्मा 'स्वः' की अवस्था से निकलकर 'मह' में बहुच जाती है और व्यक्ति को ब्रह्म की निकटता अनुभव होने लगती है।

**गं** – किसी भी व्यक्ति का घूतकाल दिख जाता है।

**घं** – हजारों मोल दूर वर्तमान में धृति हो रही घटनाओं को सूक्ष्मता से देखना इस दल की जाग्रत्ति से होता है।

**ङं** – भविष्य का ज्ञान द्वारा दल से होता है।

**चं** – यदि 'काल ज्ञान' न हो, तो जीवन में मिला कोई सुनहरा अवसर भी व्यक्ति चूक जाता है। काल ज्ञान अनाहत के छठे दल के जाग्रत्त होने से प्राप्त होता है।

**हं** – इस दल की शक्ति जाग्रत्त होने पर व्यक्ति किसी के मस्तिष्क में व्याप्ति विचारों को जान सकता है और अपने अनुसार परिवर्तन कर सकता है। यही टेलोपेशी होती है।

**जं** – 'परकाव्या प्रवेश' की सञ्चावना इसी दल से धृति होती है।

**झं** – 'ब्रह्माण्ड भेदन' का ज्ञान ऐसे किसी भी लोक में आने-जाने को सम्भव इस दल के जागरण पर मिलती है।

**जे** – इसी दल के कारण व्यक्ति ब्रह्माण्ड के किसी भी मात्र के द्रव्य को धर पर बेठ कर ही देख सकता है, इसी दल के फलतः वह सभी देवी देवताओं को सदैह देख सकता है।

**टं** – 'कायाकल्प' अर्थात् शरीर को 'विरोधन' बनाये रखने की शक्ति इसी दल में लिहिन होती है।

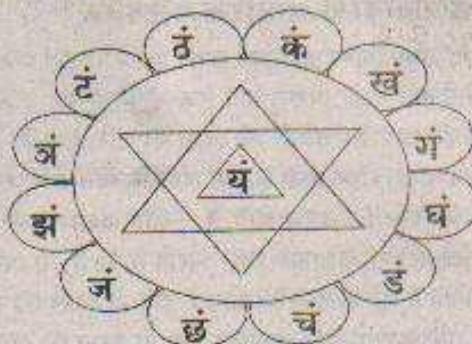
**ठं** – इस दल के कारण ही व्यक्ति के शरीर से एक दिल्ली गंध प्रवाहित होने लगती है, जिसमें कोई भी यहाँ तक कि ऐड-पीथे भी उल्लंसित हो जाते हैं।

### अनाहत चक्र जागरण साधना

किसी भी दिन इस साधना को प्रारम्भ करें। मिन्दूर एवं कुकुम को बोडे जल में मिलाकर उससे एक धात्री में आगे

ज्ञ 'फरवरी' 2000 मंत्र-तत्र-दत्र विज्ञान '52'

विद्ये वित्र के अनुसार बाबूह दली वाला कमल दल अकित करें। प्रत्येक दल में कुकुम से उसके धीजाहर लिखें। मध्य में काजल से एक घटकोण के आकार का पवन देव बनाएं, उसके अन्दर कुकुम से एक त्रिकोण बनाएं। उस त्रिकोण के अन्दर काजल से ही 'यं' धीज का अंकन करें। धीजाहर के ऊपर



'अनाहत चक्र जागरण यं' को स्थापित करें।

पांच मिनट का प्राणायम करें। फिर बढ़िनी हथली में यं को लेकर अपने हृदय क्षेत्र पर स्पर्श करते हुए निम्न चेतना मंत्र बोलकर अपने अनाहत चक्र को चैतन्य करें –  
तद्गमद्ये पदब्रह्माक्षरं च मधुरं धूमावलि धूसरं,  
ध्यायेत्पाणि चतुष्टयेन लसितं कृष्णाधिरूढं परम्।  
तद्गमद्ये करुणा निधान ममलं हसाभीशीशाभिधम्,  
पाणिः ध्यामद्य वरं च विद्यधलोकं प्रद्याणामपि ॥

इसके बाद दोनों हाय जोड़ कर यं पर कुकुम अशत चढ़ाते हुए चक्र की देवी काकिणी का ध्यान करें –

कृष्णाम्बरे परीधानां जानाभरण भूषिताम् ।  
ध्यायेत् शशिमुखी लित्या काकिनी मंत्रसिद्धये ॥

उसके बाद यं पर गुरु मंत्र बोलते हुए सिन्दूर से १२ चिन्हियाँ बनाएं। फिर 'प्राण संजीवित कुण्डलिनी जागरण माला' (जहने गीन छोड़ की साइताओं (लदान-मंड-तंत्र-यं विज्ञ), नदीमंड-१२१३२३२ जैवर वारीक), में गुरु माला वा प्रदेश कर सजाते हैं।) से निम्न मंत्र की ५ माला २४ दिन तक करें –

**अनाहत चक्र जागरण मंत्र**

H ३६ यं अनाहतं जप्त्य जाग्रय स्फोट्य उं शम् ॥  
Om Yam Anahatam Japayat Jagray Sfotay Uam Sham.

साधना समाप्ति के बाद यं को पूजा स्थान में गुरु चित्र के समीप रख दें। माला को अगले चक्र की साधना के लिये सुरक्षित रख दें। यं को साधना सम्भव होने के एक वर्ष बाद जल में प्रवाहित कर दें।

**अनाहत यं** – 150/-, कुण्डलिनी जागरण माला – 180/-

शुक्र की दशा प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में नहीं आती, परन्तु जब भी किसी के जीवन में शुक्र की दशा आती है, तब वह ख्याति, सफलता, प्रसिद्धि, जोश और उमंग से आप्लावित हो उठता है, उसका जीवन थिरक-थिरक कर नृत्यमय हो उठता है। और यदि शुक्र की दशा नहीं हो, तो भी जीवन में सफलता व कीर्ति के शिखर तक पहुंचा जा सकता है, इसी का नाम है-

1.4.2000  
मे 27.4.2000  
क मध्य या किसी शुक्रवार को

# शुक्र ग्रह राष्ट्रीय

**5** क्षत्र पथ (गैलेक्सी) का जाज्यल्पमान, ऊर्जावान और सबसे अधिक अमा युत ग्रह शुक्र है। संसार में जहाँ कहीं भी आकर्षण या मन को बलान खोलकर आकृष्ट करने की कला है वह शुक्र से ही प्राप्त हो सकी है। वन मार्ग में किसी सरोवर में छिले हुए कमल को देखें, उसके निर्वोष गुलाबीपन और धोमा-धीभी छवि में लहराने में जो विशिष्ट आकर्षण है या वाटिका के मुखों में जो सौन्दर्य है, ओस की चूंडी में जो एक अनृती मरसी है, किसी नववीवना के योवन में किसी को भी दीवाना बना देने की जो क्षमता है वह सब शुक्र ग्रह की ही विशेषता है।

आप किसी नगर में चले जायें और वहाँ एक दूसरे से प्रतिस्पर्धी करती हुई ऊँची-ऊँची अड्डलिकाएं, उनमें बास्तुकर्णा, रंगों का सामग्र्य, इंटीरियर डेकोरेशन का सौन्दर्य यह सब यदि आपको ठिक जाने के लिए बाध्य कर दे तो निश्चित मानिये कि जिन हाथों ने इनका निर्माण किया है वह भी, जिसने कार्य निर्वेशन किया है वह भी, यहाँ नक कि जिसने इस बनवाने के लिए धन खर्च किया है- जो इसका स्वामी है और जो वास्तव में उसमें रहकर सुख प्राप्त करता है, वह भी शुक्र ग्रह की विशिष्ट अनुकूल्या का पात्र है। यदि कोई कलाकार अपने हाथ-भाव से, बाघ बंद्र से या मात्र आवाज से हजारों की भीड़ को तनाव मुक्त करके उनके अन्दर गुदगुदी पैदा कर दे, हासने के लिए बाध्य कर दे तो निश्चित मानिये कि शुक्र ग्रह से प्रभावित होने के कारण ही वह कलाकार वह सब करने में समर्थ हो पाया है। अर्थात् समाज में निरसना को दूर कर सरसना पैदा

करना, आनन्द और कृष्ण को समाप्त कर उत्साह और उमंग पैदा करना तथा किसी को साथीक कार्य करने के लिए प्रेरित कर देना यह क्षमता शुक्र ग्रह की अनुकूलता से ही सम्भव है।

अन्म पत्रिका में शुक्र अनुकूल होने से ही व्यक्ति समाज उन्मुख हो अपने कार्यों से यश प्राप्त कर अछ वृत्त बन पाता है। इसीलिए समाज में किसी व्यक्ति को विशेष आनंद सुन सम्भवा एक के बाव प्रक कार्यों ने साकल होते देखे जाने पर लोगों को यह कहने सुना गया है-

‘अरे क्या तुम्हारी शुक्र की दशा चल रही है?’

शुक्र यह अपने आप में इसीलिए अनंद, सकलता तथा उमंग का पर्याप्त बन गया है। जिन शुक्र की अनुकूलता के किसी भी व्यक्ति के जीवन को सार्वकात् संघर्ष नहीं है अहो बातों को रेखांकित करते हुए पृथ्यपाद बदगुलेव हों, नारायण दत्त श्रीमाली जी ने गहन अस्थयन कर, संन्यास जीवन में हिमालय की कन्वराओं में अपने शुक्र के चरणों में बैठकर विशेष साधनाओं से प्राप्त तपोबंल से हजारों साल पहले के गुरुओं, घटनाओं का अवलोकन कर, तन्कालीन कृषियों से सम्बन्ध स्थापित कर, प्रामाणिक रूप से शहों का वास्तविक जान प्राप्त किया तथा उसे समाज के लिए उपलब्ध कराया।

ऐसे ही एक अवसर पर मनाती के निकट अपने गृहस्थ शिव्यों से चर्चा करते हुए उन्होंने ल्पष्ट किया था कि गेहूं के दानों में किसी व्यक्ति की क्षुधा निवृति की गया उसके अन्दर ऊर्जा प्रदान करने की जो क्षमता है, वह इसीलिए है क्योंकि गेहूं का बीज सबसे पहले अपने अस्तित्व को पक्का

ज 'फरवरी' 2000 मन्त्र-तंत्र-यत्र विज्ञान '55' ॥



करते हुए नगीन के अन्दर गई जाता है। और बाद में वही वीज पौधे के रूप में पनपता है और उनमें जैसे हगरों दाने लैवार करता है। उसकी बलिदान गाथा यही समाप्त नहीं हो जाती। पौधे को किसान जाकर काट देता है, बालों को मसलता है, दाने निकाल कर उनको किस बक्कों में पोसा जाता है, आदि बनाकर उसे पुनः पानी के साथ मसल मसल कर उसकी लोड लैवार की जाती है, और उसके बाद जरम तबै और फिर आग से गुजर कर ही उसमें वह योग्यता आ पाती है कि मनुष्य की गूँख को मिटा सके। तभी पहला निवाला तोड़ने के पहले मनुष्य अपने गुरुदेव को, इष्ट को और भाता अन्नपूर्णी को प्रणाम कर भोजन शुरू करता है।

ठाक इसी प्रकार शुक्र लो देत्य गुरु शुक्राचार्य का पद प्राप्त हुआ क्योंकि शुक्राचार्य सूर्य का लेन घट्हग करते हुए निरन्तर तप युक्त ही रहे। शुक्राचार्य को यह जान होने पर कि संसार में तो क्या पूरे ब्रह्माण्ड में भगवान शिव शक्ति जैसा कोई तेजस्वी नहीं है, भगवान शिव का रोम रोम नेजपुन तथा दिव्य शक्तियों का गण्डार है वे भगवान शिव की प्रसन्न करने के लिए संकल्प लेकर साधनारत ही गये और इस प्रक्रिया में भवीच्छ सफलता, जान की पराकार्ष्ण को प्राप्त करने के लिए, अपने गुरु रुद्री भगवान में समाइत होने के लिए उठाने अति

मृक्षम रूप रखा तथा उनके शरीर में प्रविष्ट हो, अपने शाप को मिटा दिया और भगवान शिव के अन्दर का जन्म प्राप्त कर अपना कायाकल्प कर नियो। जब भगवान शिव वहे इस बात का भान हुआ तो योर्ध मात्र के ढारा बाहर निकालकर उन्हें दिव्यता प्रदान की और इस तरह संसार में वे शुक्र ज्योति योर्ध उद्भूत शुक्राचार्य कहलाये।

अपने भवीच्छ बलिदान, गुरा चरणों की निस्वार्थ और निरन्तर मेवा तथा भगवान शिव की परम प्रसन्नता के प्रतीक शुक्राचार्य संसार में भवीच्छ रसायन शास्त्री हो गये, पारद के अधिक से अधिक संस्कार के विशेषज्ञ बनकर पारद संगीतनी विद्या के तो मानो वे प्रतीक ही बन गये और इसीलिए नक्षत्र पथ में सबसे ज्यादा प्रभावान और आभावान नक्षत्र के रूप में चांदनी रात में उन्हें जान भी देख सकते हैं।

आज के युग में भी शुक्र का प्रभाव स्पष्ट है। किन्तु जगत में भी सदगुरुदेव की मविष्वलणियां अद्वितीय प्रभाव छोड़ चुकी हैं, यहां तक कि उनके मनक की बातों को भी फिल्म कलोंने गंगीरना से लेकर, उनसे एक कहानी लिखवाई, 'एक डाली रजनी गंधा की' पुस्तक प्रकाशित हुई और इसके आधार पर ही रजनीगंधा फिल्म का निर्माण हुआ जिसमें परम्परा लोकप्रियता प्राप्त की।

१५०० करपये मास्टक को नीकरी करने वाले एक नवयुवक को अपने समय का एक शुपर स्टार जिसे आज भी कोई बीट नहीं कर पाया ऐसा अभिनाश बचन बना देना जाया। एक अवधुड़ जाट नवयुवक को एक ऐसे समलू और सदाबहार ही मैन धर्मेन्द्र का ख्याति प्राप्त करा देना कि जिसकी दूसरी पलनी तक बच्ने को अपने समय की सबसे सफल भी-दर्शी की प्रतिमूर्ति, स्वप्न सन्दर्भों के रूप में चर्चित अभिनेत्री हेमामलिनी तैयार हो गयी — दोर इन दोनों का आज भी सफल वेबाइक जीवन है — यह सब शुक्र ग्रह के प्रभाव को ठाक समय पर रेखांकित कर देने का ही परिणाम है।

### शुक्र अह साधना के लाभ

शुक्र के प्रभाव से निम्न परिणाम प्राप्त होते हैं —

१. लक्षि के स्वास्थ्य पर और इस सरह उसकी आयु पर शुक्र का प्रभाव पड़ता है।

२. संगीत, कला अभिनव का सम्बंध शुक्र से है, इन क्षेत्रों से सम्बंधित व्यायामों को शुक्र साधना अनिवार्य है।

३. वाणी का अधिकाता यह बुध है परन्तु उसमें

सम्मोहन शु  
गायक बन  
वा अभिनेत्री  
है यह समझ  
४.

विशिष्टता —  
५.

में भ्रष्टीसन्धि  
जन्म से ले  
रहे, उनके  
कालीन उन  
और उसके  
नहीं दिखते  
करते रहे।  
व्यक्तित्व  
बन सका

महत्वपूर्ण  
प्राप्त कर

का आधा  
पक्षिका के

साधना ३

बात-चीर  
रही हो,

वा पुत्री  
मनोकाम

शुक्र ही

लाभ प्रा  
बनाने में

के सफल  
और नव

मन्मोहन शुक्र की बजह से ही होता है और तब ही व्यक्ति नायक बन पाता है। उदाहरणार्थ किसी भी सफल अभिनेता या अभिनेत्री के अभिनय में उसकी आवाज का कितना महत्व है यह समझा जा सकता है।

४. व्यवहार में शिष्टाचार, साज-सज्जा, पोशाक में विशिष्टता – यह शुक्र ग्रह की अनुकूलता से ही सम्बन्ध है।

५. उत्साह, उमंग और कार्य में तल्लीनता, व्यवहार में अभीरुचि – यह सब शुक्र ग्रह की देन हैं भगवान् श्रीकृष्ण नन्म से लेकर शरीर न्याय करते समय तक सदा सक्रिय रहे, उनके जीवन में बाल लीलाओं से लेकर महाभारत कालीन उनके व्यवहार में, अर्जुन को गांता का जान देने में और उसके बाद के उनके पूरे जीवन में जरा भी कहीं ठहराव नहीं दिखता है, हमेशा दूसरों को भी नित्य नवीन ऊर्जा प्रदान करते रहे। और ऐसा ही व्यक्ति शुक्र की ऊनों से युक्त सर्वोच्च व्यक्तित्व अर्थात् कामदेव के अवतार प्रथुमन का भी पिता बन सका।

६. महिलाओं के लिए शुक्र ग्रह की साधना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। महिलाओं के लिये उच्चतम आर्द्धरूप एवं श्रृंगार प्राप्त करने हेतु भी यह साधना उचित है।

७. विवाह के उपरान्त वैवाहिक जीवन की सफलता का आधार भी शुक्र ग्रह ही है (पूर्ण वैवाहिक सुख प्राप्ति हेतु पत्रिका के अगले अंक में शुक्र की विशेष साधनाएँ दी जायेंगी)।

८. मनचाहे लड़के या लड़की से विवाह के लिये शुक्र साधना अधिक अनुकूल होती है।

९. विवाह में बाधा आ रही हो अथवा विवाह की बात-चीत बार-बार असफल हो रही हो और शादी नहीं हो पा रही हो, तो शुक्र साधना करने से बाधा दूर हो जाती है।

१०. सन्तान प्राप्ति में विलग्न हो रहा हो अथवा पुत्र या पुत्री सन्तान की कामना हो, तो भी शुक्र साधना करने से मनोकामना पूरी होती है।

११. अक्षुण्ण बीवन/दुदीन्त पौरुष दोनों के लिए शुक्र ही आधार है।

१२. अर्थ प्राप्ति में, व्यापार में अधिक से अधिक लाभ प्राप्त कर लक्ष्यी पाति अथवा विशेष प्रसिद्ध करोड़पति बनाने में शुक्र ग्रह गनबत का प्रभाव डालता है।

१३. नये नये अविष्कारों में बिना शुक्र की सहायता के सफलता संभव ही नहीं है क्योंकि नवीन सूननात्मक ऊर्जा और नवीन विचारों का प्रादुर्भाव शुक्र से ही संभव होता है।

१४. जीवन में जहां भी सफलता प्राप्त करनी हो

शुक्र की साधना करनी ही होगी क्योंकि सफलता का आधार ही शुक्र ग्रह है।

१५. वाणी में सम्मोहन और कांतिहीन चेहरे को कांतिमय बनाने तथा शरीर को सुडौल बनाने के लिये भी शुक्र साधना से सफलता मिलती है।

१६. पूर्ण पौरुष प्राप्त करने के लिये अनंग साधना, कामदेव गति साधना के साथ ही शुक्र साधना अथवा इनसे सम्बन्धित दीक्षा लेना भी बहुत उपयोगी है।

### किस व्यवसाय में शुक्र अनुकूलता देता है?

प्रत्येक ग्रह किसी न किसी कार्य क्षेत्र या व्यवसाय के क्षेत्रों को प्रभावित करता है। शुक्र साधना सम्पन्न कर निम्न क्षेत्रों में अद्वितीयता प्राप्त की जा सकती है –

१. विज्ञापन या मॉडलिंग, फिल्म या अभिनय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के साथ ही धन और यश कमाने के लिये शुक्र साधना आवश्यक है।

२. औषधि विज्ञान, औषधि निर्माण, आयुर्वेद और विभिन्न रोगों की सफल चिकित्सा तथा इन रोगों के उपचार के लिये, पूर्ण प्रभावशाली और लाभदायक चिकित्सा प्रणाली एवं औषधियों की खोज के लिये भी यह साधना आवश्यक है।

३. खिलौनों का व्यापार अथवा निपट आर्टिक्ल्स, कॉर्सेटिक्स, व्यूटी पॉलर के व्यवसाय/व्यापार में सफलता के लिये भी शुक्र साधना अनुकूल है।

४. फैशन डिजाइनर या नई-नई मनमोहक पोशाकों के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने हेतु यह साधना आवश्यक है।

५. विदेश यात्रा या विदेशों में व्यापार, विदेश धनमणि, विदेश में उच्च अध्ययन आदि के सुअवसरों के लिये तथा उनमें भी सफलता प्राप्त करने के लिये शुक्र ग्रह साधना उपयुक्त है।

६. फोटोग्राफी, फिल्म क्षेत्र अथवा पर्टन व्यवसाय, होटल, अटो मोबाइल इडस्ट्री अथवा सजावट सम्बन्धी उद्योग या व्यापार में शुक्र ग्रह के कारण ही सफलता मिलती है।

७. कृषि, बाणवानी या फलों उद्योग के क्षेत्र में यदि आप सफलता चाहते हैं तो शुक्र की साधना कीजिये।

८. स्पोर्ट्स की गतिविधियों अथवा इन क्षेत्रों में विशिष्टता के लिये शुक्र की साधना आवश्यक है।

९. चिकित्सार के लिए शुक्र प्रधान ग्रह है, इसी तरह मृतिकार मूर्ति में सजीवता तब डाल देता है जब वह शुक्र ग्रह की अनुकूलता के समय मूर्ति का निर्माण करता है।

१०. पारद विज्ञान के क्षेत्र में सफलता एवं अप्सरा साधना में सफलता हेतु शुक्र ग्रह की साधना आवश्यक है।

## शुक्र साधना का विशेष मुहूर्त

इस वर्ष 1.4.2000 से 26.4.2000 तक शुक्र मीन में उच्च वा होकर गतिमान रहेगा। अतः इस काल शुक्रमूह में किसी भी दिन इस साधना को सम्पन्न कर न्यरित सफलता पाई जा सकती है। अन्यथा इस साधना को किसी भी शुक्रवार को तो सम्पन्न किया ही जा सकता है।

## साधना विधान

साधक पूर्व दिशा की ओर मुख कर सफेद रंग के आसन पर बैठें। सामने भूमि पर सफेद चन्दन से निन्न प्रकार के यंत्र का अंकन कर लें। उस पर सफेद वस्त्र बिछा दें। शुक्र चित्र स्थापित कर शुक्र पूजन कर लें। इस प्रकार की साधना में नरियल के तेल अथवा तिल के तेल का दीपक मंत्र जप के समय जलना आवश्यक है। तेल में चन्दन भी मिला केना चाहिये। वस्त्र पर एक थाली रखें। थाली में अक्षत से एक सितारा (★) लगाएं। अक्षत के उस आसन पर निम्न मंत्र बोलते हुए मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिषिद्ध 'शुक्र यन्त्र' को स्थापित करें—

### शुक्र स्थापन मंत्र

ही हिमकुन्द मृणलाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।

सर्वशास्त्र प्रवक्तारम् आर्गवं प्रजमास्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्रः ह्रहगच्छ इहतिष्ठः । शुक्राय नमः ।

इसके बावर 'शुक्र आकर्षण मुद्रिका' को दाहिने हाथ

## शुक्र स्तोत्रम्

नमस्ते भार्गव श्रेष्ठ देव्य वानव पूजित,  
वृष्टिरोध प्रकर्त्रे च वृष्टिं कर्ते नमो नमः ।  
देवयानि पिस्तुभ्यं वेद वेदांग पारग,  
परेण तपसा शुद्धः शंकरो लोक सुन्दरः ।  
प्राप्तो विद्वां जीवनाश्वयां तस्मै शुक्रात्मने नमः,  
नमस्तस्मै भगवते भृगुपुत्राय वेधसे ।  
तारा मण्डल मध्यस्थ स्वभासाभासिताम्बर,  
यश्योदये जगत्सर्वे मंगलाहें भयेदिह ।  
अस्तं वाते छारिष्टं स्यात्तस्मै मंगल स्पिणे,  
शिषुरा वासिनो दैत्यान् शिव वाण प्रपीडितान् ।  
विघ्नात् जीवयच्छक्रो नमस्ते भृगुनन्दन,  
यथाति गुरुवे तु भ्यं नमस्ते कविनन्दन ।  
बलिशाज्य प्रदो जीवस्तस्मै जीवात्मने नमः,

की मुट्ठी में बंद कर शुक्र का ध्यान करें—

ॐ श्वेतः श्वेताम्बरधर किरीटि च चतुर्भुजः ।

दैत्यगुरुः प्रशान्तश्च साक्षसूत्र कमण्डलुः ॥

ध्यान के बावर मुद्रिका को यंत्र के मध्य में रख दें। फिर कुंकुम से धंब पर निम्न मंत्र बोलते हुए सात बार निलक करें—

ॐ आग्यदाय नमः पादं समर्पयामि ।

ॐ शुद्धादाय नमः आचमनीयं समर्पयामि ।

ॐ दैत्यगुरुवे नमः रजानं समर्पयामि ।

ॐ औमकराय नमः गङ्गां समर्पयामि ।

ॐ श्वेताम्बराय नमः धूपं दीपं दर्शयामि ।

ॐ राहीरवर प्रदाय नमः नैवेद्य निवेदयामि ।

ॐ शुक्राय नमः आचमनीयं समर्पयामि ।

इसके बावर 'सफेद डकीक माला' से निम्न मंत्र का १६ दिन तक नित्य ७ माला जप करें—

शुक्र साधना मंत्र

॥ ॐ द्रां द्री द्रीं सः शुक्राय नमः ॥

Om Urvam Drem Drem Sah Shukraay Namah

नित्य मंत्र जप के बावर यंत्र के समझ हाथ जोड़कर शुक्र मूलोत्र का पाठ करें। सामान्य पर सफेद वस्त्र एवं चाबल किसी को दान में देना विशेष रूप से लाभप्रद होता है।

आप किन्हीं दो मित्रों को (जो पवित्रा सदस्य नहीं हों एवं आपके ही परिवार जन न हों) पवित्रा सदस्य बनायें। इस द्वातु कार्त्रं ६ पर मित्रों के पूर्ण शाक पते लिख लें। कार्त्रं प्राप्त होने पर आपको ४३८/ की वी.पी.पी. द्वारा साधना सामग्री थेज वी जायेगी। आपके दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पवित्रा थेजी जाती रहेगी।

## भार्गवाय नमस्तुभ्यं पूर्वं जीवाणि वन्दित ।

जीवपुत्राय यो विश्वो प्रादात्तस्मै नमो नमः,

नमः शुक्राय काव्याय भृगुपुत्राय धीमहि ।

नमः कारण रूपाय नमस्ते कारणात्मने,

स्तवराज मिमं पृथ्यं भार्गवस्य महात्मनः ।

यः पठे चक्रशुण्याद्वापि लभते वांछितं फलम्,

पुत्र कामालभेत् पुनाद श्रीकामो लभते श्रिवमः ।

राज्य कामो लभेद्राज्यं स्त्री कामः स्त्रियमुत्सामः,

भृगु वारे प्रयत्नेन पठितवर्य समाहिते ।

अन्यवारे तु होरायां पूजयेद भृगुनन्दनम्,

रोगातों मुचयते रोगव भयातों मुचयते भगवात् ।

यद्यत्प्रार्थयते जन्तु सततात्प्राप्नोति सर्वदा,

प्राप्तः काले प्रकर्तव्या भृगुर्जा प्रयत्नतः ।

सर्वं पाप विनिमूलः प्राप्नु यच्छ्रवस निषिद् ॥

जन  
भी आसानी ।

१.  
व्यतीत होता।

२.  
स्त्री की कुर्य  
दीर्घ जीवी ।

३.  
रहता, वह स  
शीकीन होता

४.  
के अनेक मि  
व्यक्ति दीर्घी

५.  
कवि इदय,

६.  
सफल नहीं

गुरु आदि वे

७.  
प्रवासी, व्य

८.  
दुर्स्वी, पर्याय

९.  
स्वभाव का

१०.  
सन्तान सु

११.  
धनवान, व

१२.  
प्रेमी होता

१३.  
अनुकूलता

# जन्म कुण्डली और शुक्र ग्रह



आप अपनी कुण्डली स्थान देखें कि शुक्र किस घर में स्थित है

जन्म कुण्डली में बारह घर होते हैं और शुक्र किस घर में स्थित है, इस बान को ज्योतिष ज्ञान को न जानने वाला व्यक्ति भी आसानी से देख सकता है। अलग अलग घरों में शुक्र के स्थित होने के अलग-अलग प्रभाव हैं, जो इस प्रकार हैं—

१. जिसके लम्ब स्थान में शुक्र पड़ा होता है, उसका अंग-प्रत्यंग सुन्दर होता है, उसके दाम्पत्य नीचन सुखमय व्यतीत होता है और वह उत्तम मुख्यों का धोग करता है। ऐसा व्यक्ति दीर्घ आयु वाला, स्वस्थ सुखी, मृदु रूप मधुरभाषी, विद्रोह तथा राज्य कार्यों में वक्त होता है।

२. जिसके दूसरे स्थान में शुक्र हो, वह प्रिय मार्ती तथा त्रुष्णिमान होता है, सुन्दर वस्त्रों को धारण करने वाला होता है। स्त्री की कुण्डली हो तो वह श्रेष्ठ सुन्दरा होती है। ऐसा व्यक्ति मिष्ठान भोजी, लोकप्रिय, हाँरों फ़तों को परख करने वाला, कवि, दीर्घ जीवी, साहसी एवं भाग्यवान होता है।

३. जिसके तीसरे स्थान पर शुक्र होता है, उसका स्त्रियों के प्रति आकर्षण कम होता है, वह अपने पुत्र से सन्तुष्ट नहीं रहता, वह साहसी होते हुए भी काम से घबरा जाता है। ऐसा व्यक्ति आलसी, चिन्तकार, भाग्यवाद, विद्रोह और यात्रा करने का गौकीन होता है।

४. जिसके चौथे स्थान में शुक्र हो, वह अपने साथियों से अपो बढ़ जाता है तथा उच्च पद प्राप्त करता है। इस व्यक्ति के अनेक मित्र होते हैं। घर सभी वस्तुओं से पूर्ण परा रहता है। वह जन्म से ही अपनी माता का पालन-पोषण करता है। ऐसा व्यक्ति दीर्घायु, परोपकारी, आस्तिक, व्यवहार-दश और कुशल होता है।

५. पांचवें स्थान पर पड़ा हुआ शुक्र शत्रुनाशक होता है। अल्प परिश्रम से ही इसके कार्य सम्पन्न होते हैं। ऐसा व्यक्ति कवि हृदय, सुखी, भोजी, न्यायवान, आस्तिक, उदार और व्यवसायी होता है।

६. जिसके छठे स्थान में शुक्र होता है, उसके नित नये शत्रु पैदा होते हैं। ठीक प्रकार से काम किये जाने पर भी वह सफल नहीं हो पाता। भिन्नों द्वारा इसका आचरण नष्ट हो जाता है और गलत कार्यों में धन व्यय कर लेता है। ऐसा व्यक्ति पिता, मुरु आदि के सुख से भी बंधित रहता है। वह स्त्री-सुखहीन, दुराचारी, दुखी, गुप्त रोगों से वस्त तथा भित व्याया होता है।

७. जिसके सातवें स्थान में शुक्र हो, उसे कमर वर्द रहता है, वह उदार, लोकप्रिय, धर्मिक, चिन्ता करने वाला, विलासी, प्रबासी, व्यथिचारी, चंचल, स्त्री सुख को प्राप्त करने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति का भाग्योदय विवाह के बाद होता है।

८. अठवें स्थान पर शुक्र होने से व्यक्ति दीर्घजीवी, कटुभाषी, वाहन सुख को प्राप्त करने वाला, रोगी, चिङ्गिड़ा, दुखी, पर्वतनशील, पर स्त्रियों पर धन खर्चने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति के कार्य कष्ट से पूर्ण होते हैं।

९. यदि लम्ब स्थान से नवें स्थान में शुक्र हो, तो जातक धर्मवान, धर्मिक, आस्तिक, शुणी, मेही, राजप्रेमी, गौजी त्वभाव का होता है। उसका नीचन सुखमय होता है तथा उसे सभे भाइयों से बहुत सुख मिलता है।

१०. दसवें स्थान में शुक्र हो तो व्यक्ति लोगी, कृपण, विलासी, धनवान, विजयी, इस्त कार्यों में सुचि लेने वाला, सतान सुख से हीन होता है।

११. लम्ब से ज्याइहवे स्थान पर शुक्र होने पर जातक सुन्दर, सुशील, कीर्तिमान, सत्यप्रेमी, गुणवान, भाग्यवान, धनवान, वाहनसुखी, लोकप्रिय, जीर्षी, कामी, पुत्र सुख सम्पन्न होता है।

१२. बारहवें स्थान में शुक्र हो तो जातक स्थूल शरीर वाला, आलसी, पर स्त्री प्रेमी, भितव्यवादी, शत्रुनाशक, विद्या प्रेमी होता है।

यदि साप्तक शुक्र साधना सम्पन्न कर लेता है, तो शुक्र ग्रह किसी भी स्थान आदि में हो, तो उसे प्रतिकूलता की जगह अनुकूलता ही अनुकूलता प्राप्त होती है, शुक्र सम्बन्धी समस्त लाभ प्राप्त होते ही हैं।

किसी भी ब्रह्मार की रसि को

## आकस्मिक धन प्राप्ति एवं ऋणमुक्ति के लिए पूर्ण वरदायक है

तंत्रोद्धार सम्पन्न

# सिद्ध कमला यज्ञ



धी कमला लहमी का स्वरूप है। जीवन में धन सम्पत्ति की वृद्धि, कर्ज के भार से मुक्ति के लिये कमला साधना गृहस्थ साधकों द्वारा अत्यंत उपयुक्त अनुभव की गई है।

भगवती कमला आथा शक्ति का ही स्वरूप है, जिनकी कृपा वृष्टि से ही बढ़ा एवं अन्य देवता भी शक्ति प्राप्त करते हैं। जो भी साधक भगवती कमला की उपासना नित्य करता है, उसके जीवन में उन्नति के द्वारा निश्चित तीर पर खुलते हैं और ऐसा साधक सिद्धि के बेत्र में भी पूर्णता प्राप्त करते हुए वैष्णव, धन-धान्य से युक्त, सम्मान व कीर्ति प्राप्त करता है।

वैसे तो तंत्र साधनाओं में कमला साधना की अनेकों विधियां प्रचलित रही हैं किन्तु 'तंत्रोक्त कमला साधना' का आधार कमला यंत्र ही है, क्योंकि यह पूर्ण रूप से प्रभावयुक्त एवं सिद्धिवायक है। 'कमला तंत्र' में यंत्र के बारे में स्पष्ट किया गया है, कि यह पूर्ण विधि के साथ षट्कोण सहित अष्टवलों से युक्त महत्वपूर्ण यंत्र हो —

अनुसु तंत्र्ये वंत्रसु लिखेत्पदमन्दलोष्टकम् ।

षट्कोण कर्णिकतंत्र वेद द्वारोपशोभितम् ॥

यह यंत्र तम्भ पत्र पर अकित हो तथा कमला तंत्र में बताया गया है, कि जब तक तंत्रोद्धार सम्पन्न यंत्र न हो, तब तक उसका प्रभाव नहीं होता है। तंत्रोद्धार में १२ तथ्य प्रकट किये गये हैं। इन तथ्यों को सम्पन्न करके ही यंत्र का प्रयोग करना चाहिये —

तरं पूर्व लिखितवा परमतममत्वं वर्जमन्त्रं वीजमन्त्रं, लक्षणज्ञ श्री शीज पूर्ववर्त करण तम्भ काम शीजं परस्तात् । दूसरे: पश्चाद् जनीयनस्तु वृत्तमध्य जगत् पूर्विकायः प्रसूत्याः, हृत्यन्तं रूपं लम्बतं लिखित मनु विदुर्मन्त्रं मुक्तं समाप्त्यः ॥

अर्थात् यह शुखता के साथ विजय काल में अंकित किया जाना चाहिये। इसका पूर्ण रूप से मंत्रोद्धार हो तथा वाज्वीज से सम्पुटित हो तथा लक्ष्मा शीज के द्वारा अभिषेक किया हुआ हो। श्री शीज के द्वारा यह यंत्र सिद्ध हो और काम शीज के द्वारा वशीकरण युक्त हो। पदम शीज के द्वारा यह प्रभावयुक्त हो। जगत् शीज के द्वारा यह आकर्षणयुक्त हो। मनु शीज के द्वारा मन पर नियन्त्रण करने वाला हो, ऐं शीज के द्वारा वैष्णव युक्त हो तथा रमा शीज के द्वारा सिद्धिवायक हो।

कमला यंत्र पूर्ण रूप से रिकृ करना अत्यंत पेचीदा और ब्रह्माण्ड कार्य है। पूर्ण मिल कमला यंत्र अपने घर में स्थापित करना जीवन के लिये सौभाग्यदायक होता है। और अनेक वाली पीढ़ियों के लिये भी यह यंत्र भास्योदयकारक बना रहता है।

कमला यंत्र के घर में स्थापन से और नित्य यंत्र की पूजा से पूर्ण मानसिक शान्ति, वैष्णव व आकस्मिक धन प्राप्ति होती रहती है। तंत्र में इनके द्वादश नाम स्पष्ट हुए हैं। यदि कोई साधक/साधिका केवल इन द्वादश नामों का उच्चारण भी नियंत्रणामात्र से करता है तो उसे सम्बन्धित लाभ प्राप्त होने लगते हैं, ये नाम इस प्रकार हैं —

१. महा  
२. राजा  
३. पद्म  
४. वरव  
यंत्र स्थाप

क  
के दिन अशा  
स्थापन किम  
सकता है।  
जल से यंत्र ब  
ले, फिर पं  
(दूध, वही  
शहद, शक्ति  
यंत्र को ब  
कराये। फिर  
शुद्ध जल से  
कराकर य  
किसी व  
वस्त्र में पो  
जपने व  
किसी चौक  
दें। यंत्र के  
नी ढेरी अन  
करें तथा ज  
जीवन में ज

त्रिन्दियों ल  
मानी जाइ है  
उद्घातात्प  
दण्ड लिय  
नाना रुजै  
आर्या राह

मंत्र से भ

मुखे। श्री  
दीजाय न  
प्राप्तये ज

१. महालक्ष्मी, २. क्रणमुक्ता, ३. हिरण्यमयी,  
४. राजतनया, ५. दारिद्र्यवाहारिणी, ६. कांचना,  
७. पदमासना, ८. राजराजेश्वरी, ९. कनकवर्णा,  
१०. वरदा, ११. जया, १२. सर्व मांगल्य युक्ता।

### यंत्र स्थापना एवं साधना विधान

कमला जयंती अथवा किसी भी सर्वार्थ सिद्धि योग के दिन अथवा किसी बुधवार की शान्ति में इस यंत्र का घर में स्थापन किया जा सकता है। पहले जल से यंत्र को धो लें, फिर पंचमुत (बृंध, बही, घो, शहद, शङ्कर) से यंत्र को स्नान करें। फिर पुनः गुड़ जल से स्नान कराकर यंत्र को किसी स्वच्छ वस्त्र से पोछ कर अपने सामने



महाविद्या कमला

किसी चौकी पर पैला वस्त्र बिछाकर उस पर स्थापित कर दें। यंत्र के दाहि ओर गुरु चित्र रखें और दूसरी ओर चावल की नी ढेरी बनाकर उस पर नव शहदों के प्रतीक रूप में स्थापित करें तथा हाथ जोड़कर नवशहदों से इस आर्थिक सुदृढता हेतु जीवन में अनुकूल संयोग प्रदान करने की प्रार्थना करें।

इसके पश्चात् 'कमला यंत्र' पर अष्टर्गद से सोलह बिन्दियाँ लगा दें। यह सोलह बिन्दियाँ सोलह लक्ष्मी का प्रतीक मानी गई हैं। हाथ जोड़कर इस ध्यान मंत्र का उच्चारण करें— उद्यन्मार्तण्ड कान्ति विगलित कवरी कृष्ण वस्त्रावृतांबीय् । दण्ड लिनं कराब्जैर्वरमथ भुवनं सन्दधतीं स्रिनेत्राम् ॥ नाना रत्नविंशतीं स्थित मुख कमलों से वितां देव देव सर्वैः । भर्या राहीं नमो श्रुत स रवि कुल तनुमाश्रये ईश्वरीं त्वाम् ॥

इसके पश्चात् हाथ में पूष्प और अक्षत लेकर निम्न मंत्र से भग्यती कमला का आवाहन करें।

ॐ द्वाष्ट्रा ऋषये नमः शिरसि । गायत्रीरच्छन्दसे नमः मुखे । श्री जगन्मातृ महालक्ष्मी देवतायै नमः हृदि । श्री वीजाय नमः गुह्ये । सर्वेष्ट सिद्धये भम धनाप्तये भमाशीष्ट प्राप्तये जपे विनियोगाय नमः सर्वगे ।

इसके बाद गुड़ धी का ठीपक एवं सुखनिपत आगरबत्ती प्रज्ञनविलित करें और यंत्र पर कुकुम अर्पित करें, पुष्प व अक्षत चढ़ाएं, ताम्बूल, फल एवं भिष्ठात्र अर्पित करें। फिर कमला के दुनींग कबच का पाठ करें—

ऐकारी मस्तके पातु वाग्भवी सर्व सिद्धिदा,  
हीं पातु चक्षुषोर्मध्ये चक्षुयुग्मे च शांकरी ।

जिह्वायां मुख वते च कर्णयो ईन्तयोद्वये,  
ओष्ठाधरे दन्त पत्थोः तालु भूले हनी पुनः ॥

पातु मां विष्णु वनिता लक्ष्मीः श्री विष्णु स्त्रियोः,  
कर्ण शुभ्ये भुज द्वये रवन छन्देक च पावती ।

इदये मणि बन्धे च शीवायां वाश्वर्योद्धर्योः,  
पृष्ठदेशे तथा कु गुट्ये यामे च दक्षिणे तथा ॥

स्वधा तु प्राण शक्त्यां वा सीमन्ते मस्तके तथा,  
सर्वांगे पातु कामेश्वी महादेवी समुन्नतिः ।

पुष्टिः पातु महा माथा उत्कृष्टिः सर्वदावतु,  
ऋचिः पातु सदा देवी सर्वत्र शम्भु बल्लभा ॥

वाग्भवी सर्वदा पातु, पातु मां भर गेहिनी,  
रमा पातु महा देवी, पातु माथा स्वराद् स्वयं ।

सर्वांगे पातु मां लक्ष्मीविष्णु माया सुरेश्वरी,  
विजया पातु भवने जया पातु सदा मम ॥

शिव दूरी सदा पातु सुन्दरी पातु सर्वदा,  
भैरवी पातु सर्वत्र भैरुण्डा सर्वदावतु ।

पातु मां देव देवी च लक्ष्मीः सर्व समृद्धिदा,  
इति ते कथितं विष्णु कवचं सर्व सिद्धये ॥

कवचं पाठ के बाद 'कमला महाविद्या माला' से निम्न मंत्र की १६ माला जप करें—

कमला मंत्र

॥ उ॒ँ ए॑ँ इ॑ँ ही॑ श्री॑ कृ॒र्ण॑ हस्तो॑ जगत्प्रसूत्य॑ नमः ॥

Om Ayeem Eem Hreem Shreem Kleem Hasoum Jagatpraseooyei Namah

इसके पश्चात् धगवती लक्ष्मी की आरती एवं गुरु आरती सम्पन्न करें। यंत्र को पूजा स्थान में रहने दें व माला को यंत्र के सम्मुख स्थापित कर दें। भविष्य में नव श्री कृष्ण आर्थिक प्रतिकूलता का अनुमत हो तो इस माला से एक माला उपरोक्त मंत्र का जप कर यंत्र के सम्मुख हाथ जोड़ दें एवं नित्य धूप-दीप दिखाने रहें। इस प्रकार के यंत्र व माला को पूजन के पश्चात् दुकान में स्थापित कर सकते हैं अथवा पर के ही पूजा स्थान में रख सकते हैं।

साश्वना सामग्री पैकेट - 330/-

साइक्लिंग के लिए समय के बढ़ने तक प्रतिक्रिया है जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उच्चतम अवसरों के लाभ होते हैं तथा जीवन के अप्राप्य अवसरों के नार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नौवें दी गई सारणी में तमस को तीन लप्तों में विस्तृत किया गया है - श्रेष्ठ, मध्यम और निम्न। जोकि के लिए आवश्यक किसी भी कट्ट के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सद्बैधित हो,

एर ने शुम उत्सव से सम्बन्धित ही अधिक आन्य किसी भी कारो से सम्बन्धित है, औप इन खेलोंमें सभी लोग उत्सव कर सकते हैं और सफलता के प्रतिशत 99.9% अपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

# सामाया हूँ

पुणे होने ने शिलाय होता है, केवल सफलता मिलती है

निम्न समूह ला उपर्योग ते सदा से जीवित है, क्योंकि याद बनते हुए जारी कः प्रारम्भ भूल जाए तो निम्न सम्य में है जाए, तो वह बिंगड़ जाता है। इस प्रत्येक यक्ति के चाहिए, कि निम्न सम्य में किसी भी प्रकार के जारी वा प्रारम्भ न करे।

वार/दिनांक	ब्रेक समय	मध्यम समय	बित्ति समय
रविवार (6, 13, 20, 27 फरवरी 5, 12 मार्च)	प्रातः 6.00 से 10.00 तक साथ 8.48 से 7.36 तक साथ 8.24 से 10.00 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक	प्रातः 10.00 से 2.00 तक साथ 10.48 से 1.12 तक	दोपहर 2.00 से 6.48 तक साथ 7.36 से 8.24 तक रात्रि 10.00 से 10.48 तक रात्रि 1.12 से 3.36 तक
शुमार (7, 14, 21, 28 फरवरी 6, 13 मार्च)	बज्जपुहूर्त 4.24 से 7.30 तक प्रातः 10.48 से 1.12 तक दोपहर 3.36 से 5.12 तक साथ 7.36 से 10.00 तक रात्रि 1.12 से 2.48 तक	प्रातः 9.00 से 10.48 तक दोपहर 1.12 से 3.36 तक साथ 6.00 से 7.36 तक रात्रि 10.00 से 1.12 तक बज्जपुहूर्त 4.24 से 5.12 तक	प्रातः 7.30 से 9.00 तक साथ 5.12 से 6.00 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक
मंगलवार (1, 8, 15, 22, 29 फरवरी 7, 14 मार्च)	प्रातः 6.00 से 8.24 तक प्रातः 10.00 से 12.24 तक साथ 7.36 से 10.00 तक रात्रि 12.24 से 2.00 तक रात्रि 3.36 से 6.00 तक	प्रातः 9.12 से 10.00 तक साथ 6.00 से 7.36 तक रात्रि 10.00 से 12.24 तक रात्रि 2.48 से 3.36 तक	प्रातः 5.12 से 6.00 तक प्रातः 8.24 से 9.12 तक दोपहर 12.24 से 4.30 तक साथ 5.12 से 6.00 तक रात्रि 2.00 से 2.48 तक
बुधवार (2, 9, 16, 23 फरवरी) 1, 8, 15 मार्च)	प्रातः 7.36 से 9.12 तक प्रातः 11.36 से 12.00 तक दोपहर 3.36 से 8.00 तक साथ 8.48 से 10.48 तक रात्रि 2.00 से 4.24 तक	प्रातः 6.00 से 7.36 तक प्रातः 9.12 से 11.36 तक दोपहर 2.00 से 3.36 तक रात्रि 10.48 से 12.24 तक	दोपहर 12.00 से 2.00 तक साथ 6.00 से 6.48 तक रात्रि 12.24 से 2.00 तक
गुरुवार (3, 10, 17, 24 फरवरी 2, 9 मार्च)	प्रातः 6.00 से 8.24 तक प्रातः 10.48 से 1.12 तक साथ 4.24 से 6.00 तक साथ 7.36 से 10.00 तक रात्रि 1.12 से 2.48 तक	प्रातः 9.12 से 10.48 तक दोपहर 10.12 से 1.30 तक साथ 6.00 से 7.36 तक रात्रि 10.00 से 1.12 तक	प्रातः 8.24 से 9.12 तक दोपहर 1.30 से 4.24 तक साथ 6.00 से 7.36 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक
शुक्रवार (4, 11, 18, 25 फरवरी 3, 10 मार्च)	बज्जपुहूर्त 4.24 से 6.00 तक प्रातः 6.48 से 1.12 तक साथ 4.24 से 5.12 तक साथ 8.24 से 10.48 तक रात्रि 1.12 से 3.36 तक	दोपहर 1.12 से 4.24 तक साथ 6.00 से 7.36 तक रात्रि 10.48 से 1.12 तक	प्रातः 6.00 से 6.48 तक साथ 5.12 से 6.00 तक साथ 7.36 से 8.24 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक
शनिवार (5, 12, 19, 26 फरवरी 4, 11 मार्च)	बज्जपुहूर्त 4.24 से 6.00 तक प्रातः 10.30 से 12.24 तक दोपहर 3.36 से 5.12 तक साथ 8.24 से 10.48 तक रात्रि 2.00 से 3.36 तक	प्रातः 7.36 से 8.24 तक दोपहर 1.12 से 2.00 तक साथ 6.00 से 8.24 तक रात्रि 10.48 से 12.24 तक	प्रातः 6.00 से 7.36 तक प्रातः 8.24 से 10.30 तक दोपहर 12.24 से 1.12 तक दोपहर 2.00 से 3.36 तक साथ 5.12 से 6.00 तक रात्रि 12.24 से 2.00 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक

# चह हुमने बढ़ी वस्त्रमि हिरु के कहाँ

किसी भी कार्य को प्राप्त करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावाएँ रहती है, कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, आधार तो उपरियत नहीं हो जायेगी, पता नहीं दिन का प्राप्त किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्थियं को तवावहित कर पायेगा या नहीं।

प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल हरे आबद्ध युक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहभिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित शब्दों से संकेतित हैं, जिन्हें यहाँ प्रत्येक दिवस के अनुशार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

15 फरवरी	इलायची को अपने चाहिसे हाथ में लेकर 'ॐ श्री हीम्' (Om Shreem Hreem Shreem Namah) का ११ बार उच्चारण कर, इलायची को पूरा दिन अपने पास रखें।	28 फरवरी	'बूर्जभोपविष्ट' फैसेट का अवण करें, मन को शान्ति प्राप्त होगी तथा मन में उत्पाद का बंधार होगा।
16 फरवरी	नया एकादशी के अवसर पर आज आकमिक वापाओं पर नय को कामना हेतु बगलामुखी के 'हीम' (Hleem), बीज का प्रान, पांच मिनट जप करें।	29 फरवरी	विचार करें कि आपके जीवन का उद्देश्य क्या है, नक्य बया है। प्रतीक रूप में अपनी बड़ाई पर मील बांधें। आज विनया एकादशी पर किसी शुभ भाधना को सम्पन्न करने का सकल्प लें और अगले दो दिन माठ के भीतर भीतर उस भाधन की समर्पण कर लें। पान के पत्ते पर एक मिठाई बरबर गुरु पूजन के समय देखें रूप में जपित कर गुरु का शब्द की प्रार्थना करें। काली मिर्च के पान दाते 'ओ मत्र का सात बार उच्चारण कर अपने चारों ओर से पुमाकर फेंक दें। आज दिवस पर्यन्त यह सम्बन्ध अधिक से अधिक शिव मह 'ॐ नमः शिवाय' का जप करें। सम्भव हो तो शास्त्रोन्म शिव पूजन भी सम्पन्न कर शिव आरती करें। यदि आज किसी नवीन कार्य का प्रारम्भ करना हो, तो 'ओ ही नमः' का तीन बार उच्चारण करें।
17 फरवरी	केसर अचवा चन्दन कर निलक रखव को लगाते हुए 'ॐ श्री मांगल्यम् सूमनस्यां ॐ' (Om Shreem Maangalyam Soumanasyam Om) मंत्र का तीन बार उच्चारण करें, प्रखरना का अनुभव होगा।	1 मार्च	सोमवारी अमावस्य के दिन शिवलिङ पर बेल पत्र बढ़ाकर सम्नान के भगवान कल्याण की कामना करें।
18 फरवरी	राई तथा नमक को घर से निकलते समय घर के बाहर द्वार से फैलने हुए जायें, शत्रु पराजित होंगे।	2 मार्च	प्रातः काल सूर्य नमस्कार कर एक लोटा कलश से सूर्य को जल का अर्पण दें, चैत्रयन में वृद्धि होगी।
19 फरवरी	तेल का दीपक लगाकर 'मंगल यह स्तोत्र' (मंत्र-तंत्र-विज्ञान-दिवसपूर्व १६-३१) का प्रान, एक पाठ करें, कार्यों में सफलता मिलेगी।	3 मार्च	'कालभृत्याष्टक' का आज पाठ कर लें, तो आपका तनाव कम होगा।
20 फरवरी	हाथों में पुष्प लेकर नुस चरणों में बढ़ाने हुए मिन्न स्तोक का पठन करें— अभिष्ट सिद्धि मे देहि प्रारणागत बत्स्यले। भवया समपर्य तुभ्यं सवधिरण भृतिते॥	4 मार्च	पितरों की शान्ति के लिये आज गाय को ताजे आटे की गोटिया रिखलायें।
21 फरवरी	गुरु नम दिवस के रूप में प्रान, 'विष्णुवत्त्वरात्मन्द स्तन्यन' का पूरी पाठ करें, दिवस पर्यन्त गुरु प्रिन्नन करें तथा गुरु कार्य करने का संकल्प ले।	5 मार्च	भगवान शिव का स्मरण कर 'शिव ताण्डव स्तोत्र' (दिवसपूर्व-१९ ब्रह्म) का जय के साथ एक पाठ करें, पूरा दिन जन्मद में आत श्रीत बना रहेगा।
22 फरवरी	घर से बाहर जाने समय 'ओ मणपतये नमः' (Om Gannpataye Namah) का चांच बार उच्चारण करें।	6 मार्च	तीन छिल्प पत्तों को शिवलिङ पर बढ़ाकर नायें, कार्य में सफलता की लम्पावनाएं बढ़ जायेंगी।
23 फरवरी	मण्डपान दत्तविद्य का स्वरपा कर दिव्य वत्तारेयस्तोत्र' (नववरी-२००० ब्रह्म) का प्रान, एक बार पाठ करें, लम्पावन अनिष्ट का निवारण होगा।	7 मार्च	प्रान ज्ञान करने वाले जल में तर्जनी से पांच बार 'ओ' लिख दें, फिर उसमें ज्ञान करें, न्यूनि रहेंगी।
24 फरवरी	लाल पुष्प मण्डली दुग्गों को बढ़ाकर कार्य हेतु जायें।	8 मार्च	आज रो शोलाष्टक प्रारम्भ हो रहा है, किसी साधना की व्यापत्र करने का निश्चय करें।
25 फरवरी	दिवस पर्यन्त नुसुचित अथवा लाकेट अपने साथ रखें, अनिष्ट दल नामेगा।	9 मार्च	आत्मरक्षा हेतु आज 'हनुमान चालीसा' का पाठ करें।
26 फरवरी	'राम रक्षा स्तोत्र' (नववर १९-३१) का प्रान, पाठ कर जायें, कार्यों में सफलता की लम्पावना बढ़ जायेगी।	10 मार्च	
27 फरवरी	आज रात्रि में गुरु पूजन कर दोप, शुभ स्वर्ण आदीगे।	11 मार्च	
	ज 'फरवरी' २००० मंत्र-तंत्र-विज्ञान '६३' ४	12 मार्च	
		13 मार्च	
		14 मार्च	

# MYSTERY OF YANTRAS

**M**antra, Tantra and Yantra are inseparable constituents of the field of Sadhanas. Mantra is a powerful incantation which helps one link one's sub-conscious with the divine and thus obtain its help. Tantra is a special form of Mantra-usage in which the Sadhana process is speeded up and made a thousand fold more powerful. What then is a Yantra?

These are mystical engravings generally on copper or silver or gold which act like receivers and transmitters. They reflect the Mantra sound produced by a Sadhak having first amplified it subtly. The sound then can travel infinite distance to reach the God, Goddess or divine force who is being supplicated. The God or Goddess may then transmit its blessings and these are caught by the Yantra, magnified and directed towards the Sadhak. At the sub-conscious level the blessings are received by the Sadhak and he or she benefits from them.

Several Yantras are also drawn with ink on paper, but whatever the background the true worth of these esoteric inscriptions is only when they have been consecrated and Mantra-energised by a Guru who has mastered all Sadhanas.

Strange geometrical figures, numbers, syllables appear on Yantras. One may be unaware of their significance, yet their proper use brings forth amazing results. One may not know how actually a car runs and still drive it; similarly one could use Yantras without knowing how they are made. Only thing is that one must know how they are to be used.

Following are some really efficacious Yantras which have proved their worth over the ages and which anybody could use to derive amazing benefits.

## 1. EASING TENSIONS

The Beesaa Yantra is most effective for this purpose. If some problem is weighing on your mind just draw the following Beesaa Yantra on a paper with vermilion.



On this place a Beesaa Yantra Mudrika (बीसा यन्त्र

मुद्रिका). Mentally pray for riddance from the tension. Then close your eyes and chant *Om* (ॐ) for ten minutes. After that put the ring on any finger. Very soon your worries shall disappear. After a month drop the ring in a river.

Sadhana Articles : 150/-

## 2. BOOST YOUR SALES

On any Wednesday draw the following Yantra on a paper with vermillion. Light incense and on the inscription place a *Vyaapar Vridhik Yantra* (व्यापार वृद्धि यन्त्र). Place this in your shop. The Yantra's energy shall draw customers in crowds to your shop.

५३	८०	७	६
६	३	६६	५६
५९	८४	८	७
५	८	६८	५८

Sadhana Articles : 300/-

## 3. PREVENT ABORTION

On a Friday using a twig from a pomegranate (Anaar) tree draw the following Yantra on paper with vermillion. On it place *Garbh Raksha Yantra* (गर्भ रक्षा यन्त्र). Offer on it vermillion and light incense. Then silently pray for the protection of the child in the womb.

Later tie the Yantra around the waist of the expecting lady. This shall ensure safe delivery. After birth of the child drop the Yantra in a river or pond.

Sadhana Articles : 300/-

## 4. SUCCESS IN AVENTURE

On a Thursday draw the following Yantra with turmeric on a paper.

३५ भूः	३५ पुत्रः	३५ स्त्रीः
३५ महः	३५ जनः	३५ तपः
	३५ सत्यम्	

On it place a *Sarva Kaaryu Siddhi Yantra* (सर्व कार्य सिद्धि यन्त्र). Light incense and speak out your wish. Later offer sweets to children. After 21 days drop the Yantra in a river or pond.

Sadhana Articles : 240/-

# वैद्यनाथ साधना

## HEALTH AND VIGOUR

**W**ithout his will neither creation nor destruction is possible, say the ancient texts. Destruction here does not mean death or end of the world, rather it alludes to the end of all factors which poison life and make it a burden. And it is only Shiva who can free mankind of ailments, poverty, pain, affliction and problems. No wonder he is known as *Hnar* -- one who can rob all one's bane.

True joy in life is possible only when man is fully healthy and is able to make the optimum use of the opportunities manifested by life. Whenever there is something lacking on either front disease or despair is the result. And ultimately either can lead to the other, for while diseases afflict the body, despair inflicts mental pain and torture.

And even medical research now provides evidence that mental anguish opens the floodgates of physical impairment, and physical affliction can well in turn create mental imbalance. Hence perfect physical and mental health assumes top priority for every individual, more so in today's world where diseases and tensions hang thick in the air ready to invade one's health and mental peace at the first opportunity.

To combat these effectively one needs something more than just medical help, one needs a tremendous boost in one's *Pranic Shakti* so that the worst pitfalls of life could be overcome effortlessly, one needs to tap into some divine source of joy which could keep one in the best of spirits even when ominous clouds of tensions and anxieties hang about threateningly.

This divine source could be none other than Lord Shiva, for who else could make a *Shamsan* (funeral ground) his home and still remain overflowing with joy, energy and spirit. And it is this very uniqueness in his divine persona that has attracted millions of devotees over the ages to his

worship and meditation. All over India and even abroad he has been worshipped in various of his forms -- Shivaling, Nataraj, Ardhnarishwar and many other.

Our Rishis too had discovered this fact quite early on that true joy in life can come with perfect physical health and mental peace and they soon realised that Sadhana of the Yogiraj Shiva could help one achieve this goal in no time. And after much experience these erudites declared that the Vaidyanath form of the Lord is most benign when it comes to achieving riddance from sorrows, diseases and physical afflictions.

Vaidyanath, as the name suggests, means Lord of Physicians and there can be no denying the fact that Lord Shiva's grace can even rebuff death. He is known as *Mrityunjaya* -- one who has conquered death and his Sadhana can help one attain longevity and perfect health.

While the *Mrityunjay* Sadhana can be very complex and difficult for an ordinary person, the Vaidyanath Prayog in its simple and easy form hides equally beneficial results for a devout Sadhak. This amazingly simple yet efficacious Sadhana not just helps free oneself of ailments rather it fills the mind and soul with a feeling of divine joy and confidence which in turn opens up the path to success in life for the Sadhak. For is it not a fact that greatest success comes to one who endeavours with spirit and verve.

On a Monday get up early in the morning. Have a bath and wear white robes. Sit on a white mat facing North, the direction in which is Kailash, the abode of the Lord. Place a Shivaling before yourself. Bathe it with water, milk, curd, ghee and honey chanting *Om Namah Shivay*. Batho again with water and wipe it dry with a clean cloth. Place it in a copper plate and chanting as above offer three leaves of Bel Patra (बेल पत्र). Chant one round of Guru Mantra. Next place a *Vaidyanath Yantra* (वैद्यनाथ यन्त्र) in a plate. Light a ghee lamp. Take a black Hakeek rosary and place it over the Yantra. Next chanting thus five times offer *five Brahma Rudraksh* ('५ ब्रह्म रुद्राक्ष) on the Yantra.

*Om Poornma Eishwarya Dehi Dehi Shivaay Phat*

ॐ पूर्ण ऐश्वर्य देहि देहि शिवाय फट् ।

While offering each Rudraksh contemplate on the problem/disease which you desire riddance from. Thereafter chant 11 rounds of this Mantra with the *black Hakeek rosary* (काली हकीक माला).

*Om Puraamb Shivaay Namah*

॥ ॐ पूराम्ब शिवाय नमः ॥

Next light a holy fire and offer a mixture of whole black peppers (काली मिठ्ठे), Rai (राई) and mustard oil 105 times along with chanting of the above Mantra.

After that the same day leave the Yantra, rosary and ashes from the Yagna under a tree in a jungle or drop them in a river. Return home and have a bath.

Sadhana Articles : 375/-



# DURGA SADHANA

7.4.2000

or any Friday

**O** Arjun! Your weapons are useless against your foes like Durdhyodhan. Only Mantra power can annihilate them, hence make use of the powerful Mantras granted to you by your Guru."

These wise words once spoken to Arjun by Lord Krishna emphasize that courage and strength alone cannot help win the battle of life. To overcome all hurdles, all adversaries one needs the decisive strength of divine power with the help of which even the worst phases of life can be easily crossed over.

Life means new surprises each moment and one never knows when a friend would turn into a foe or some person might assume a hostile stance. And if one wishes to launch a new venture one has to remain ever wary of mischievous makers bent on throwing a spanner in the works. What more it might not even be an obvious enemy that one is up against. Posing as a friend could be a Brutus, eagerly waiting for a chance to stab one in the back.

One might well succeed in warding off the attacks coming from expected sources, but many catch one unawares and leave one struggling to keep life going on smoothly. Even if one is equipped with a daring spirit one can possibly take on at most two or three foes at a moment, and a series of attacks coming from scores of sources instead of proving to be hearty competition could mean loss of precious time, energy and money and even health and life.

It would also be sheer naivety to expect such hatred and jealousy to spring up only at one's work place, for even one's home, family or circle of relatives could turn into a battleground. It is not uncommon to see a brother lust after one's blood, or one's life partner turn into a predator on trivial issues. Things take a plunge for the worst when these very close ones start to opt for low tactics like black magic, false libel suits and physical attacks.

Life becomes fraught with worries, constant fears, ill health and loss of wealth due to such negative influences in life. In such situations especially when no amount of wise counselling, advice, threats work there remains no choice than seeking divine succour. Sadhanas alone can help one overcome such persistent foes, for Vedic rituals are a wonderful source of Shakti or divine power which not just instils physical strength and stamina rather also

strengthens one mentally and spiritually.

It's a fact proved by hundreds of scriptures that one equipped with Mantra power remains invincible life long. And if one has tapped into the infinite source of Power and Energy, Mother Durga, then nothing in the universe could prove a threat to that individual.

The following Durga Sadhana is an unfailing and fast way of turning foes into friends, removing all hurdles on the path of success, banishing all fears and dangers in life and nullifying the effects of all evil practices that might have been initiated by some adversary. A surge of courage, feeling of security, confidence and faith are gifts of this Sadhana which can help one overcome and defeat all problems in life in whatever form they might appear.

Try this powerful Sadhana on a Friday or on 7.4.2000 early in the morning from 4 am to 6 am. Have a bath and wear yellow robes. Sit on a yellow mat facing East or North. Cover a wooden seat with yellow cloth. Place *Mahaadurga Yantra* (મહાદુર્ગા યંત્ર) on a mound of rice grains and offer on it vermillion, red flowers, incense. Light a ghee lamp. On its left on another mound place *Shakti Khadag* (શક્તિ ખડગ). On the Yantra also offer a sweet made from gram flour. Join the palms and chant thus.

*Sarva Mangal Maangalye Shive Sarvaarth Saadhike, Sharanyye Trayambake Gouri Naaraayanni Namostute.*

સર્વ મંગલ માંગળ્યે શિવે સર્વાર્થ સાધિકે !  
શરણ્યે ત્રયમ્બકે ગૌરિ નારાયણિ નમોઽસ્તુતે ॥

Next take some water in the hollow of the right palm and pledge thus - I (name) do this Sadhana for pacification of all foes. Let the water flow to the ground.

Thereafter stand on the mat, with the Yantra in the right hand. Cover it with the left hand and closing the eyes chant the following Mantra for 10 minutes.

*Ayeing Hreeng Kleeng Chaamundaayet Vichche*

॥ એ હ્રી ક્લેં ચામુંડાયે વિચ્છે ॥

After this offer prayers to the Guru. Chant 5 rounds of Guru Mantra. Having completed the Sadhana take the *Shakti Khadag* in the South direction from your house and bury it in some isolated spot. Drop the Yantra in a river or pond.

Sadhana Articles : 340/-

# APPEARING SATURN



**T**here could be no more wrongly maligned cosmic entity than the planet Saturn which has gained a negative image in the minds of the common folk due to imperfect knowledge of upstart astrologers and charlatans posing as priests. With his eyes set on the loaded pocket of the client it is not uncommon for a *Pandit* to forebode danger and losses, conveniently laying all blame on *Shani Dev*. This psychological trump card is most common in astrological circles, for even the most daring individual would not risk earning the wrath of Saturn by refusing to acquiesce in to the crafty priest's spiritual remedy, which aims more at lightening pockets than placating the planet.

Accidents, pain, affliction, loss in business, quarrels in family, and sudden death have all been declared to be the domain of Saturn by priests who wish to strike terror in hearts of gullible masses and then encash the situation. The fact however is that Saturn is powerful enough to turn even a pauper into a king. To get a better and clear picture let's look at astrological houses ruled and dominated by Saturn.

Saturn is debilitated in Aries and exalted in Libra. It rules over two signs – Capricorn and Aquarius. Wherever it is placed in a horoscope it fully aspects the seventh, third and tenth houses. Venus and Mercury are its friends, while Jupiter and rest are enemies. In business Saturn rules iron, glass, oil and its precious stone is Sapphire or Neelam. While studying the horoscope longevity, court cases, business losses, death, robberies, prison, state punishment, enmities can be analysed through the position and influence of Saturn.

But it should not be inferred from this that the planet is a synonym of bad luck. It is generally believed that it brings sudden accidents, death, losses through fire, robberies, ailments, disrepute, hatred and jealousy. But this is only one half of the picture and this happens only when Saturn is ill placed in the horoscope or is a first rate malefic. And Saturn is not an exception in this regard, for even natural benefics like Jupiter, Mercury, Venus could produce adverse circumstances if they are malefics in the horoscope.

Saturn has its good effects like any other planet and if well placed it could make one rich, powerful and famous. It gives instant success. It is the ruler of justice and makes an individual hard-working and truthful if well

placed. It makes a human a perfect businessman – ambitious, confident, careful, clever and quick in taking decisions. Saturn also instils feelings of kindness, abstinence, patriotism, welfare of masses and can make a person a successful leader. If suitably placed it could give stupendous success in spiritual spheres. However if it is unfavourable in the horoscope it gives opposite results making one dishonest, liar, jealous, lazy, selfish, egoistic, poor, lost and full of discontentment and bitterness.

Saturn remains in a sign for two and a half years and when it travels through the twelfth, first and second houses from the moon the period is called *Saade Saati* or seven and a half years. During this period it could cause severe setbacks in life, mainly loss of wealth, position, ill-health etc. It is in fact due to this particularly malefic period in everybody's life that has earned Saturn so much disrepute. But few know that even when malefic Saturn could be easily appeased or its negative effect could be neutralised through *Sadhana*. Any person suffering from a malefic Saturn or undergoing *Saade Saati* or wishing for benefits from this planet could himself test the veracity of these words by trying the following *Sadhana*.

Try this ritual on any Saturday. At night after 10 pm have a bath, wear yellow robes and sit on a yellow mat facing South. Spread a black cloth on a wooden seat. On it make seven mounds of rice grains dyed black. On each place a leaf of Peepal tree (holy fig). On each leaf place a *Shani Gutika* ('७ शनि गुटिका').

Then in the centre of the cloth make another mound with a mixture of black sesame and pepper seeds. On this place a *Shaneishchari Yantra* (शनीचरी यन्त्र). Make five marks with vermillion on the Yantra. Offer flowers, rice grains on the Yantra. Light seven lamps filled with mustard oil. With a *Black Hakeek rosary* (काली हकीक माला) chant 11 rounds of the following Mantra.

*Om Proum Preem Proum Sah Shanaye Namah*

// उम् प्रौं प्रौं प्रौं सः शनये नमः //

After *Sadhana* tie all articles in the black cloth and drop the bundle in a river or pond. This sure helps nullify the negative effect of Saturn. If the problem you face is severe try the ritual for seven consecutive Saturdays with same set of articles.

**Sadhana Articles : 400/-**

# रुद्राष्टकम्



स्तोत्र वस्तुतः हृदय के भावों को स्तुति या काव्य रूप में अपने आराध्य को अर्पित करने की प्रक्रिया है। इसमें अन्य किसी क्रमकाप्त या तंत्र विधान की आवश्यकता नहीं होती। स्तोत्र तो सात्र हृदय से पूर्ण भावमय होकर पढ़े जाते हैं।

हृदय के भाव और स्तोत्र की शब्द संरचना, इहीं दोनों का सम्मिलित प्रधाव साधक या स्तुतिकर्ता को अभीष्ट सिद्धि प्रवान करता है। गाव स्तोत्र पाठ से ही जीवन में कई प्रकार की अनुकूलताएं प्राप्त हो जाती हैं।



गवान शिव की स्तुति से नकल मनोरथ पूरे होते हैं, रुद्राष्टक के नियमित पाठ से वर्षों से उनको मक्त, साधु, साधक और गृहस्थ शिव कृपा प्राप्त करने आए हैं, मात्र इस स्तोत्र को ही जीवन का अंश बनाने से जीवन निष्कटक व्यतीत हुआ है, तुष्टकर कार्य मी सम्पादित हुए हैं, और मृत्यु जैसा चंकट भी टला है। इस स्तोत्र का अनुष्ठान रूप में भी उपयोग किया जा सकता है।

दो-तीन माह तक नियमित स्पष्ट से नित्य ५ पाठ कर गी कई साधकों ने अपने मनोरथ पूर्ण किये हैं।

नमामीशमीशान निर्वाण रूपं,  
विभु व्यापकं ब्रह्म वेद स्वरूपं।

निंज निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं,  
चिदाकाशमाकाश वासं भजेऽहं॥१॥

निराकारं ऊकार मूलं तुरीयं,  
गिरा ध्यान गोतीतमीशं गिरीशं।  
करालं महाकाल कालं कृपालं,  
गुणागार संसार पारं नतोऽहं॥२॥

तुषारादि संकाश गौरं गभीरं,  
मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं।  
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा,  
लसद भाल बालेन्दु कण्ठे भुजंगा॥३॥

चलत कुण्डलं भू सुनेत्रं विशालं,  
प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालं।  
मृगाधीश चर्माम्बरं मुण्ड मालं,  
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि॥४॥

रुद्राष्टक मिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषय। ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति॥५॥

ॐ 'फरवरी' २०१० मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '६४' ल

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं,  
अखण्डं अजं भानु कोटि प्रकाशं।

त्रयः शूल निर्मलनं शूलपाणि,  
भजेऽहं भवानी परिं भाव गम्य॥६॥

कलातीत कल्याण कल्पान्त कारी,  
सदा सज्जनानन्द दाता पुरारी।  
चिदानन्द सन्दोह मोहापहारी,  
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी॥७॥

न यावद उमानाथ पादारविन्दं,  
भजेऽहं लोके परे वा नराणां।  
न तावत्सुखं शान्ति सन्ताप नाशं,  
प्रसीद प्रभो सर्वं भूताधि वासं॥८॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजां,  
नतोऽहं सदा सर्ववा शंभु तुभ्यं।  
जरा जन्म दुःखीघ तात्प्यमानं,  
प्रभो पाहि आपन् नमामीश शम्भो॥९॥

हे भ  
ने बारम्बार न  
वदों के साक्षात  
अविषेय हैं। स  
यत् चित्र स्वयं  
जो

आदि कारण हैं  
ने पढ़े हैं, वाण  
पापियों को भ  
वाले, गुणों के  
भगवान् भूत

जो  
की कान्ति मे  
जरने मरतक  
करने वाले औ  
को मेरा नम

जि  
तश्च नेत्र अन

फलस्वरूप  
के अंतर्गत

6.3.200

के दिन प्रात  
विन प्रातः ।  
१२०/-  
की समस्त

Om She

14.3.20

नक्षत्र में स  
श्रेष्ठ मुहूर्त  
की माला  
लक्ष्मी का

०

हे भगवान शंकर! मुक्त स्वरूप तथा सब के अधिपति आपको  
मैं बारम्बार नमन करता हूँ। आप समर्थ, सर्व व्यापक, ब्रह्म स्वरूप,  
उदों के साक्षात् विद्युह स्वरूप, निजात्मय, निराकार जो चिन्तन का  
अविधेय है। समस्त विकार से रहित, आकाश के समान निर्मल तथा  
सत् चित् स्वरूप प्रभु को मैं प्रणाम करता हूँ॥१॥

जो निराकार स्वरूप है, जो ओंकार रूप, सब प्रपञ्चों के  
आदि कारण है, जो जागत, स्वभूत और तुरोय - तीनों ही अवस्थाओं  
से परे है, वाणी, मन और इन्द्रियों से अशेय है, कैलाशपति है, जो  
परियों को भयदायक है, काल के भी काल है, सब पर दया करने  
वाले, गुणों के आगार तथा संभार भागर में पार करने वाले हैं, उन  
भगवान भूतभावन को मेरा बारम्बार नमस्कार है॥२॥

जो हिमालय के समान गौर वर्ण, शान्त, करोड़ों कामदेवों  
की कान्ति से युक्त देह वाले, कलकल करती सुन्दर गंगा की धारा को  
आपने मस्तक पर धारण किये हुए, मस्तक पर बाल चन्द्र को धारण  
करने वाले और कष्ट में सर्पों को माला पहने हुए हैं, उन भगवान शंकर  
को मेरा नमन स्वीकार हो॥३॥

जिनके दोनों कानों में कुण्डल हिल रहे हैं, जिनकी भीड़  
तथा नेत्र अत्यंत मुन्दर हैं व विशाल हैं, जो प्रसन्न मुख वाले हैं, जो

नीलकण्ठ एवं दयालु हैं, व्याघ्रचर्म पहने हुए हैं, मुण्ड माला धारण किये  
हुए हैं, उन सर्वप्रिय भगवान को प्रणाम अर्पित करता हूँ॥४॥

अत्यन्त शतिशाली, सर्वव्येष्ट, मधुर बोलने वाले, अस्वप्न,  
जरा रहित, करोड़ों सूर्य के सदृश, प्रकाशमान, मत्त्व, रन एवं तम रूप  
वाले, समस्त दुःखों को दूर करने वाले, हाथ में विशून धारण किये  
हुए, हृदय के पवित्र भावों से जो जानने योग्य है, ऐसे भगवान शिव का  
मैं ध्यान करता हूँ॥५॥

हे प्रभो! आप सभी से परे हैं, सबका कल्याण करने वाले,  
सृष्टि संहारक, सञ्जनों को सुख देने वाले, विपुरासुर का नाश करने  
वाले, आनन्दमय, मोह और अज्ञान का नाश करने वाले, कामदेव को  
भस्म करने वाले हैं, आप मुक्तपर प्रसन्न हो॥६॥

जबतक इस संसार में मनुष्य भगवान उमानाथ के चरणों  
की धारण नहीं होता, तब तक उसे सुख-शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती  
तथा उसके समस्त दुःखों का नाश भी नहीं हो सकता। भभी प्राणियों  
के आश्रयदाता भगवान भोलेनाथ! मुझ पर आप प्रसन्न होइये॥७॥

मैं योग, जप तथा पूजा विधि को नहीं जानता हूँ, मैं सदा  
सर्वदा आपके चरणों में नमन करता हूँ। बुद्धता तथा नन्म-मरण के  
दुःखों से परितृप्त हूँ, आप मेरी रक्षा करें॥८॥

## ब्रह्म चक्र

समय का चक्र निरन्तर गतिशील है और यदि सूक्ष्मता से देखें, तो प्रत्येक क्षण का अपना अलग महावर है। इस काल चक्र की गति के  
फलस्वरूप जीवन में कुछ ऐसे क्षण भी आते हैं, जिनमें कुछ विशेष साधनाओं को सम्पन्न करने पर सफलता की सफ्यावना बहु जारी है। इस सम्बन्ध  
के अंतर्गत ऐसे ही चार विशिष्ट साधना मुहूर्तों को प्रस्तुत किया जा रहा है, जिनमें सम्बन्धित साधना सम्पन्न करने पर सफलता प्राप्त होती है।

**6.3.2000** फाल्गुन कृष्ण पक्ष की सोमवती अमावस्या  
के दिन प्रातः, काल पूर्वामाश्रम नक्षत्र में साध्य योग बन रहा है। इस  
दिन प्रातः: ७.३६ से ९.०० के मध्य 'महाकाल गुटिका' (न्यौद्धावर  
: १२०/-) के समस्त तेल का दीपक लगाकर जप करने से जीवन  
को समस्त आकस्मिक बाधाएं समाप्त होंगी—

// उच्च शं सर्ववाद्या प्रशस्तं शं उच्च कट //

Om Shum Sarvabhaudha Prashamanam Sham Om Phat  
जप के बाद गुटिका को किसी मन्दिर में रख आए।

**14.3.2000** फाल्गुन शुक्ल की नवमी को ग्रात, आश्लेषा  
नक्षत्र में सौभाग्य योग बन रहा है। इस दिन आर्थिक उत्तरि के दिने  
श्रृष्टि मुहूर्त घटित हो रहा है। प्रातः: ६.४८ से ८.२४ तक 'कमलभट्टे  
की माला' (न्यौद्धावर : १५०/-) से निम्न मंत्र का जप करें, तो  
लक्ष्मी का आगमन होगा—

// उच्च श्री आपच्छ हो उच्च लम्भ //

Om Shreem Hreem Angachchh Hreem Om Namah  
जपोपरात माला को तोड़ कर नल में प्रवाहित करें।

**23.3.2000** चैत्र शुक्ल की द्वितीया को स्वाति नक्षत्र में  
हृष्ण योग निर्मित हो रहा है। इस दिन घर में व्याप्ति सभी प्रकार के  
कलेश और तनाव को समाप्त करने के लिये प्रयोग किया जा सकता  
है। 'रुद्राक्ष माला' (न्यौद्धावर : ३००/-) से प्रातः: ४.३० से ६.००  
तक निम्न मंत्र का जप करें—

// उच्च श्रीं क्लीं क्लेश नाशाय उच्च कट //

Om Kleem Kreem Klesh Nasheey Om Phat  
जप के बाद माला के दिव मंत्र में चढ़ाना अनिवार्य है।

**29.3.2000** चैत्र कृष्ण की नवमी को उत्तराखण्ड नक्षत्र में  
शिव योग निर्मित हो रहा है। इस दिन आध्यात्मिक उत्तरि के दिने  
एवं गुरु कृपा का अनुभव करने के लिये प्रयोग सम्पन्न किया जा  
सकता है। 'गुरु गुटिका' (न्यौद्धावर : १००/-) के समस्त प्रातः:  
७.०० से ८.४८ तक निम्न मंत्र का जप करें—

// उच्च श्री हीं सद्योन्नतिरि ही श्री उच्च //

Om Shreem Hreem Saevonnati Hreem Shreem Om  
फिर गुटिका को पूजा स्थान में व्याप्ति करें। अगले २३  
दिनों तक इस मंत्र का नित्य एक बार उत्तराखण्ड कर लें।

# कथा अपनां की भी भाषा होती है?

पूज्य सद्गुरुदेव डॉ. बारादाया वत्त श्रीमाली जी के ज्योतिषीय अनुभव से प्राप्त कुछ सूत्र ...



**पं मानव जीवन को ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वोत्तम वरदान है। यह देवी वरदान चराचर जगत में केवल मनुष्य को ही मिला है, जो कि उसके जीवन की अमूल्य निधि है। पिछले अंक में स्वप्न में विखाई देने वाली कुछ घटनाओं, दृश्यों अथवा वस्तुओं के फलितार्थ दिये गये थे, उसी क्रम में आगे कुछ और विवरण प्रस्तुत हैं —**

**अवतार** — यदि स्वप्न में व्यक्ति स्वयं को ईश्वर का अवतार होता देखे, या जमीन में से शिवलिंग प्रकट होता होइगोचर हो, तो धन प्राप्ति का संकेत है, शीघ्र ही लाभ होगा।

**अश्वारोही** — स्वप्न में घुड़सवार दिखे, तो शीघ्र ही शुभ कार्य के लिये यात्रा करनी पड़ेगी या व्यापार-व्यवसाय हेतु सुदूर प्रांत पर विदेश जाना होगा तथा मनोरथ सिद्ध होगी।

**अभिसारिका** — यदि स्वप्न में प्रिय मिलन को उत्कर्षित कोई सुन्दरी जाती दिखाई दे तो स्वप्न दृष्टा की मनोरोधित इच्छा पूर्ण होगी, उसका प्रणाय सम्बन्ध प्रगाढ़ होगा, या किसी से प्रेम होगा।

**अष्टमुजा** — अष्टमुजा देवी या दुर्गा के दर्शन शुभ होते हैं, इससे शीघ्र ही घर में मांगलिक कृत्य सम्पन्न होता है।

**अस्त्र-शस्त्र** — यदि स्वप्न में अस्त्र-शस्त्र का देव दिखाई दे, या शस्त्र दिखाई दे तो समझना चाहिये कि इन दिनों से जो विभिन्न सिर पर मठरा रही थी, या आप जिस परेशानी से उसन थे, वह शीघ्र ही दूर होगी और आप वैन की साथ ले सकेंगे।

**आकाशबाहन** — यदि व्यक्ति स्वयं आकाश में उड़े तथा मकानों की छत से होता हुआ आगे ही आगे उड़ता चला जाये, तो यह उसकी लालसा, इच्छा और आकांक्षाओं का प्रतीक है। व्यक्ति के हृदय में लैकड़ी इच्छाएँ हैं, जो पूर्ण होती हुई बोचर नहीं होती हैं।

**आशीर्वचन** — यदि स्वप्न में कोई साधु आद्यात्रा या तपस्वी आशीर्वाद दे, या आशीर्वचन कहे, तो यह जीवन में स्थिरता का संकेत है।

**आश्रम** — यदि कोई साधु या संन्यासी का आश्रम स्वप्न में दिखाई दे, तो यह जीवन में स्थिरता का प्रतीक है।

**इन्द्रधनुष** — यदि स्वप्न में कंठी घटाएँ पिरो हुई हों तथा बीच में सुनहरा इन्द्रधनुष दिखाई दे रहा हो, तो यह जीवन में प्रसन्नता, आळाद पर्व पुलवता का प्रतीक है।

**उत्तीर्ण** — स्वप्न में याद किसी परीक्षा में उत्तीर्ण होने का समाचार मिले तो निकट भविष्य में मनोरथ सिद्ध होगे।

**ऊट** — अशुभ, अपश्चात या एक्सीडेंट का सूचक है।

**ऋषि** — ऋषि, महात्मा या साधु दिखाई देना शुभ होता है, शीघ्र ही हर्षवर्धक समाचार प्राप्त होगे।

**कंगन** — स्वप्न में कंगन / चूड़ी दिखना अशुभ है।

**कंगाल/कंजूस** — स्वप्न में कंगाल या भिखर्मंग दिखे और वह स्वप्न में धृष्टि से याचना करता दिखाई दे तो कोई अनिष्ट होगा या घर में बीमारी आयेगी, ऐसा समझें।

**कथा/कीर्तन** — स्वप्न में कथा-श्वरण, मन्त्रिर में कीर्तन या पापिङ्ग द्वारा शमायग, भासवत आदि का पाठ हो तो घर में गुरु, सुखवर्धक, मंगलमय कार्यों के होने का सूचक है।

**कल्याणहृण** — स्वप्न में विवाह हो या कल्याणान हो अथवा कल्याणहृण हो या मंगलमय वाघीत सुनाई देने वाले अशुभ हैं, एवं घर में किसी सदरमय की पुरुखद मृत्यु होने वाला संकेत है।

**कबूतर** — कबूतरों का जोड़ा उड़ता हुआ दिखे तो निरोगिता का प्रतीक है, घर में यदि कोई रोगावरत है, तो वह शीघ्र ही ठीक होगा।

**कमल** — स्वप्न में यदि कमल दिखाई दे, तो यह निरोगिता दर्शाता है।

**कलम** — यदि स्वप्न में पेन खीरिये या बोइं कलम

चेट करे, तो शीघ्र ही उसकी पुस्तक प्रकाशित होजी अथवा कीर्ति बढ़ेगी।

**कांध** - स्वप्न में दर्पण में मुंह देखना, कांच खरीदना लालसा एवं असीमित इच्छाओं का प्रतीक है।

**कामिनी** - स्वप्न में कामिनी दिखे तो शीघ्र ही स्वप्न दृश्य प्रेम सम्बन्धी में सफल होगा, ऐसा समझना चाहिये।

**कारागार** - स्वप्न में कारागार दिखे तो किसी आकस्मिक विपत्ति का सूचक है। शोष ही कुछ ऐसा घटित होगा, जिससे व्यर्थ ही परेशानी का समाना करना पड़ेगा।

**कार्यालय** - यदि स्वप्न में कोई कार्यालय/आफिस दिखे तो स्वप्न बृष्ट शीघ्र ही मनोबांधित भौतिकी को पा सकेगा।

**किताब** - स्वप्न में किताब या किताबों की दुकान दिखाई देना परीक्षा में उत्तीर्ण होने का सूचक है।

**किश्ति** - यदि स्वप्न में किश्ति दिखाई दे, जो लहरों पर छोल रही हो तो व्यक्ति की समझना चाहिये कि घर में अशुभ समाचार सुनने को मिलेगे।

**कुन्डन** - यदि स्वप्न में स्वर्ण या सोने का फेर दिखाई दे या घर में सोने की वर्षा होती दिखे तो शीघ्र अर्थिक हानि का समाना करना पड़ सकता है।

**कुआं** - स्वप्न में कुआ दिखना शुभ है।

**कृता** - यह ब्रीमारी का संकेत है।

**कैलाशपति/ भगवान शिव** - यदि स्वप्न में भगवान शिव के दर्शन हों तो यह विशेष शुभ है। घर में सुख-शान्ति, श्रेष्ठता रहेगी।

**कोद्दी** - यदि कोद्दी दिखे तो ब्रीमारी का संकेत है।

**कोयल** - कोयल का स्वर, या अग्निये में कोयल को देखना प्रसन्नता का सूचक है।

**कुर कर्प** - यदि स्वप्न में अपने ही हाथी कुर कर्प हो जाय, तो शनु पर विजय समझनी चाहिये या मुकदमे में जीत समझी जानी चाहिये।

**क्षत्रिय** - स्वप्न में क्षत्रिय या शूरवीर का दिखन वीरता का चिन्ह है। शीघ्र कठिनाइयों पर विजय होजी तदा यश प्राप्त होगा।

**खिताब/पुरस्कार** - स्वप्न में यदि कोई खिताब/पुरस्कार भिले तो पराजय, मानहानि एवं विफलता मिलेगी।

**खून** - यदि स्वप्न में रक्त बहना हुआ दिखाई दे या खून निकलता दृष्टिगोचर हो तो शीघ्र ही किसी ब्रीमारी का समाना करना पड़ेगा।

**खिलौना** - खिलौने की दुकान या खिलौने दिखना उथका खिलौनी से खेलना शुभ फलवायक है।

## हो सकता है तुम्हारा आन्ध्रीदय हो जाय।

**कब्रिस्तान** - स्वप्न में कब्रिस्तान का दिखना अत्यन्त शुभ है। स्वप्न में कब्रिस्तान से निकलकर मुर्दा जो कुछ भी कहे, वह घटित होकर रहता है। इस सम्बन्ध में पूज्य सदगुरुदेव के ज्योतिर्षीथ अनुभव का एक प्रयत्न उन्हीं के शब्दों में प्रस्तुत है -

मन् १९७० के उनराहूं की बात है, एक दिन एक श्रीमान की पत्नी मेरे पास आई, बोली - 'गुरु जी! आज रात एक अत्यन्त अशुभ स्वप्न आया। मैं अपनी कार से घूमने के लिये जा रही थी कि सड़क किनारे के कब्रिस्तान से एक मुर्दा निकला और मेरी कार के सामने आकर खड़ा हो गया। विश्वासना मुझे कार रोक देनी पड़ी। कार रुकने ही उसने झपट कर मुझे कार से बाहर खींच लिया, और एक बार बुरी तरह से झकझोरा, किर मेरे पिर पर तीन स्वर्ण की इट, दाहिने हाथ पर पांच, बाएं हाथ पर चार, पीठ पर सात, कुल हों पर दो तथा पैरों पर-एक ईंट बांध दी। साथ ही एक डिल्ला भी दिया और खुदेहुकर मेरे घर पैदल पहुंचाया। कार मेरे पीछे-पीछे बिना ढाइवर के ही चल रही थी। ज्यों ही मैं घर में घुसी कि कार स्वतः ही गैरिज में चली गई, और मैं चौखूकर जिर पड़ी। आंख खुली तो चरों और घर के सबस्य खड़े थे, मैं पसीने से तर बतर थी। इंवर जाने क्या होगा? आप ही बताइये न गुरुजी। मेरे परिवार या मुझ पर क्या कोई अनिष्ट आने वाला है?'

मैंने एक क्षण विचार किया और बोला - 'मेरी राय में 'ए' सीरीज का ३१४७२१ लॉटरी टिकट खरीद लें, हो सकता है तुम्हारा आन्ध्रीदय हो जाय।'

वह आश्वस्त सी चली गई। बाद में इन्हीं नम्बरों पर उसे पुरस्कार भी मिला। तात्पर्य यह है कि कब्रिस्तान आदि इस प्रकार के वृश्य धनदायक कहे जायें हैं।

# बाधकों की वाणी

भेष

(वृ. चौ. ती. लू. लौ. आ)

सङ्क पर वाहन प्रयोग के समय नावधानी बरतें, तुर्वटना का योग प्रबल है। पर मैं अनुष्ठान साधना आदि से अप्रिय योगों को टाला जा सकता है। आती हुई मामूली चीज़ अड़चने स्वरूप के सहयोग से दूर होंगी। धार्मिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी व्यथा के योग बढ़ेगा। व्याप्त्य जीवन में तकरार की स्थिति बनी रहेगी। आकृत्मिक धन प्राप्ति का योग नहीं है, अतः व्यथा का धन व्यय न करें। सामाजिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी। कारोबारी मामलों में विधिलता न बरतें। मान-सम्मान की स्थिति बनेगी। राज्य पक्ष आपके लिये अनुकूल रहेगा। प्रेम प्रसंगों के मामलों को लेकर उलझने हो सकती हैं। इस माह की अनुकूल तारीखें ५, ९, १५, १८, २२ व २७ हैं।

वृष्ट

(इ. ड. पु. वा. वी. वृ. ते. ओ)

राज्य पक्ष से क्षोभ की स्थिति रहेगा, अनुकूलता बनाये रखें। व्यापारी वर्ग संवेद से काम लें, लालच में हानि हो सकती है। प्रयोग सम्पादन वीवन व्यवसाय में रुचि न ले। जर्मीन जायदाद के क्रय विक्रय में लाभ होगा। अपने धन को बचान सम्पत्ति में परिवर्तित करें। वाहन के क्रय-विक्रय का योग। अधिक वर्ग में प्रस्त्रवता रहेगी। व्याप्त्य के प्रति लापरवाही न बरतें। मांगलिक एवं धार्मिक कार्यों में व्यावहारिक सम्पर्क है। विद्यक वर्ग में विधिलता रहेगी। व्यापार सम्बन्धी निर्णय लेने पर वस्तावें पर हस्ताक्षर करने से पहले स्वतंत्र रूप से अच्छी तरह सोच लें तथा पूर्ण संयम से काम लें। पुराने अनुवध लाभप्रद सिद्ध होगे। इस माह की अनुकूल तिथियाँ - १३, १६, २१, १४, १६ हैं।

मिथुन

(का. की. कृ. श. ल. को. हा.)

यह माह आपके लिये सामान्यतः अनुकूल ही रहेगा, पर तु समय आलस्य से भरा होगा। कारोबारी मामलों में आलस्य न करें। जीवनसाथी ने सम्बन्धों में मधुरता आयेगी। कारोबारी शेष में कार्य व स्थान परिवर्तन के योग बढ़ेगे। व्याप्त्य के प्रति लापरवाही न बरतें। धार्मिक प्रसंगों में व्यावहारिक कार्य का योग बढ़ेगा। अड़चनों से रिक्तता होगी। मित्रों के महोग से समस्या का सावधान होगा। अधिकारियों से चला आ रहा वैचारिक मतभेद समाप्त होगा। राजकार्य आसानी से पूरे होंगे। शत्रु आपके पक्ष में होंगे, परन्तु विश्वासघात की स्थिति से नावधानी बरतें। इटरल्यू में सफलता संविश्वर शिव साधना' भयमच करें। इस माह की अनुकूल तिथियाँ - ५, ११, १५, १८, २४, २६ हैं।

कठकी

(ठी. हू. हो. डा. डी. डे. डा.)

इन माह का छिंतीय सप्ताह आपके लिये अत्यन्त ही अनुकूल सिद्ध होगा। अतिथियों के आगमन से प्रसन्नता होगी। प्रेम-प्रसंगों में व्यस्तता रहेगी। बेरोजगार वर्ग के व्यक्तियों के लिये नीकरी

की अपेक्षा व्यवसाय अधिक फलप्रद सिद्ध होगा। धन के उधार लेने के लिये समय अनुकूल चल रहा है, साधनात्मक कृत्यों में सचित हो। खान-पान पर भी ध्यान दें, स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है। परिवार के किसी सदस्य को लेकर चिन्ना बने रहेगी। राज्य पक्ष से सुखद समाचार प्राप्त होंगे, परन्तु अधिकारियों से मधुरता बनाये रखें। आध्यात्मिक उत्तरि के लिये 'शूहसूपतीश्वर शिव साधना' सम्पन्न करना आपके लिये अनुकूल है। इस माह की अनुकूल तिथियाँ - ६, १०, १५, १८, २३, २५ हैं।

जिंह

(आ. गी. गू. मे. मो. टा. टी. द्र. टा.)

धर में अनुष्ठान आदि के योग बनेगे। मामूली सो अड़चने आयेंगी। परन्तु इष्ट ननों के सहयोग से उन परिस्थितियों में सुधार होगा। कारोबारी मामलों में विधिलता न बरतें। बाजारी स्थिति उद्धापोह में ही रहेगी, साझेदारी के मामलों में सतर्कता बरतें। अधिकारियों से व्यर्थ वाद-विवाद न करें। प्रेम प्रसंगों में सावधानी बरतें, समाज में असम्पादन की स्थिति बन यकीनी है। व्याप्त्य जीवन में अनुकूलता प्राप्त होगी, कोई दुखद समाचार प्राप्त नहीं होगा। सूक्ष्म-बूझ एवं विवेक पूर्ण निर्णय लेकर ही कोई कार्य प्रारम्भ करें। प्रेम विवाह अनुकूल रहेगा। साधनात्मक दृष्टि से यह समय शुभ एवं सफलतावाक्य रहेगा। जर्मीन-जायदाद को लेकर उलझने बढ़ेगी। इटरल्यू में सफलता के अवसर प्राप्त होंगे। अनुकूलता तारीखें - १, १५, २२, २६ हैं।

लक्ष्मा

(ठो. पा. यी. पू. ष. ण. ठ. पे. ठो.)

उत्तर निर्णय लेने की स्थिति से बचें, अदालती मामलों में व्यस्तता रहेगी। नये व्यवसाय आरम्भ करने की योजना अनुकूल एवं पलाप्रद रहेगी। गृहस्थ्य सुख में दृढ़ि होगी। मृतक पर वाहन चलाने समय सावधानी बरतें। अतिथियों के आगमन ने कोई पुराना विवाद उत्थापित हो सकता है। मांगलिक कार्यों में खुब बढ़ेगा तथा व्यस्तता रहेगी, जीवन साथी से विवाह में अनुकूलता बनाए रखें तथा संतान के प्रति उत्तरदायित्व की उपेक्षा न करें। आपम विश्वास खोये नहीं, उसी से अपको सफलता मिलेगी। आकृत्मिक धन प्राप्ति के योग नहीं हैं, अतः धन का व्यय सावधानी पूर्वक करें। जर्मीन-जायदाद के मामलों में विशेष ध्यान दें। माह की अनुकूल तारीखें - ३, १५, १९, २३, २५ हैं।

दुला

(स. गी. रु. ता. ती. तू. ते.)

व्यापारिक कार्य शेषों में विस्तार होगा। आपिक स्थिति सामन्यवत कमज़ोर ही रहेगी। नये अनुकूलों पर जल्दबाही में कोई निर्णय न लें। राज्य कार्यों में अड़चने आयेंगी। नये व्यवसाय प्रारम्भ करने के उचित अवसर आयेंगे। घरेलू जिम्मेदारियों की उपेक्षा न करें। स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। पढ़ोसियों एवं मित्रों से मतभेद की दशा में सावधानी बरतें, साधनात्मक दृष्टि से समय आपके

### शवर्चि, अमृत, रवि, यज्ञ, द्विपुष्कर, शिखि योग

इन दिवसों पर आप किसी भी साधना को सम्पन्न कर सकते हैं।

- 1 फरवरी - सर्वार्थ सिंहि योग
- 3 फरवरी - सर्वार्थ सिंहि योग
- 8 फरवरी - द्विपुष्कर योग
- 14 फरवरी - अमृत सिंहि योग
- 16 फरवरी - रवि योग
- 18 फरवरी - द्विपुष्कर योग
- 19 फरवरी - रवि योग
- 20 फरवरी - सर्वार्थ सिंहि योग
- 21 फरवरी - अमृत सिंहि योग
- 27 फरवरी - रवि योग

लिये अनुकूल है। प्रेम प्रसंगों के मामलों में रुचि न लें। अध्यात्म के प्रति भक्ति वाले में वृद्धि होगी, धार्मिक प्रसंगों में यात्रा के योग अनुकूलता प्रदान करेंगे। इस माह की अनुकूल तिथियाँ - १२, १८, २१, २४, २७.

### वृष्टिष्ठठ

(तो, ला, ली, लू, ले, लो, ला, ली, लू)

आपसी भत्तेद भुलाकर आगे बढ़े, नवीन सम्पर्क लाभप्रद सिद्ध होंगे। कारोबारी एवं धार्मिक प्रसंगों को लेकर की गई यात्रा फलप्रद सिद्ध होगी। भवन तथा मूर्मि आदि के क्रय-विक्रय के योग बनेंगे। नये व्यापार करने वाले जल्दबाजी न करें, इस माह के मध्य में आपको विशेष सम्मान अध्यात्म किसी लाभादि गिरने का योग है। कारोबारी मामलों में महिलाओं अधिक लाभ अर्जित कर सकती है। रथनात्मक कार्यों से आपकी यश-कीर्ति में वृद्धि हो सकती है। किसी भी कार्य की पूर्णता के लिये अधिक सुदृढ़ता अन्यत आवश्यक है, आपके लिये 'गौरीश्वर शिव साधना' अनुकूल है। इस माह की अनुकूल तिथियाँ - ८, १२, १८, २५.

### द्यद्यु

(वे, यो, आ, आ, ला, ला, दा, दो)

राज्य पक्ष से बाधाओं के जाने से तनाव होगा। सहयोगियों के साथ छोड़ जाने से चिन्ता होनेगी। मांगलिक कार्यों के योग बनेंगे। लका हुआ धन प्राप्त होने का तो योग है परन्तु आकर्षित धन प्राप्ति का योग नहीं है। व्यार्थ के कार्यों में धन पूँजी निवेश न करें। नवीन विवाहों में पैर न कंसाएं। कला जगत के व्यक्ति समाज में सम्मान प्राप्त करेंगे। विवाह के मामलों में जल्दबाजी न करें। रोजगार प्राप्ति में किये गये प्रयास सार्थक होंगे। यदि 'सिद्धेश्वर शिव साधना' सम्पन्न कर लें तो आपको अपना मनोवाहित प्राप्त होने में आ रही किडिनाहों का सामना नहीं करना पड़ेगा। इस माह की अनुकूल तिथियाँ हैं - ११, १४, १३, २२, २६, २९.

### मत्तद

(ओ, झा, झी, लू, लो, लो, ला, ली)

व्यापारिक विस्तार से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। किसी अप्रिय घटना का योग प्रबल, बाधन प्रयोग में सावधानी बरतें। पिछले कुछ समय से आप निम्न कार्य में हाथ ढाल रहे हैं, उसमें सफलता नहीं मिल रही है, साथ ही मानसिक अशान्ति भी बनी रहती है, परन्तु अब धीरे-धीरे आपके पूर्व कर्मों का तुष्टकाल खल्म होने वाला है। 'इन्द्रेश्वर शिव साधना' को यदि सम्पन्न कर ले, तो आपके जीवन में अनुकूलता आ सकती है। कारोबारी के मामलों

### ज्योतिषीय दृष्टि से वह माह

इस चान्द्रमास में पांच शनिवार होने से भूकम्प, प्राकृतिक प्रकोप, अग्निकाण्ड आदि का योग है, जिससे मम्पति एवं जन डाने हो सकती है। वेश का उत्तरी क्षेत्र अधिक सवेक्षणाल रहेगा। राजनीतिक स्थिरता पर आधात होंगे। इस माह के उत्तरार्ध में बुध अस्त होने के साथ ही ब्रह्म ही रक्षा है, जिससे किसी विधिष्ट व्यक्ति के निधन होने अथवा उत्पात या दंगे होने वैसी सम्भावना है।

में धैर्य से काम लें। नीकली अथवा व्यवसाय में उत्तरि के अवसर बन रहे हैं। इस माह की अनुकूल तिथियाँ हैं - १३, १७, २१, २३, २५.

### कुम्भ

(कू, ग्रे, ग्रो, ला, सी, लू, से, सो, ला)

यह माह आपके लिये भौतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से लाभ देने वाला होगा। अधिकारियों से मतभेद हो भी जाये तो आप शान्त बने रहें, मित्रों से मेलजोल बनाये रखें, शोष ही आपको रुक्षाति मिलेगी। जीवन साथी की उपेक्षा न करें तथा परिवार के सभी सदस्यों के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। संतान की ओर से आपको संतोष रहेगा। आपों के दो तीन माह साधनात्मक दृष्टि से आपके लिये अनुकूल हैं, तथा कोई साधना/अनुष्ठान आदि प्रारम्भ करने के लिये विशेष उपयुक्त हैं। किसी प्रकार की यदि कोई समस्या हो तो उससे विचलित न हों, आपके साधनात्मक प्रयास द्वारा उनका निराकरण स्वतः ही हो जायेगा, आपको शक्ता व विश्वास आपको सफलता अवश्य दिलायेगा। इस माह की अनुकूल तिथियाँ हैं - ७, ११, १३, १९, २२, २३.

### मीन

(वी, दू, ल, ज, वे, लो, ला, ली)

कार्य का होना या न होना आपके परिश्रम पर निर्भर होगा। जीवन-नायदाद के मामलों की उपेक्षा न करें। अपना आत्मविश्वास न खोए तथा प्रत्येक कार्य में धैर्य का साथ न छोड़ें। आपके शत्रु आप पर हावी होने का प्रयास कर सकते हैं, परन्तु आपको सुझ-बूझ और संयम के सामने उन्हें नतमस्तक होना पड़ेगा। विशेष अनुकूलता के लिये 'महाकालेश्वर साधना' सम्पन्न करें। किसी विशेष वस्तु के खरीदने से वह में प्रसन्नता का माहील रहेगा। इस माह की अनुकूल तिथियाँ हैं - १३, १७, २२, २५.

### इस मास के दृत, पर्व एवं त्यौहार

1 फरवरी - माघ कृष्ण ११	षट्टिला एकादशी दृत
2 फरवरी - माघ कृष्ण १२	प्रदेव
5 फरवरी - माघ कृष्ण ३०	शनिवारी/शौनी अमावस्या
8 फरवरी - माघ शुक्ल ०३	जौरी तृतीया
10 फरवरी - माघ शुक्ल ०५	वसंत पंचमी, श्री पंचमी
12 फरवरी - माघ शुक्ल ०९	जानोप्य सप्तमी
16 फरवरी - माघ शुक्ल ११	जया एकादशी
17 फरवरी - माघ शुक्ल १३	प्रदेव
19 फरवरी - माघ शुक्ल १५	मार्दी पूर्णिमा, वसंत चतुर्दशी
21 फरवरी - माघ शुक्ल १६	सहशुन नवम विवाह
1 मार्च - काल्युन कृष्ण ११	विजया एकादशी
4 मार्च - काल्युन कृष्ण १३	महाशिवरात्रि
6 मार्च - काल्युन कृष्ण १०	सोमवती अमावस्या
13 मार्च - काल्युन शुक्ल ८	होलांगक प्रारम्भ

प्राकृतिक उपचार की अनोखी पद्धति

# एक्युप्रेशर

**'शरीरस्थ खलु धर्मसाधनम्'** - अर्थात् यह शरीर ही धर्म को पूर्ण करने का एक साधन है, भारतीय चिंतन का यह मूल स्वर रहा है और धर्म का तात्पर्य है केवल कृतिपद्य कर्मकांडों, अनुष्ठानों इत्यादि को पूर्ण करना ही नहीं अपितु चारों पुरुषाधारों को अर्जित करना।

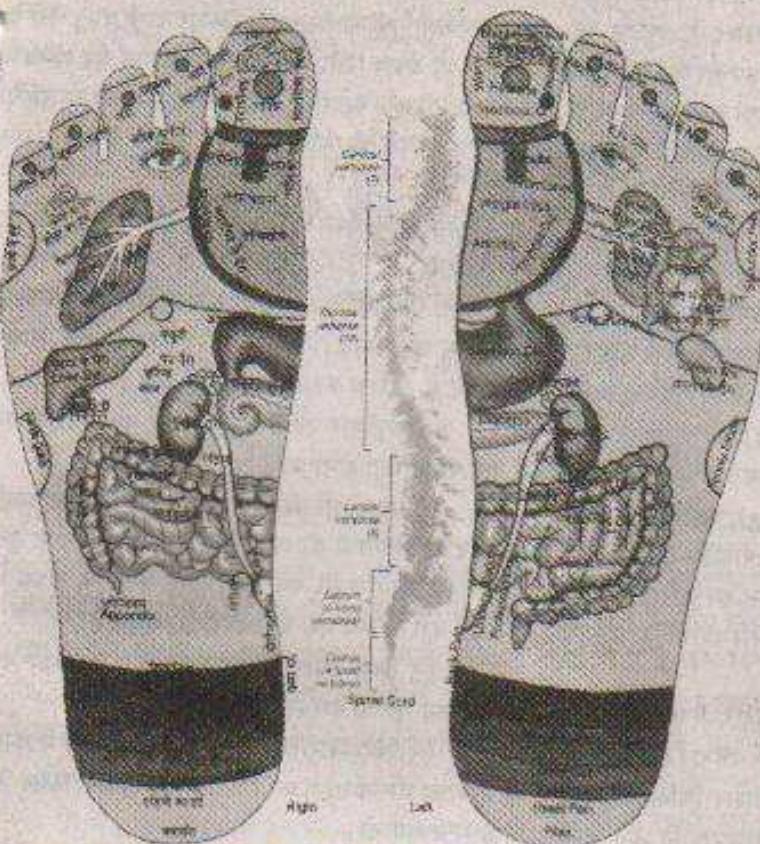
आयुर्वेद में वर्णित मर्म चिकित्सा किस प्रकार से बीब्ड मिक्स्युकों के द्वारा सुदूर दीन व जापान पहुंची और किस प्रकार से पहले एक्युप्रेशर और तत्पश्चात् एक्युप्रेशर के रूप में संशोधित होती हुई पुनः समस्त विश्व के साथ-साथ भारत में भी पहुंची तथा किस प्रकार से यह हमारे दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती है, इसी का संहित्पत्र विवेचन करता प्रस्तुत है यह विचार परक लेख...

**S** य विषय में संदेह के लिए कोई स्वान नहीं कि बलिष्ठ-मान्यता से निर्मित इस मानव शरीर में मांसपेशियों के बन में भी सर्वथा अलग कोई अन्य ऊर्जा होती है जो व्यक्ति को गतिशील, स्फूर्तिवान, चेतन्य, कर्मठ व प्रसन्नचित बनाए रखती है। बलिष्ठ शरीर ही स्वयं में स्वास्थ्य का पर्यावाची नहीं होता और इसी तथ्य को समझकर हमारे पूर्वजों ने, मनीषियों ने प्राण ऊर्जा की धारणा को समझ रखा था जिसे आज परिचयी शरीर वैज्ञानिक बायो एनर्जी (Bio Energy) के नाम से सम्बोधित करते हैं।

यह बात आज सारे विश्व में सुन्दरपित हो चुकी है कि भारतीय मनोविज्ञानी, किसी भी वैज्ञानिक से अधिक ही विज्ञान वेत्ता रहे हैं, यह बात अवश्य है कि उनका आवरण किसी वैज्ञानिक की अपेक्षा एक अधिक काही अधिक रहा। शरीर उनकी दृष्टि में सर्वात्मक नहीं बरन एक साधन भर ही था, शरीर से होते हुए उस परम तत्व तक की यात्रा ही उनका मुख्य लक्ष्य या किन्तु इस यात्रा के मध्य में उनके चिंतन से जो ज्ञान बिना

प्रिसूत हुए तथा जो पात्रतात्व व अन्य देशों के वैज्ञानिकों के माध्यम से विकसित हुए वे आज सभी के लिए मूल्यवान हैं। एक्युप्रेशर (Acupressure) का विज्ञान इसी विकास का एक सहन उदाहरण है जो मूल रूप में उन बीब्ड मिक्स्युकों की एक कला या एक विज्ञान है जिन्हें धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए सुदूर देशों की दुर्गम यात्रापं करनी पड़ी।

इन दुर्गम यात्राओं में वे अपने साथ अधिक साजो-सामान नहीं ले जा सकते थे और जिस तरह से अहिंसा के समर्थक होने के कारण उन्होंने आत्मरक्षा की एक शैली विकसित की, जिसे जापानी भाषा में युयुत्से और अंग्रेजी भाषा में जूडो कहा गया, एक्युप्रेशर भी इसी क्रम का एक अंग है जो मूलतः एक्युप्रेशर (Acupuncture) का संशोधित रूप है। चौन में पूर्ण रूप से विकसित हुई इस चिकित्सा विज्ञान की शैली का आधारभूत सिद्धान्त है इस मानव शरीर में प्रवाहित प्राण ऊर्जा जिसे चीनी भाषा में चौ और जापानी भाषा में की कहा गया है। इसमें कणात्मक व धनात्मक विद्यु जिन्हें चीनी



शाश्वत में चीन व यैंग का नाम दिया गया है, होते हैं जिनके कारण प्राण ऊर्जा का सहन प्रवाह बना रहता है।

जब इस प्रचाह में शरीर के किसी अंग विशेष पर वाध आ जाता है, तभी उस अंग से सम्बन्धित व्याधि उत्पन्न होती है। प्राचीन काल में ऐसे अवरोधों को समाप्त करने की जो शैली थी, वह पंक्चर कर देने अर्थात् छेद कर देने की थी। भारतीय जीवन में आज भी कई छेदन एवं गोदना गुदवाने की बात एक सामान्य सी बात है। आज विश्व के एक्युप्रेशर के विशेषज्ञ इस बात का अध्ययन करके चकित हैं कि किस तरह से भारतीय जन जीवन में आभूषण, चाहे वे स्थी छारा पहने जाने वाले हों अथवा पुरुष छारा, जाने अनजाने में एक्युप्रेशर के कार्य को किस तरह से सम्पादित करते हैं।

वर्तमान समय में जबकि एक्युप्रेशर का विज्ञान एक सुव्यवस्थित और विस्तृत विज्ञान का रूप ले चुका है तब चीनी, जापानी एवं कोरियन सिद्धान्तों के अन्तर्गत इसका अध्ययन एवं अध्यापन किया जा रहा है किन्तु सभी सिद्धान्तों के मूल

में जो बात है वह एक ही है जिसे Principle of Reflexology अर्थात् प्रतिविम्ब केंद्रों का सिद्धान्त कहा गया है। इस सिद्धान्त के अनुसार मानव शरीर के विभिन्न रूपों पर विभिन्न अंगों के प्रतिविम्ब केंद्र होते हैं जिनको प्रवाह कर उचित रौति से दबाव देने पर सम्बन्धित अंग का रोग समाप्त किया जा सकता है। चूंकि मानव शरीर में रत्नवाहिनीयों के अंतिम छोर अधिकाशक हथेली व पैर के तलुओं पर ही समाप्त होते हैं, इसी कारणवश पक्ष्युप्रेशर में इन दो स्थानों का महत्व विशेष माना गया है, किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि शरीर के अन्य भागों में ऐसे प्रतिविम्ब केंद्र नहीं होते।

एक्युप्रेशर का विज्ञान अपने सम्पूर्ण विस्तार में मानव की सम्पूर्णता से सम्बन्ध रखता है और प्रमाणों से यह सिद्ध हो तुका है कि इसमें कुछ भी ऐसा नहीं है जो अताकिक हो। मुख्य रूप से यह मनुष्य के शरीर विज्ञान से गहन रूप से जुड़ा है किन्तु इतने अधिक विस्तार में न जाने हुए भी इस विज्ञान की एक सहज जानकारी हमारे नित्य-प्रति के जीवन में अत्यधिक सहायक हो सकती है।

यूं भी हम अब येतन रूप से इसी विज्ञान का उपयोग क्या दिन में कई बार नहीं करते?

कोई बात भूल जाने पर मस्तक के अस भग को मसलना या गुही (मर्दन के पीछे) पर हाथ फेरना अथवा बैठनी की स्थिति में हथेलियों को रगड़ना ये सभी क्रियाएं वास्तव में एक्युप्रेशर की ही हो तो क्रियाएं हैं। एक्युप्रेशर का सामान्य से कुछ अधिक जानन के बाल हमें रोगमुक्त रहने में सहायता होता है वरन् इसके छारा हम अपनी मांस पेशियों में एक लचक बनाए रखकर उस शक्ति का विकास भी कर सकते हैं जिसे चिकित्सा विज्ञान की भाषा में रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति कहते हैं। आज के समय में जब नित नई शोधों से जान हो रहा है कि किस औषधि का क्या उपर्योग ग्राधाव या Side Effect होता है तब तो ऐसे विज्ञान को महत्व स्वयमेव कह मुझ अधिक हो

जाता है। केवल यही नहीं आज तो फिजियोलॉजिस्ट (Physiologist) भी इस बात को, भले ही दबे स्वर में, मानने पर विश्वा हो रहे हैं कि कई असाध्य रोगों का उपचार केवल मनुष्य शरीर में निहित आंतरिक ऊर्जा के विकास द्वारा ही संभव है और उनका ऐसा स्वीकार करना प्रकारोंतर से उसी भारतीय धारणा की पुष्टि करना है जिसमें मनुष्य को किसी विराट सत्ता का अंग कहा गया है, शरीर को मंदिर की उपमा दी गई है।

आगे कुछ ऐसे रोगों से सम्बन्धित एक्युप्रेशर चिकित्सा विधि प्रस्तुत की जा रही है जिनके उपचार में प्राप्त रोगी एक चिकित्सक से दूसरे चिकित्सक के पास चबकर लगाते रहते हैं किन्तु संतोष नहीं मिल पाता। 'एक्युप्रेशर' शब्द की उत्पत्ति लैटिन के शब्द से हुई है जिसका अर्थ होता है तीखी वस्तु अर्थात् तीखी वस्तु का दबाव। एक्युप्रेशर विज्ञान के अर्थ में यह दबाव - रबिंग (Rubbing), प्लकिंग (Plucking), पुश पंड पुल (Push and Pull), रोटेटिंग (Rotating) इत्यादि रूपों में वर्णित किया गया है किन्तु इन विशिष्ट विधियों का उपयोग साफ्ट चिकित्सक द्वारा परिस्थितियों के अनुरूप किया जाता है।

जहां तक इस लेख में प्रस्तुत विधियों का सम्बन्ध है वहां अंगूठे का सामान दबाव ही पर्याप्त रहेगा। इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि एक्युप्रेशर चिकित्सा विधि को तृहल में अथवा परीक्षण मात्र के लिए प्रयुक्त की जाने वाली विधि नहीं है, किसी भी विज्ञान की भाँति इसके भी अपने नियित नियम हैं और उनका पालन करना ही चाहिए यथा-

## एक्युप्रेशर उपचार के आवश्यक तथ्य

१. एक्युप्रेशर करने से पूर्व हाथ व पैर को साबुन से अच्छी तरह से धो कर स्वच्छ कर लें तथा तीलिए से भली भाँति पोछ कर सुखा लें।

२. इस विषय में सुनिश्चित कर लें कि जिस प्रकार की पीड़ा अथवा रोग है।

३. इस लेख के साथ प्रवर्णित बाट के अनुसार रोग विशेष से सम्बन्धित प्रतिविम्ब बिन्दुओं को चिन्हित कर लें।

४. एक्युप्रेशर प्रारूप करने से पूर्व लेट कर पहले दस बार तीव्रता से श्वास-प्रश्वास की किंवा सन्पन्न करें किर श्वास को अन्यत धीमे कर पांच-दस मिनट के पश्चात उसे सामान्य गति पर ले आये।

५. अब अपने हाथ के अंगूठे के ऊपरी पौर के शीर्ष भाग से सम्बन्धित बिंदु पर दबाव दें।

६. यदि रोगी सहन कर सकता हो तो सम्बन्धित बिंदु पर किसी नुकीली किंतु गोल किनारे वाली वस्तु जैसे पेन आदि से भी दबाव दिया जा सकता है। उचित यह रहेगा कि किसी भी मेडिकल स्टोर से इस कार्य के लिए जो सामान्यित उपकरण है, जिसे जिम्मी कहा जाता है, उसे ले कर उसका उपयोग किया जाए।

७. दबाव पहले बाएं (तलुवे या हथेली पर) फिर बाएं देना चाहिए।

८. एक प्रतिविम्ब बिंदु पर दबाव दस सेकेण्ड से लेकर अधिकतम एक मिनट तक देना चाहिए तथा सम्पूर्ण उपचार आधे घंटे से अधिक का नहीं होना चाहिए।

९. एक्युप्रेशर एवं स्नान के मध्य का अंतराल कम से कम आधा घंटा होना चाहिए।

१०. एक्युप्रेशर की चिकित्सा न तो खाली पेट अर्थात् निराहार की स्थिति में की जाती है और न ही भोजन के तुरंत पश्चात। भोजन करने एवं एक्युप्रेशर करने के मध्य का अंतराल कम से कम एक घंटा होना आवश्यक है।

११. जिस समय एक्युप्रेशर करें उस समय यथा सम्भव मल मूत्र के वेग से रहित रहें।

१२. एक्युप्रेशर चिकित्सा के सम्पूर्ण काल में हल्का एवं सुनाम्य भोजन ग्रहण करें जिससे वायु-विकार, कूल जैसे दोषों से बचाव रहे।

## आप भी कर सकते हैं एक्युप्रेशर उपचार

एक्युप्रेशर करते समय इस बात का ध्यान रखें कि यह किया हड्डी पर आपरेशन हुए, कटे अथवा फ्रेक्चर हुए अंगों पर प्रयोग में नहीं लाई जाती है। एक्युप्रेशर की किया में जब दबाव को हटाएं तो रक्त का प्रवाह नियमित करने की वृद्धि से एक हल्के से हटके से हटाएं।

एक्युप्रेशर ऐसी चिकित्सा पद्धति है जिसे कोई भी व्यक्ति, स्वयं पर सम्पन्न सकता है। आगे कुछ ऐसी समस्याओं के प्रति एक्युप्रेशर की चिकित्सा विधि प्रस्तुत की जा रही है जिनमें से किसी न किसी समस्या से समाज का यदि हर दूसरा व्यक्ति नहीं तो तीसरा या चौथा व्यक्ति ग्रस्त मिल जाएगा।

### १. उदासीनता (Depression)

उदासीनता व्यष्टि मानव मस्तिष्क की एक स्थिति है किन्तु जहां तक चिकित्सा विज्ञान का सम्बन्ध है, उसे शारीरिक रोग की श्रेणी में ही रखा गया है क्योंकि ऐसी स्थितियों में व्यक्ति के हार्मोन्स का साव अनियमित जो हो

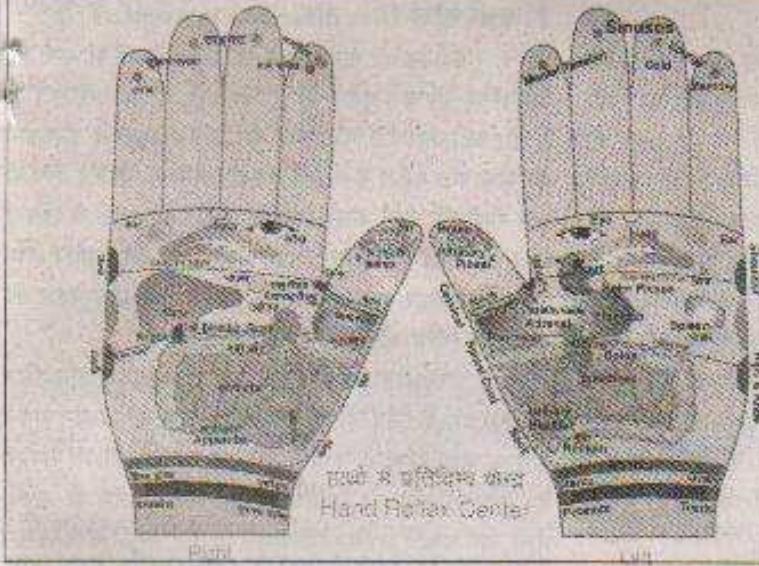
जाता है तो समस्या पाके साथ के लिए न देकर उपचार

## 2. अग्नि

वरन चिकित्सा विशेष है, अव्यवस्थित एक परिणाम इसके नियम कुछ नीचे होता है। लिए आवश्यक चिकित्सा

## 3. उच्च

रोगी उच्च रोग से अधिक म शारीरिक



जाता है तथा इस अनियमित भाव को नियमित कर इस समस्या पर नियंत्रण भी प्राप्त किया जा सकता है। इस लेख के साथ के चित्र में प्रदर्शित चार्ट में हाथ व पांव में पिण्डित, पुँडेनल, वायराइड व पिट्टूट्री जन्धि के बिन्दुओं पर दबाव देकर उदासीनता का रोग शनैः शनैः दूर भी किया जा सकता है।

## 2. अनिद्रा (Amnesia)

जिस प्रकार से उदासीनता स्वयं में कोई रोग नहीं है वरन् विविध कारणों से नियमित हुई मस्तिष्क की एक दशा विशेष है, उसी प्रकार से अनिद्रा भी कोई रोग नहीं वरन् अव्यवस्थित जीवन शैली, दोषपूर्ण भोजन, तनाव इत्यादि का एक परिणाम भर ही होती है। एक्युप्रेशर चिकित्सा पद्धति में इसके लिए एक सहज सा उपाय है – कलाईं पर मणिबंध से कुछ नीचे, मध्य भाग में हल्का सा दबाव देना शीघ्र फलदायक होता है। यदि कोई व्यक्ति अनिद्रा का पुराना रोगी है तो उसके लिए आवश्यक होगा कि उसे चार्ट में प्रदर्शित कमर तथा मस्तिष्क के रिफ्लेक्स बिन्दुओं पर एक्युप्रेशर की नियमित चिकित्सा दी जाए।

## 3. उच्च रक्तचाप (High Blood Pressure)

**समवतः**: इस समय सम्पूर्ण विश्व में जितने अधिक रोगी उच्च रक्त चाप से पीड़ित होंगे, उतने किसी भी अन्य रोग से नहीं। यह तो स्पष्ट है कि आज मनुष्य को जितना अधिक मानसिक श्रम करना पड़ता है, उसकी तुलना में उसका शारीरिक श्रम नगण्य ही रहता है। शारीरिक श्रम से हुई थकान

तो फिर भी विश्राम करके, निद्रा के द्वारा समाप्त की जा सकती है किन्तु जहाँ मानसिक श्रम के द्वारा थकान आती है वहाँ सामान्य विश्राम भी कोई विशेष लाभप्रद नहीं सिद्ध होता। एक्युप्रेशर चिकित्सा के सिद्धान्त के अनुसार मानसिक श्रम, चिंतन, छब्बी, उलझन या विचार विमर्श की स्थिति में तीव्रता से प्राण ऊर्जा के क्रणात्मक व धनात्मक कण योंन व दैग कुछ विशेष स्थानों पर संग्रहित से हो जाते हैं तथा इस संग्रहण को समाप्त करने

के लिए रक्त का प्रवाह तीव्रता से बढ़ जाता है जो ऐसी Blocking को मानो भी देना चाहता है तथा यही तीव्र रक्त प्रवाह व्यक्ति के समक्ष उच्च रक्त चाप के रूप में आता है। एक्युप्रेशर चिकित्सा पद्धति में इस असंतुलन को नियंत्रित करने के लिए एक सहज सा व्यायाम है। चार्ट में प्रदर्शित हथेली व पैर के तलुए में डबय के रिफ्लेक्स बिन्दु पर नियमित रूप से दबाव देकर इसे नियंत्रित किया जा सकता है।

## 4. शिरदर्द (Migraine)

शिरदर्द एक सामान्य पीड़ा है जो कभी भी किसी भी व्यक्ति को तनाव, अप्याप्ति नीद, तेज धूप, सर्दी, जुकाम, चिंता से हो सकती है किन्तु जहाँ यह नियमित रूप से बनी रहे तो व्यक्ति का सामान्य जीवन अव्यवस्थित होने लगता है। शिरदर्द का एक विशेष रूप होता है – आधा सीसी वा माझेन का दर्द जो सूर्योदय से प्रारम्भ होकर दिन भरने तक इन्हीं तीव्रता से होता है कि इसका रोगी मुँह दांक कर बिस्तर में पढ़े रहने अतिरिक्त और कुछ कर ही नहीं सकता। माझेन का प्रायः कोई उपचार भी नहीं है। हावटर रोगी को दर्द निवारक दवाएं देकर, चाय-काफी, चाकलेट से परहेज करने को कह कर ही रह जाते हैं। एक्युप्रेशर चिकित्सा पद्धति में इसके लिए एक बेहव मामूली सा व्यायाम है जिसे कोई भी माझेन का रोगी सहजता से अपना सकता है। माझेन के रोगी को चाहिए कि वह नियमित रूप से हाथ व पांव की सभी उंगलियों के पोरों पर यानि इस बिन्दुओं पर दबाव दें या किसी के द्वारा ग्रहण करे।

सा

'र  
वाली हैं, स  
समर्थन व  
चलदेदया'  
साधना स  
साधना उ  
द्यावजूद उ  
तारा यंत्र।

भी धन्व  
में कुछ ऐ  
इसके प्रा  
सोत निव

जीवज

में, मंगल  
आनन्दित  
होगा और

नि: शुल्क  
) की बी.  
20 परिका  
सिद्ध प्राण  
ना, पी. उन

सा

Maitra-T

## 5. कमर दर्द (Back Pain)

मनुष्य के शरीर की संरचना इस प्रकार से है कि कूल्हे के ऊपर, शरीर का सारा बोध केवल एक रीढ़ की हड्डी और उससे सम्बन्धित मांसपेशियों के तालमेल पर ही आधारित होता है और जब कभी यह तालमेल अत्यधिक अम्या अत्यधिक विश्रान्त से गड़बड़ा जाता है तभी कमर के दर्द जैसी व्याधियों की उत्पत्ति होती है और जहाँ ऐसी स्थिति हो अर्थात् रीढ़ की हड्डी में कोई रोग, दुर्घटना, विकृति जैसा कोई विशेष स्थिति न हो, एक्युप्रेशर चिकित्सा विशेष फलप्रद सिद्ध होती देखी गई है।

चार्ट में प्रदर्शित प्रतिविम्ब केन्द्रों के साथ-साथ जांघ के भीतरी भाग में छुट्टों से ऊपर, दो-दो अंगुल के अंतराल पर, गुन्ठांग से कुछ पहले तक एक्युप्रेशर की क्रिया करना कमर के दर्द में शीघ्र झाँकारी रहता है।

## 6. कूलहे व जांघ का दर्द (Sciatica Pain)

जिस तरह से कमर का दर्द व्यक्ति को उठने बैठने तक में असमर्थ कर देता है, उससे भी अधिक पीड़ावायक होता है कूलहे व जांघों का दर्द जिसे चिकित्सकीय भाषा में साइटिका का दर्द कहते हैं।

साइटिका एक नाई होती है जो भेस्टर्जनु या रीढ़ की हड्डी के मध्य भाग से प्रारम्भ होकर दोनों नितम्बों से होती हुई दोनों पांवों में विस्तृत हो जाती है। साइटिका दर्द का मुख्य कारण तो रीढ़ की हड्डी में आए किसी आधात या विकृति को ही माना जाता है जो नितम्ब के पृष्ठ भाग से प्रारम्भ होकर पिण्डों, टखने तक एक तरंग के रूप में जाकर रोगी को चलने किसने तक से लाचार कर देता है किन्तु भाथ ही साथ शरीर में गूरिक पसिद्ध की रुकावट होना भी इस दर्द का एक प्रमुख कारण होता है।

पोछे दिये चार्ट में प्रदर्शित साइटिका चक्र के साथ साथ पाचन तंत्र, मूत्र तंत्र तथा दायराफ्राम के रिम्लेक्स बिन्दुओं पर एक्युप्रेशर की क्रिया करना तो इस रोग के उपचार की विधि है ही, साथ ही साथ एक अन्यतंत्र साधारण सा भी एक्युप्रेशर करना विशेष उपयोगी रहता है। ऐसे दर्द के रोगी को चाहिए कि यदि वह और कुछ न कर सके तो भी नियमित रूप से हथेली के पिछले भाग में, तर्जनी व अंगूठे के मध्य का जो कोमल भाग होता है उस पर अंगूठे से दिन में तीन बार समान अंतराल पर कम से कम बीस मेकेप्टु तक दबाव देकर हाथ के झटके के साथ अंगूठे को उठाए।

## 7. स्त्री दोष (Sex disorders in women)

प्रजनन का कार्य करने के कारण किसी भी स्त्री की आन्तरिक संरचना पुरुष की जपेशा कही अधिक नटिल होती है और वही कारण है कि स्त्रियों को विविध प्रकार के रोग होने की संभावना रहती है। यहाँ हमारा अभिप्राय विशद रूप से स्त्री रोगों की बचाव करना नहीं है अपितु बहुतायत से स्त्रियों जिन दो रोगों से ग्रसित पाई जाती हैं — श्वेत प्रदर तथा अनिश्चित मासिक धर्म — उनसे सम्बन्धित एक्युप्रेशर की चिकित्सा विधि को प्रस्तुत करना है।

एक्युप्रेशर चिकित्सा विधि में श्वेत प्रदर व अनिश्चित मासिक धर्म के लिए जो पद्धति बताई गई है वह अत्यंत सहज होने के साथ साथ रोगिणी द्वारा स्वयं सम्पन्न की जा सकती है। ऐसी रोगिणी को चाहिए कि वह अपनी नाभि से ऊपर, नीचे, दायेव बाएं, नाभि से दो अंगुल या तीन अंगुल के अन्तराल पर क्रमशः चार बिन्दुओं को अपने अंगूठे से गहरे किन्तु हालके दबाव के साथ सात से दस सेकेण्ट तक दबाइ तथा यही क्रिया आठ दस घंटे के अंतराल पर दिन में स्वयं सम्पन्न करे। चारों बिन्दुओं की स्थान रूप से दबाव दें तथा यह क्रिया एक चक्र में अर्थात् पहले ऊपर का बिन्दु फिर बायां बिन्दु फिर नीचे का और अंत में दायां बिन्दु सम्पन्न करे।

## 8. अस्तीर्ण में प्राण ऊर्जा के सतत प्रवाह हेतु

एक्युप्रेशर जैसा कि प्रारम्भ में कहा बौद्ध धिशुकों द्वारा सुनित एक आध्यात्मिक शैली ही है। यह नूज रूप से स्वयं को ऊर्जावान, चैतन्य और तनाव रहित रखने का ही विज्ञान है। कोई स्वस्थ एवं व्याधि रहित व्यक्ति भी इसका अपने जीवन में प्रयोग करके लाभ ले सकता है। कोई भी स्वस्थ स्त्री या पुरुष जो इस बात में रुचि रखता हो कि उसकी ऊर्जा आयु के बर्बाद के साथ भी अद्भुत बनी रहे वह एक सरल सा प्रयोग करके लाभ स्वयं अनुभूत कर सकता है। हथेली व कोहनों के मध्य भाग में नित्य दो मिनट का दबाव देना और ऐसा दोनों हाथ में करना, अपने आप में एक तरह से कायाकल्प करने की क्रिया है।

एक्युप्रेशर चिकित्सा पद्धति स्वयं में पूर्ण चिकित्सा पद्धति है जिस पर शरीर वैज्ञानिक निरंतर शोधरत हैं। इस लेख में केवल उन्हों रोगों का वर्णन किया गया है जो आज सामान्य हो गए हैं। उपरोक्त विवरण यथापि पूर्ण प्रमाणिक एवं अनुभव सिद्ध है कि भी पाठकों को चाहिए कि वे अपने व्यक्तिगत चिकित्सक से सलाह लेकर ही इन प्रयोगों को सम्पन्न करें।

# सम्पूर्ण ऐश्वर्य प्रदायक तारा यंत्र

'साधकगानों सुखं कर्त्ता सर्व लोक भयांकरीम्' अर्थात् भगवती तारा तीर्त्तों लोकों को ऐश्वर्य प्रदान करने वाली हैं, साधकों को सुख देने वाली और सर्व लोक भयांकरी हैं। तारा की साधना की श्रेष्ठता और अनिवार्यता का समर्थन वरिष्ठ, विरचामित्र, रावण, गुरु गोरखनाथ व अनेक ऋषि-मुनियों ने एक स्तर से बिद्या है। 'संकेत वन्द्रोदय' में रांकराचार्य ने तारा साधना को ही जीवन का प्रमुख आधार बताया है। कुटुंब भी भगवती तारा की साधना से ही भतुतनीय भण्डार को प्राप्त कर सका था। तारा साधना अत्यंत ही प्राचीन विद्या है, और महाविद्या साधना होने के बावजूद भी रीष्म सिद्ध होने वाली है, इसी कारण साधकों के मध्य तारा यंत्र के प्रति आकर्षण विशेष रूप से रहता है।

**विधि:** इस यंत्र का त्रूपा स्थापित हो स्थापन कर, कुंकुम अक्षत, धूप, दाप, पुष्प व पूजन कर, फिर निम्न दस गिनट मंत्र - 'ॐ ह्ली त्री हु फट् का २ माह तक जप कर।'

वर्तमान समय में ऐश्वर्य और आर्थिक सुखदत्ता ही सफलता का मापदण्ड है, पुण्य कार्य करने के लिये भी धन की आवश्यकता है ही, इसी लिये अर्थ को रास्तों में पुरुषार्थी कहा गया है। साधकों के हितार्थ शुभ मुहूर्त में कुछ ऐसे यंत्रों की प्राप्ति प्रतिष्ठा कराई गई है, जिसे कोई भी व्यक्ति अपने घर में स्थापित कर कुछ दिनों में ही इसके प्रभाव को अनुभव कर सकता है, अपने जीवन में सम्पन्नता और ऐश्वर्य को साकार होते, आदि के नये नये लिखलते देख सकता है।

## जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान - "ज्ञान दान"

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएँ प्राप्त कर मर्दिरों में, सन्मानितों में, समाजों में, मंगल कारों में, बालगों को, निर्धन परिवर्ती को याम वर चक्कते हैं और इन प्रकार उनके जीवन को भी इन योग्य जन के प्रकाश में आलोकित कर सकते हैं, जो अप्सा तक इन्हमें बनेंगे हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक जन के शोलनात्मक जन के शोलनात्मक प्राप्त होंगे और उनका जीवन इक शेरू पर अधिक ढो गयेगा।

## आप कैसा छठें?

आप केवल एक वर्ष 'सम्बसित प्राण प्रतिष्ठित ऐश्वर्य प्रदायक तारा यंत्र' 365/- में दें, कि 'मैं २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएँ मंगाना चाहता हूँ। आप निः शुल्क 'मंत्र-तत्र-यंत्रतिज्ञान' द्वा. श्रीमाली मार्ग, वाईकोट कालानी, जोधपुर - ३४२००१, (राज.)

निः शुल्क 'मंत्र-तत्र-यंत्रतिज्ञान' २० पूर्व प्रकाशित पत्रिका के ३००/- + डाक व्यय ६५/- की बी. पी. पी. से भिजवा दें, बी. पी. पी. आपे पर मैं पोस्टमैन को धन राशि चेकर द्वालंगा। बी. पी. पी. छठने के बाव मुझे २० पत्रिकाएँ रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें।' अपका पत्र आपने पर ३००/- + डाक व्यय ६५/- = ३६५/- की बी. पी. पी. से 'मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित ऐश्वर्य प्रदायक सारा यंत्र' भिजवा दें, जिससे कि आपको यह दूलग उपदार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो जाए।

## सम्पर्क - आपका पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

**मंत्र-तत्र-यंत्रतिज्ञान** द्वा. श्रीमाली मार्ग, वाईकोट कालानी, जोधपुर - ३४२००१, (राज.)

फोन - ०२९१-४३२२०९, फैक्स ०२९१-४३२०१०

Maitri-Yatra-Vigyan, Dr. Shrinath Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India. Phone - 0291-432209

# छुरुद्वारा दिल्ली

किस गुणि पर सेवने प्रयोग और वार्षिक दीक्षाएं  
आवश्यक हो जाती हैं, जब लिंग पैतृज्ञ विद्या भूमि -

**पर तो दिल्ली शासनात्मक प्रयोग**

सामस्त साधकों एवं दिव्यों के लिए यह योजना प्रारम्भ हुई है, इसके कल्पनात् विश्ववि दिवसों पर मिली 'विजयदशम' में पूर्ण गुरुदेव के निर्देशन में ये साधानाएँ पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पूर्ण कार्य होती हैं, जो कि उस दिन शाम ५ से ७ बजे के बीच सम्पूर्ण होती हैं और यदि अच्छा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधना सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

जाईना मे भाग लेने वाले रास्तक  
को यत्र पूजन रामर्गी आदि संस्था  
द्वारा निशुल्क उपलब्ध होनी धीरी,  
पुष्टी और पवित्र अपने साथ मे लाव  
गा त हो तो यह ऐ प्राप्त कर लो।

222-2000 गैलतोड

असु यादा तिक्कानण प्रयोग

यह उत्तर का विधान है कि समस्त लाभ और हानि ग्रहों के अधीन है और इप्पनिये अनुकूल यह होने से लाभ या अनुकूल सफलतार और ग्रहों का प्रतिकूलता पर दुष्परिण मधोगणों ही पड़ते हैं। इक्षत्र पर्य पर ग्रहों की वर्तमान गति शीघ्रण विपर्यायों का सकान देती है। नये वर्ष का भारमण गी उन्साहवर्धक नहीं कहा जा सकता। इस वर्ष चतुरश्चाहों पञ्चश्चाहों आदि आपत्ति जनक कुयोग अनेक अवसरों पर उपस्थित होने जा रहे हैं। मगर संकालित के तन्काल बाद २५ जनवरी पौष पूर्णिमा को चन्द्रग्रहण तो है ही, भगवे स्थान की पौष पूर्णिमा भी चन्द्र ग्रहण ध्यक्त रहेगी। वह अच्छा संकेत नहीं है। परन्तु साधक ग्रहण को उपर्योग सुअभ्यर मान कर भी साधना ग्रापन कर पूरा पूरा लभ उठा सकते हैं। ३२ फरवरी को एसे गोरे है जब हमना नद्यात्र, यिद्यु वोग, मग्नलवार्य चतुर्थी है। इस तिन स्वयं परम पूर्ण्य गुरुवेव ग्रह वोष निवारण प्रयोग सापन्न कराने जा रहे हैं। इस अवधि का लाभ उठाना निश्चय ही माल्याद्यग्रह कारण है।

— २०८ दिनों के अवधि वे शाही ब्रह्मण्ड के लिए उपर्युक्त गमन से प्रो-

- अपने किसी दो मित्रों प्रश्ना स्वरूपों को (जो पाइका के सदरम नहीं है) मत्र-तत्त्व वा पिडान परिका का विशेष सदस्य बनाकर दिल्ली पुस्तकालय में सम्पन्न होने पले किसी एक प्रदाने में भाग ले सकते हैं। परिका जो सदरमान का एक वर्णित शुल्क ₹ 225/- है परन्तु आपको मात्र ₹ 436/- ही जमा कराने हैं। प्रदान तो सम्बन्धित विशेष मत्र किंवदं प्राप्त परिकित रामायी (वत्र गुटेका आदि) आपको चिरशुला प्रदान की जाएगी।
  - भवि आप परिका शब्दम नहीं है तो आप स्थैतिक अपने किसी एक मित्र के लिए परिका वाचिक सदस्यता छाप तर उपरोक्त किसी रामान में जागा ले सकते हैं।
  - परिका सदरम बनाकर आप किसी एक परियार को ज्ञाति प्रस्तुता की इस पाठ्यन साधारणतम् इन धारा में जोड़कर एक पूरी एवं पुण्यवादी कार्य लक्ष्य है। यदि आपके उत्तरास में एक परियार में अध्यया कुछ प्रतियोगी में इक्षरीष छिन्नान साध्यनामक चिन्तन आ गता है तो यह आपके जीवन वाली सफलता का ही प्रतीक है उत्तरासक प्रयोग दो संख्या निश्चल हैं और युक्त कृपा दर्श ही उत्तरास स्वरूप साधक के प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की व्यौक्तिकर राशि को अर्थ के तराज में नहीं लैज सकते।

**खोटो दासा 'मालिनी  
भद्रिया' की काँड़े रेत दासा**

自古以來，中國人對「孝」的尊崇，

आप चाहें तो निधारित विवरों से पूर्ण हो अपना काम। एवं न्यौत्तम गणित का बैंक डाटा (‘भ्रंग तथा व्यवस्था’ के नाम से) मजलका भी उन विवरों पर होने वाली दीक्षा वो प्राप्त कर सकते हैं। आपका कोटों एवं पांच गणितों के पाते दिल्ली कालानवाय की समय पर प्राप्त हो सकें, इस द्वेषु आप अपना पवन स्पीड-प्रोस्ट डारा ही मजें। पवन विलान्स में मिलने पर गीता सम्पन्न न हो सकती।

भाषु, आरोग्य, भ्रग, उन्मत्त, पश्चम शौनकीय से संपत्ति घर्म वर्णी।  
भाजाकाण्डे पुर और अन्य यमी सूख उन समय बैकाए लगते हैं जब धन का  
निपात अग्रवाल हो। हमरे ऋषि-प्राचीनोंने ऐसे उनके उपाय बताये हैं, जिनमें  
जर्म का अभाव पूर किया जा सकता है। बृधवार के द्विं अनुत शिष्ठि योग  
विना नष्टज्ञ के साथ ही गूदेज्ञ बृध और गूद्य युक्त हो तब लक्ष्मी में संबन्धित  
साधना अथवा साकल होती है। और फिर जब परम पूज्य गुरुठेव रथ पूजा  
जाकर्सिक धन ग्राहित को विशिष्ट रथयोगे में युक्त साधना समझो पर वह  
प्रयोग साधनों को भ्रमन कराये, तो विश्चय हो यह ऐसा अवसर है जिसे  
किसी भी कामत पर हासिल कर लेना हो चाहिए। आप अपने परिवार के अन्तर्य  
मन्दिर के लिये भी इस प्रयोग का सामग्र कर आकर्षिक धन ग्राहित यत्र उसे  
मेट में लेकर उसे अवसर प्रदान कर सकते हैं।

२४ दिसंबर २००० गुरुवार कार्तिक अर्जुन साधना

दक्षिण भारत में गजबान शिव के पुत्र कात्येक्य का प्रभाव पग-पग पर दृष्टि बर होता है। शिव के परम पश्च कात्येयाज्ञुन की साधना कथा निष्पत्ति नहीं जातो। जीवन में उम्रें, उत्साह, संभव, और गरोर की चाल-चाल, अवधार में श्रद्धा प्राप्त करने की आपकी उपचार है अथवा अपनी वापर में विदि किसी को भी प्रभावित बनने की उच्छ्वा है तो वह साधना भनुकूल है। यदि आप किसी भजात आशंका से सब दा मन से गम देर-देर से रहने हैं, भोजन भी राचिकर नहीं लगता, तो पिङ्चय गणिते आप किसी अज्ञात श्रव और अनिष्ट से बस्त है। इसके निवारण के लिये कात्येयाज्ञुन त्रयोग गुरुवार स्वाती नववत्र सर्वार्थ सिद्धि योग में २४.२.२००० को भा पत्र करना पिङ्चय ही सीमाप्रद है। अपने परिवार के किसी प्रियजन के लिये भी इम अवसर पर प्रयोग कर कात्येयाज्ञुन यंत्र मेंट देकर उन्हें कार्य किया जा सकत है।

- दीक्षा आज के दृग्गणे पुक प्रान्तिक ठापत है साइलना की ऊड़ोंवों को प्राप्त कर लेने का, जीवन के उभार के अप्राप्यता को दूर कर लेने का, जीवन में अद्वितीय ब्रह्म, साक्ष, दीक्षा एवं शीर्ष प्राप्त कर लेने का, यादाना में सिद्धि प्राप्त कर लेने का

- गुरु पदव शिल्पात् द्वारा उत्तम नियं  
कारी हेतु उन मीठा प्राप्त करता है। उसमें  
त्रिपुणि प्राप्त कर सकता है। कर्मोंके वह  
संबलता ही अकेला प्राप्त करते हैं का  
प्रत्येक लाभ होता है।

- दीक्षा में भाग लेकर ताले सही साधारणी का जल ये अमृत अधिकै करने के उपरान्त विशेष शक्तिप्रद प्राण किया जाता है। इस दीक्षा इन तीनों दिवसों को समाप्त करने प्रवाली की जाएगी। दीक्षा के उपरान्त एक उपरोक्ती संज्ञ प्रदान किया जाएगा।

- [View Details](#) [Edit](#) [Delete](#)

किन्तु पांच व्यक्तियों  
को उपर्युक्त लकड़ी बनाकर  
उनके भालू पते लिखा जा सकता है।

शक्तिपात्र युक्त दीक्षाण्

## मातंगी महाविद्या धीक्षा

• 1125 •

आज के इन मशीनी युग में जीवन अपनावत हुठ और नेप्पा बनकर रह जाया है। जीवन में सरस्यता, आनन्द, श्रीम विलास, ऐन, सुखोच्च पान एवं प्राप्ति के नियम प्राप्ति का जनन उपयुक्त मानी जाती है। इसके अलावा भाषण में वाक् सिद्धि के गुण भी अनेक उपर्युक्त भाषणोंवाली वाणी में माध्यम ओह समझ ला देते हो गाती है और नव वह लोगों के बोध बोलता है, जो मुनि वाले उसको जानी सम्भव हो नहीं है। इससे शारीरिक स्व-नियंत्रण करने में बहुल होते हैं, ऐसे लोगोंमें जीवात्मा होता है। इस वीथा के माध्यम से हृदय में निरां आनन्द एवं कृपा संवार होता है, उपर्युक्त हास्य का संचार होता है, उसके पक्षतः हनाएँ कीरियाँ भी रंग तबाह रहती हैं। इष्ट जीवन्यक भज एवं जीवन्द से जीत-प्रीत बना रहता है।

सम्पर्क : शिवाश्रम, 306, कोहाट स्कलेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली - 34, फोन ०११-७१८२२४४३, ईमेल : ०११-७३९६३४४

‘फलवरी’ २०१० मंत्र-तत्त्व-योग विज्ञान ‘८१’

“बिट पूजन प्रभु पांवरी  
प्रीति न हृदय समाति”

# अविद्यलयात्रा जारी है



## 1 जनवरी संब 2000, गुरु तत्त्व पूराभिषेक दीक्षा शिविर, बड़े दिल्ली

बड़े सहस्राब्दि के प्रथम दिन, निसर्जी भूत्यंत उत्सुकता के साथ सब को प्रतीक्षा दी प्रातः काल में उग्गल और महसो का अपलम छाया हुआ सा, पीन परिज्ञान में आवेद्यता साधक काव्यतुल्य लग रहे थे। सूर्य की चुनहरी किरणों एवं व्यापावावरण छुला हुआ, रमणीय तथा सुखद प्रनीत की रहा था। विशिष्ट वेतन्य पूरव के शिष्यत्व से जीरकान्वित साधकों के मुद्रमाडन प्रसान्नता की आगा से तुलिकात दिखाई दे रहे थे। परे आवोचक स्थल पर, इधर-उधर से, देश-विदेश से आये हुए झुण्ड के झुण्ड साधक अपने अपने शीर्षाभ्यं का अराह रहे थे, अलग-अलग स्थानों पर त्ये-पुराने साधक अपने उनुभव शुना रहे थे, गुरु तत्त्व, साधना एवं मिश्रि से सम्बन्धित ज्ञानात्मि में निपान्न थे। अप्रत्याशित भी इ बढ़ता ही ना रही थी। झुण्ड के झुण्ड विशिष्ट स्थानों से, देश के कोने-कोने से बरसे, गाहियों एवं कालों में आने जा रहे थे, जबकि एक झलक अपने गुरुदेव को देख जो के लिये, चुनने के लिये, उनके चश्माओं में बढ़ने के लिये। भव्य एवं सम्भित पराङ्मान में सम्बन्धित लोगों से बिठे साधकों की दखलकर निश्चयन रूप से मगवत् पूर्णपाद सद्गुरुदेव निष्पत्ति प्रसन्नता से भर रहे हैं।

यहाँ के आवोचकों या किसी को भी इननी अप्रत्याशित उपस्थिति की नाप्राप्तना नहीं थी, क्योंकि दिल्ली की शीत लहर से यागा परिवर्त थे, किन्तु भी गुरुदेवन की लालसह उड़े धर में बंध रहने के लिये बाल्य नहीं कर सकी। आयोनकों ने उत्साह और साहस का परिचय दिया, किसी को फहाँ भी किसी प्रकार गिरकरत का मोका नहीं दिया। गुप्त गृहन अभृत काल में श्री शास्त्री जी द्वारा कर्त्तव्य गुरु पूजन एवं गणेश पूजन के साथ ही भूर्ण वातावरण गुरुमय होने लगा। वेद मंत्रों की अवन्मय पूरा पांडाल वेतन्य होने लगा था तथा जाम पान आ दोन मव पूत आरोग्य की तरफ, स्थलों के साथ लगने लगा था।

इन्हें बाद स्वर्णितवाचन के साथ परम पञ्चाय नाना जी ने पश्चाल में पदार्पण किया, नाथ में यून्य शुरुदेव नन्दकिशोर

श्रीमाली जी,  
गुरुदेव श्री अ  
की भोर ब्रह्मा  
मोता जी की  
उद्भवित र  
सद्गुरुदेव न  
किया नथा दा  
का विधिवत  
नव

जय प्रकाश न  
मश्र धारा स  
कर रही थी त  
दोपक आन  
करने जा रह  
रावपाल जी  
पूजनीय मान  
यून्य समर्पि  
गुरु विभूति  
ज

श्रीमाली जी  
का उद्बोधन  
में आप सभी  
आज इकका  
शक्ति वीर  
से मैं अवयन  
रहता, विश्व  
शिष्य अपन  
पापगी, कर  
आपकी एक  
का उद्देश्य न  
है कि हम वि  
कि इन्हीं म  
हुए। पूर्णप  
निष्पत्ति र आ

नवी स्टार  
प्रवर्या बा  
कल्पना क  
पूर्णमित्र

श्रीमाली जी, पूज्य गुरुदेव कौलाश चन्द्र श्रीमाली जी, पूज्य गुरुदेव श्री अवधिन श्रीमाली जी धीर भैरव मंदिर से मंब का ओर चढ़े। हनुरोग माधको के मगन भेड़ी जब बैठे। 'पूजनीय माता जी की वय, परम पुज्य गुरुदेव जी जब' से पूरा परहाल उद्भवित हो रहा था। मन पर सुन्मन्त्रित भगवत्पाद सद्गुरुदेव जी के चित्र पर पूजनीय माता जी ने माल्यार्पण किया तथा वाप प्रन्नवलित करके नवे सहस्राविद दीक्षा माराह का विधिवत् उद्घाटन किया।

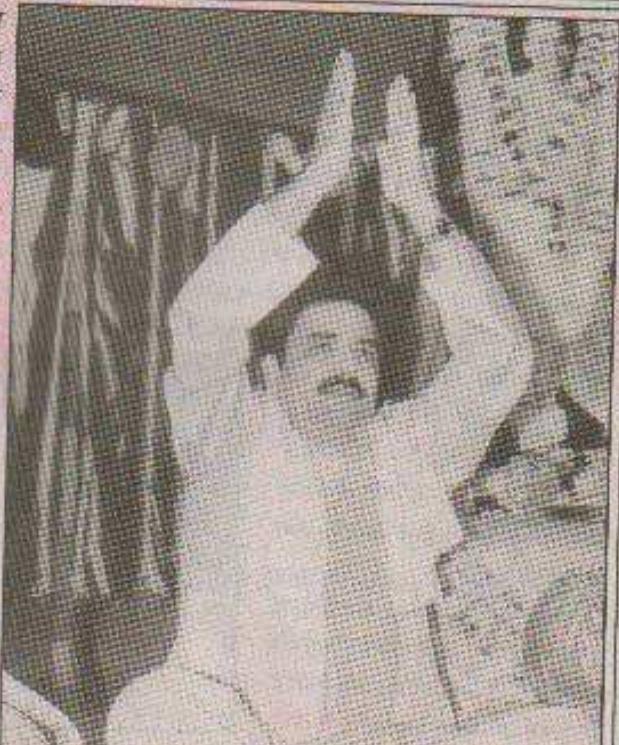
नव शताब्दी के प्रारम्भ के इस प्रक्षेपण में भाई गय प्रकाश के गुरु आचार्य से हनुरोग-हनुरोग आखे अतिरिक्त ग्रन्थ भाग से पृष्ठित हो गई, वे शार्खे इस कृताज्ञता का अनुभव कर रही थी कि भगवत्पाद सद्गुरुदेव के द्वारा प्रन्नवलित थे ही प्रकाश पुंज बन गये हैं, जो उन्होंने की सरकना करने जा रहे हैं। इसके बाद डॉ० राजेन्द्र सिंह ढल प श्री राजपाल जी ने अपने परिवार के माझे स्वरूपों के साथ पूजनीय माता जी तथा गुरु त्रिमूर्ति और स्वामीत हेतु चरणों में पूज्य स्फायेत किये। लंबन से पर्यार श्री राजेश परमार ने भी शुरु विश्रान्ति व माताजी के चरणों में पूज्यार्पण किया।

अपने उद्घाटन प्रावण ने पूज्य गुरुदेव नन्दकिशोर श्रीमाली जी ने उपस्थित शिष्यों, साधकों एवं शार्खिकाओं का उद्घाटन करते हुए कहा— 'मैं इस सहस्राविद के प्रारम्भ में आप सभी को अपने हृदय से लगाकर आपार प्रगट करना चाहता हूं, बहुत दिनों से मुझ रहा था, नई सहस्राविद आ रही है। और आज इक्कीसवीं शताब्दी में प्रवेश हुआ है। यह प्रवेश अपने हृदय के भाष्यों के साथ हुआ है, शीत लहर की परवाह किए बिना नारायण शक्ति पीठ में निश्चिल शिष्यों का प्रवेश हुआ है और निश्चिल शिष्यों में नारायण शक्ति का प्रवेश हुआ है। आप सभी की उपस्थिति से मैं अत्यंत आह्वानित हूं। श्रद्धा और विश्वास अलग नहीं हैं। श्रद्धा का अर्थ है नहीं अपने इष्ट के अतिरिक्त कुछ नहीं रहता, विश्वास का अर्थ है कुनकों को छोड़कर किसी बात को स्वाक्षर करना। श्रद्धा ही गुरु तत्व है, नारायण तत्व है। इसी तत्व में शिष्य अपने को दूधों देना चाहता है। जब तक नीचन में प्रसन ही क्या रहता, तब तक गुरु की सम्मान उपस्थिति सम्पन्न नहीं हो पायेगी, क्योंकि मानव मन अक्षर कुनकों से भरा होता है। आप कुनकों से बचे, गुरु के साथ कुनकों का कोई स्थान नहीं होता। आपकी पक्की चाह होनी चाहिये कि गुरु तत्व को मैं प्राप्त करूँ। चाहते के बिना जीवन की कोई श्री निश्चित नहीं बन पाती, मनुष्य का उद्देश्य किसी न किसी बाहर के लिये होता है। पश्चात् में कोई उद्देश्यार्थी चाहत नहीं होती। इस नई शताब्दी में यह अवसर मिला है कि इस विश्वलेपण करें कि उन दो हनुरोग वीरों में हमने क्या पाया, क्या किया है?— इस संकेतण काल में हमें यह सोचना चाहिये कि इन्हीं मनुष्यों में भगवत्पाद शंकराचार्य और सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी भी हुए और उन्हीं में केस और रावण भी हुए। पूज्यपाद सद्गुरुदेव निश्चिल जी विश्वासी के सम्मान हैं। अपने अपने मन में यह आन्दोलन पैदा करना पड़ेगा। गुरु ता निरन्तर आपको प्रेरणा दे रहे हैं, क्यों नो हमाम है, जो इस सर्व से प्रेरणा नहीं ले पाते।

हनुरोग निमायं मो स्वप्ने को करना कठिन, गुरु ने जीन भी निश्चिल प्रवानकरता दी है। सभी में आने वाले कुछ उपचार के नियम दी रखेगा। इस अपने चारों ओर अंकुर लगाए गए हैं, लाल उल्लंघन का समय आ गया है। सबस्तुत्वम् तो उपचार करना चाहिया है, किरणिकारों की तरह जल तक पहुँचने चाहिया है। इस नई शताब्दी में आप और हम सब निश्चिल प्रतिवक्ता के लिये बहुत कुछ कर सकते हैं। आप इसका लाभ ले सकते हैं, हर संदर्भ में शताब्दी के पृथ्वीकाल में बननी चाहिया और उपचारिता में रम्पा ही आजीवित रहती है।'

पूज्य गुरुदेव नन्दकिशोर जी के प्रवक्ष्य की ओराम-नाम को नवार्थकी ने सन्मान किया, निश्चिल भगवत्पाद द्वारा स्वतंत्र की

'फरवरी' 2000 मन्त्र-सत्र-द्यन्त्र विज्ञान '83'



पूज्य गुरुदेव श्री नन्दकिशोर श्रीमाली जी

प्रेरणा आनंदी हमारे साथ है ही। इसके बाद साधकों को उन्होंने गुरु दीक्षा प्रदान की। इसके बाद पूजनीया माता जी ने सभी साधकों को वालसलग्नपूर्ण अशीर्वाद दिया—‘जाप का जीवन उदात हो, इसी तरह निरन्तर गुरु का वर्य करते रहें।’

को बाहसल्लामूर्ति अशीवंदि दिया । आप का जीवन उदास है, इसका नहीं कोई उत्तम लाभ है। यह विकालीन सउ में पूज्य गुरुदेव के लालचन्द्र श्रीग्रामी जी ने अपने सारगीर्भी प्रवक्तन में कहा— “इस नई सहस्राच्चि और इस नई जीति के शुभ अवसर पर हृदय से आशीर्वाद देता हूँ कि आप अपने जीवन में पूर्णता और श्रेष्ठता प्राप्त करें। आपका यह सौधारण्य है कि आपने अपने द्वारा जीवन में दो शताव्विंशों को देखा है। आपके इस जीवन का महान् योगी है कि गुरु के साथ गिलकर सौधारण्य है कि आपने अपने द्वारा जीवन में दो शताव्विंशों को देखा है। आपके इस जीवन का महान् योगी है कि मेरे लालचों लालचों शिष्य भास्त्रम् कल्पण के साथ-साथ गुरु के काव्यों को भूत रूप बने, भगवत्पृथ्वीपाद सदगुरुदेव का यही लक्ष्य था कि मेरे लालचों लालचों शिष्य भास्त्रम् कल्पण के साथ-साथ विश्व कल्पण का लक्ष्य लेकर चलें। मैं आपको सामाज्य मनुष्य बने हुए देखना नहीं चाहता, आने वाले दिनों में आप इतिहास पुरुष बन सकें, वही मेरी कामना है। मेरे जीवन में सूख गले ही न निकले, परन्तु आपके जीवन में साग नहीं होने देना चाहता हूँ। अन्त में मैं हृदय से यहीं आशीर्वाद देता हूँ कि आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम हो सकें।”

राजि में पण्डित के चारों ओर  
घरा कोहरा और छाँब में पण्डित में  
नमस्कारों बहुतों के बाथ बैठे साथकी  
को देखकर ऐसा नह रहा था मनो  
आकाश में बादों के बीच लिखिल शिष्य  
अपनारस बैठे हैं।

राजि के अन्तिम सब में पूज्य  
गुरुदेव अरविन्द जी ने उपरोक्त शिष्यों को  
नई सहस्रलिखि में आशीर्वाद प्रदान करते  
हुए अपने प्रवचन में कहा— “इम सभी



हुए अपने प्रबलन में कहा - "इस सभ्या का यह सौमान्य है कि गुरुदेव निरिजन के साथी शिष्य नई सहस्राब्दि का मठोन्सव एक साथ उनके आपीर्वाद तले मना रहे हैं। आज इप किसी विशेष चेतना को नायन करने के लिये एकत्र हुए हैं। उस विशेष तत्व को जानने के लिये उत्पग्नी है, इसीलिये एकत्र हैं। आप श्रावन शकार की तरह विषयायी बनें, सच्चार में सामान्य बने रहकर संसार के सब विष को पीकर आपने लब्ध की ओर बढ़ते चलें। हमारे जीवन में देहिक, देविक और प्रीतिक नान प्रकार के दुःख हैं, उन्हें निरस्त करने के सतत प्रयास करते रहना चाहिए। इनारे जीवन में देहिक, देविक और प्रीतिक की निखतों हैं, युक्त उसे भी मिटाने की क्षक्ति रखते हैं, इसलिये युक्त कर बहान सर्वोपरि है। आज गुरु तत्व को पीछाजा सक, उसमें लीन हो सकें, इस प्रबलन सभा में आप लोगों को ऐसा आपीर्वाद देता है।"

८-९ जनवरी २०००, अग्रपति महालक्ष्मी साधना शिविर, मुम्बई

तत्र अवश्यम् दृष्टुं होता तथा विवाहः ॥४॥

समाधारणतानी के लिये पूज्य मुख्य श्री केलाश चन्द्र जी ने मिलना शुरू किया। दूसरे दिन अवधि का आम अंतर्वक्तव्य हुआ है कि बाहर बाजे गुरुदेव का शिविर उच्चतम ग्राम भूमि हुआ। मुख्य पूजन तथा स्वागत के बाद पूज्य गुरुदेव केलाशचन्द्र जी ने अपने प्रवचन में शोषण के विषय में बोलते हुए कहा — “देखो ये प्राक्तिक अंडी जावन यादन और बाक्तनव ब्रह्माया तो उक्ता है। तब क्या नहीं ब्रह्म और युरुष से गुरुका नहीं तब दीक्षा अपना ही बना जा सकती है। अपने जननी के संचित द्वाक्षर्म या पास को सम्मान सीधा के माध्यम से की जितना जा सकता है। उसके नाम ही शिव्य अवधिनाति या कल्पागम की स्थिति

प्राप्त कर सकता है। उस प्रथम नव्य को जान सकता है। इसीलिये गुरुदेवांश के बाद श्री केलाश बार कई दौरों ने यह शायदीम है। मुख्य का अर्थ जमे बन्धनों से निपत गरम पावन तत्व है, शिव का अर्थ कर्म बन्धनों में आवेदन एक सामान्य नीतिन। उक्त तदक शिष्य इतना यात्रगमन बन जाय, जिसना कि शुभ तत्व, तत्व तक जोनों में ऐक्य अस्थापित किसे ही उक्ता है? युरु को समझने के लिये शिष्य का उपर्युक्त तत्व जाना ही पड़ता, तभी उनके नाम और चिन्नन को शिव्य अपने पीतह अस्थापित कर पायेगा। इसीलिये अपने प्राप्त अवधारणों को तुलना जाप उठाना ही बहिर्भूत।

रोग शोक से दृष्टिन शरीर बाला साधक साधना में उतर ही नहीं सकता, साधना के मूल वहस्य को कैसे जान सकता। इसीलिये पूज्य गुरुदेव ने साधकों को युरु दीक्षा और रोग निवारण कायाकल्प दीक्षा प्रदान की।

शिविर के दूसरे दिन दोनों गुरुदेव नी ने साधकों को व्यक्तिगत रूप से भी शिविर स्थल पर आधिकाधिक समय दिया। उनकी समाधाराओं को सुना, उनके पारिवारिक, आर्थिक एवं अन्य कष्टों को सुना और उनका गान दर्शन किया। पूजा हाल साधकों से बुधारुच भरा था।

शिष्यना कहा है, इस विषय में साधकों ने पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाती जी की मधुर आणी को सुना ही नहीं हृष्यमें भा उतारा। गुरुदेव अरविन्द जी ने अपने प्रवचन में कहा — “शिष्यता प्राप्त करने के लिये प्रत्येक महापुरुष गुरु के चरणों में बैठें। तभी वे महान व्यक्ति बन पायें। राम और कृष्ण भी युरु गृह में गये और जान व चेतना को आत्मसात किया। जीवन का सीधाप्य है, कि गुरु के चरणों में आश्रय प्राप्त हो, क्योंकि उस परम तत्व तक पहुँचने के लिये युरु ही सरल साध्यम है। युरु कवल शरीर धारी व्यक्ति नहीं है, युरु का जान और चेतना ही वास्तविक गुरु है।”

इस कालिकाल में, लंपकाल के दूसरे में आप प्राप्ति के पात्र हों। आपके विषयनम् गुरुज्ञते हैं, उनका विषयत सुन आपका विषय अस्तीक दास्तावच है, फिर जिन्ना किसे बात की है? आप भीतर जाएँ आधकां भेद तोनो ही वाला में अद्वितीय वर्ते, क्योंकि उनका बाहर भीतरीक द्वारा द्वारा। इसलिये पहले वर्ष अपनाने वह लंपकालीन दृष्टि अपने भाव वे उत्तम वर्षावान अपनी जान रिप्रिजन किया। स्थान तत्कालीन उन्होंने अपने भाव वे उत्तम वर्षावान अपनी जान रिप्रिजन किया। गे नहीं शहरता है। के मृत्युप्राप्त अपावृत्ता वह नीचम न्यासी रहता है। जान अपनका अपावृत्ता विषय तक ही देख प्रवचन करता है। आप का यह लंपकाल वर्षावान विषय है। आप वह वीथि का उत्तम वर्ष वह।

इसके बाद पूज्य गुरुदेव श्री केलाश चन्द्रजी ने शोषण लक्ष्मी पूजन साधना गमन वर्षावान कराई। आरती और वरण स्मर्ति के बाद शिविर की पूजाद्विती दुर्वा। यदो के माध्ये जक्को को उत्तम हीर लगान से गुरु की दीक्षा करने के लिये गुरुदेव जी ने राजेश्वर दीक्षा प्रदान की तथा उत्तरवत्ता भावित्य के लिये छव्य से उग सोनी को पाणी आलोचना प्रदान किया।

## साधना शिविर पुर्व दीक्षा समाप्ति

**13 फरवरी 2000**

आग्रहालाल

लक्ष्मी नगरेश साधना शिविर  
स्थल- कल्पकद्वापटेल हॉटेल, पेट्रोल कम्पनी कैम्पास, बंगला  
रोड, लैनलहाल्डी नं. 8, नरोड़  
• श्री सुन्दरेश और 079-6756106 • श्री परेशभाई  
के सुधार 2831053 • श्री राजयभाई शर्मा 2892261  
• श्री दिलीप जे. सुधार 5323069 • श्री अश्विन पटेल  
2831054 • श्री राजेन्द्र सुधार 6565546 • श्री राजेश  
बोहान • श्री प्रकाश सुधार • श्री कनुभाई सोनी, बोरसद  
02698-20411

**20 फरवरी 2000**

बंगलौर

निरिखिले इवरं दीक्षा एवं साधना समाप्ति  
स्थल- कल्पाटिक अस्त्रिय महाराजा, परिषद कल्याण मण्डप,  
एमप्र श्री सांभागिक, निकट अम्बेदकर भवन,  
नं. 16/A, वसंतनगर, मिलर टैक, बल्ड होट  
• श्री दी. कृष्णा गोडा, 080-3346141, (0)-98440-96504  
• श्री एम. एल. नायंद, 080-3391689 • श्री गुरुदत्त  
(0)-98440 37687 • शिविर स्थल कोन: 080-2284494

**26-27 फरवरी 2000**

अमृतसर

दुर्गा शिविर साधना शिविर  
स्थल- तेज भवन, दुर्गानिम बिल्डिंग, टी.पी.नगर, कोट्टेज  
• श्री के.एल. शर्मा 0183-507042 • श्री बाबी बौद्धान  
566702, 580957 • श्री रवि शर्मा 228800 • श्री विजय  
शर्मा 274661 • श्री दिनेश दोगरा 556526

**3-4 मार्च 2000**

कोट्टेज (म.प्र.)

महाशिवरात्रि साधना शिविर  
स्थल- प्रियदर्शिनी इंडिया स्टेडियम, टी.पी.नगर, कोट्टेज  
• श्री आर. सी. सिंह, 07818-33343 • श्री के. के तिवारी  
0771-229347 • श्री बबू तिवारी, बैमतरा 07024-  
22717 • श्री टीकाराम वर्मा • श्री सोकाराम वर्मा, रित्तराम  
• श्री अश्विन वेस, 07759-21636 • श्री एस. वी. नेवार  
24430 • श्री आर.क. सोनी • श्री वी.क. गर्ग • श्री दी.  
आर. मनहर • श्री आर.एस. शाह • श्री सत्येश सोनी •  
कु. सतोषी शुक्ला • वी.वी. सिंह • ए.के.पट्टा • एस.के.  
सिंह • श्री एन.के.गोव्य • श्री सुखीदास महत • श्री आलोक  
बाजपेठी • कीर्ति सिंह • श्री सुदमा बन्दा • श्री वेद प्रकाश  
श्रीजास • श्री लोकेश राठोर • श्री वी. के. ज्ञा

**26 मार्च 2000**

कूटन

अष्ट लक्ष्मी साधना शिविर  
स्थल- लेउआ पाटीदार पंच जी वाडी, अश्विन आश्रम  
अश्विन लेउआ पाटीदार पंच जी वाडी, अश्विन  
• श्री अर्देन्द्र भाई पटेल, गुरुता 0261-682034 (PP)  
• श्री वी.एस. पटेल • श्री नवीनभाई पटेल 254977

श्री कानितभाई प्रजापति • श्री इच्छुभाई पटेल 861002  
• श्री हरगुरुभाई पटेल 687804 • श्री रमेश प्रजापति,  
पलसाड 02632-46738

**18-19 मार्च 2000**

जोधपुर

दोली वसंतोत्तराव साधना शिविर  
स्थल- गुरुबाज, बंब-तंब-चंब विज्ञान, हाईफैट कॉलोनी  
• कोन: 0291-432209

ओडीआ में ब्रह्मवति साधना शिविर शुभल

**5-6 अप्रैल 2000**

राजकोट

नवदुर्गा चैत्र नवरात्रि साधना शिविर  
• श्री गगार महापात्र 0661-580598 • श्री भासकर  
066-543646 • श्री अशोक 0661-643278 • श्री अरुण  
• श्री अनुरोध • श्री शरत

**7 अप्रैल 2000**

दुर्घटनाद

स्थल- ओल्ड सिनेमा होट  
• मोहनलाल, सुन्दरगढ, 06622-73799 • रवि पटेल,  
06622-72559 • इन्द्र मोहन पुरोहित 73224 • भूपाल  
चन्द पटेल, 72556, 73206 • सचिन्द कु. पटेल

**8 अप्रैल 2000**

सम्बलपुर

स्थल- पंचायती घर्मधाला, खेतराजपुर  
• श्री रमेश पोददार 0663-520862 • श्री माहन लाल  
रोचवानी, सुन्दरगढ 06622-73799

**9 अप्रैल 2000**

देवघरात

• श्री प्रनव बघु भाहु 33353 • श्री अशोक रामजी 32325  
10 अप्रैल 2000

बैद्धामपुर

• श्री सत्यवादी भजदेव • श्री सत्तोष कुमार पात्र 06811-  
63602 • श्री वी.एस.एन. बेहेरा 0680-207662

**11 अप्रैल 2000**

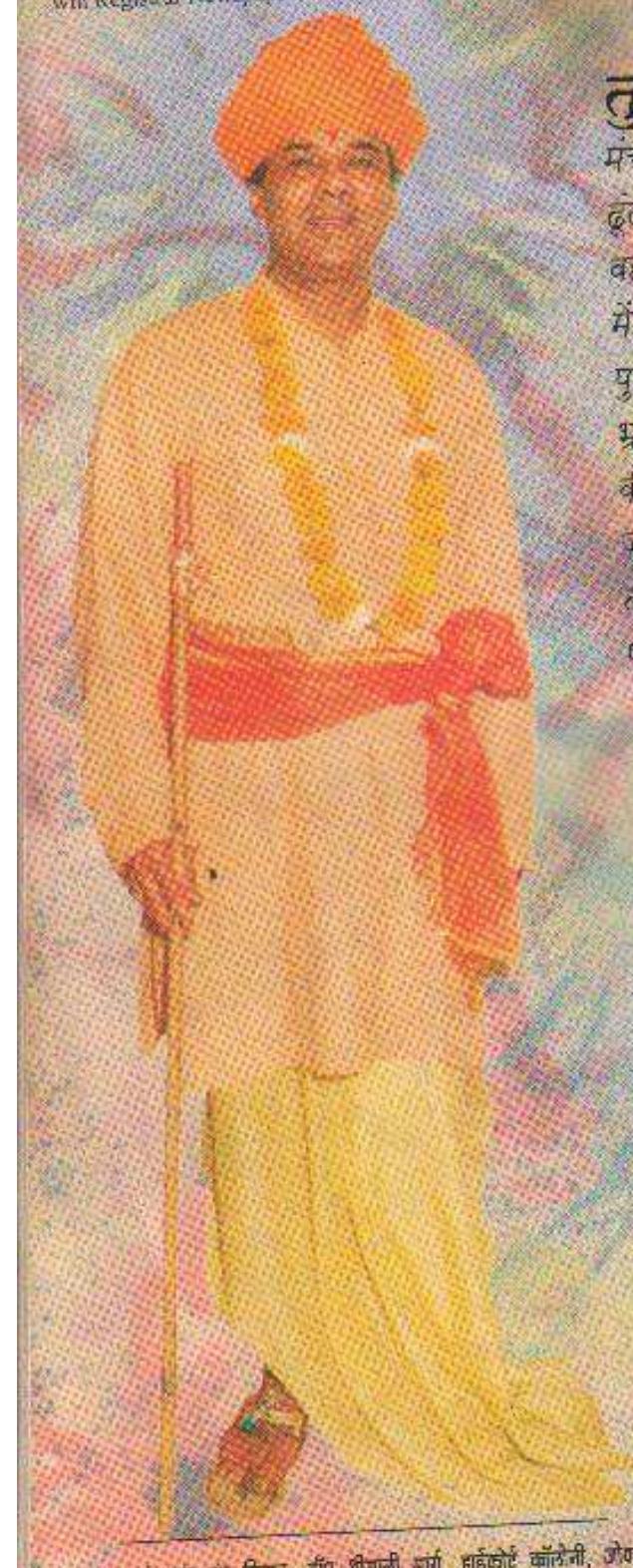
वाटक

• श्री कृष्ण अग्रवाल 0671-617271 • श्री सुभाष लेका  
0671-640241 • श्री भागीरथी पठा 0674-430191

**साधन, पाठक कृपाया इत्यान दे -**

1. दीक्षा प्राप्त करना शिष्य के लिए अत्यन्त सोमायादायक काण होता है। दीक्षा हेतु सम्बन्धित श्रीधावर दी. नारायण दत्त श्रीमाली इंटरनेशनल चैरिटेबिल ट्रस्ट सोसायटी के नाम से ही मेजे।
2. पत्रिका एवं पुस्तकों से सम्बन्धित शुल्क मत्र-तत्र यंत्र विज्ञान के नाम से मेजे।
3. साधना सामग्री, कैसेट्स आदि से सम्बन्धित शुल्क मत्र शक्ति केन्द्र के नाम से मेजे।
4. सकल्य, संस्थागत दान इत्यादि कार्यालय में डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली इंटरनेशनल चैरिटेबिल ट्रस्ट सोसायटी के नाम से जगा कर रखीद अवश्य प्राप्त कर लें।

- व्यवस्थापक



**तुम** मुझे किस जगह खोजते हो? तुम मुझे  
मंच पर नहीं खोज पाओगे, मूर्तियों में भी नहीं  
हृषि पाओगे। मुझे खोजना है तो प्रेम में दूढ़ो, मैं  
वहां मिल जाऊँगा। तुम मुझे ओस की नन्हीं बूदों  
में ढूढ़ो, तो मैं वहां मिल जाऊँगा। मैं अमते हुए  
पृथ्वी में दिखाई दे जाऊँगा, तितलियों के नर्तन और  
भ्रमर के गुंजार में मैं बैठा मिल जाऊँगा, बादलों  
की धुमड़न, और वर्षा की बोछार में अवश्य ही मिल  
जाऊँगा। और तुम जरा गद्दन झुका कर अपने हृदय में  
तो झाक कर देखो, मैं पूरा का पूरा सर्वार्थ वहीं  
पर तो सुरक्षाता हुआ बैठा हूँ।

— पूज्यपात्र सदगुरुदेव  
डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी

दिनांक  
15-16-17 मार्च 2000  
स्थान  
गुरुधाम (जोधपुर)

ग्रह : मार्च में दीक्षा  
के लिए निर्दिष्ट विधेय दिन  
पूज्य गुरुदेव निर्दिष्ट दिवसों पर साधकों  
से भित्तें व दीक्षा प्रदान करें।

दिनांक  
24-25-26 मार्च 2000  
स्थान  
सिद्धाश्रम (दिल्ली)

वर्ष - 20 अंक - 2

संस्कृत-यजुर्वेद विद्वान्, डॉ० श्रीमाली जी, हॉटेल एक्सेसी, गोप्य-342001 (दिल्ली), फोन: 0291-432209, टेली फॉन: 0291-432210  
सिद्धाश्रम, 272 सोनाल एक्सेस, पीनामण्ड, नई दिल्ली-34, फोन: 011-7182242, टेली फॉन: 011-7196700



## COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with  
By  
  
Avinash/Shashi

Icreator of  
hinduism  
server

